जैन तीर्थवंदना

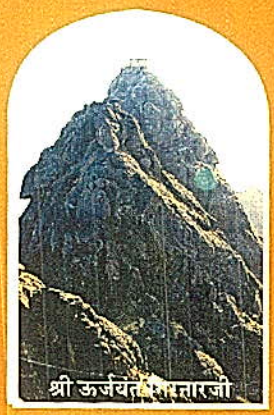

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2544

VOLUME : 8 ISSUE : 9 MUMBAI, MARCH 2018 PAGES : 44 PRICE : ₹25

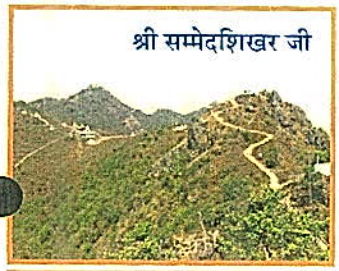

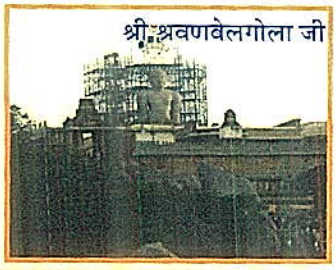

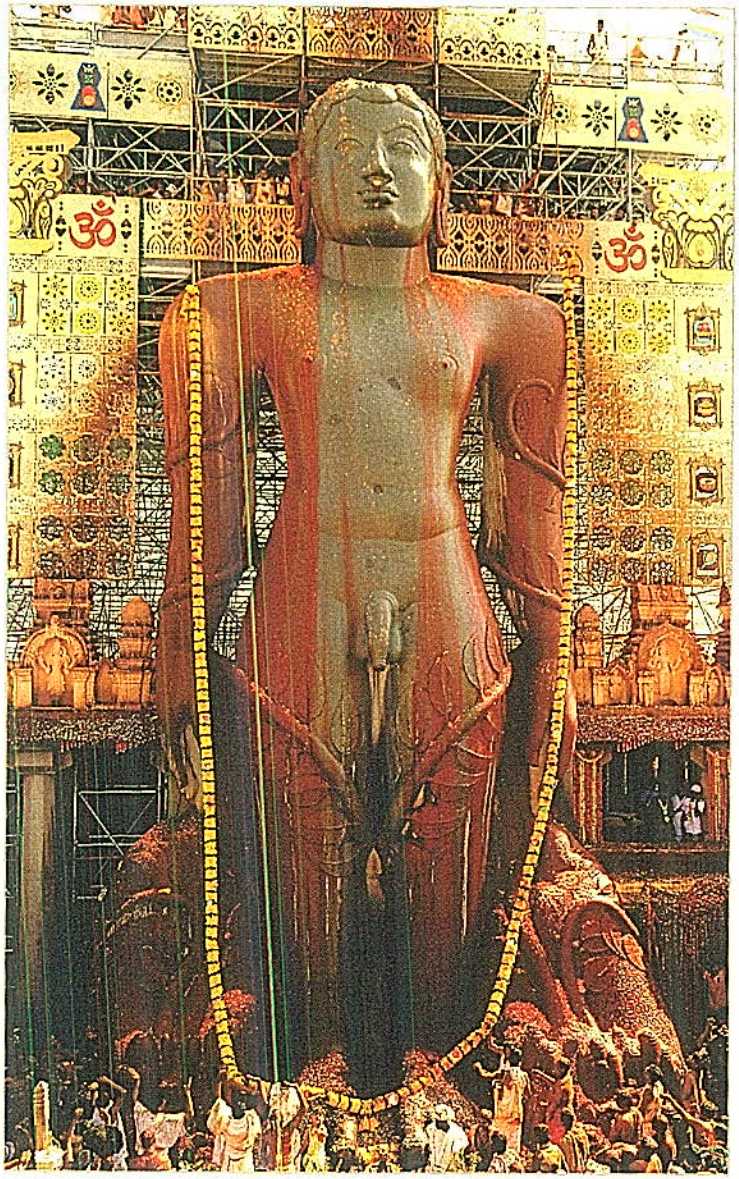

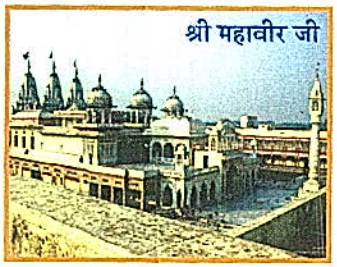

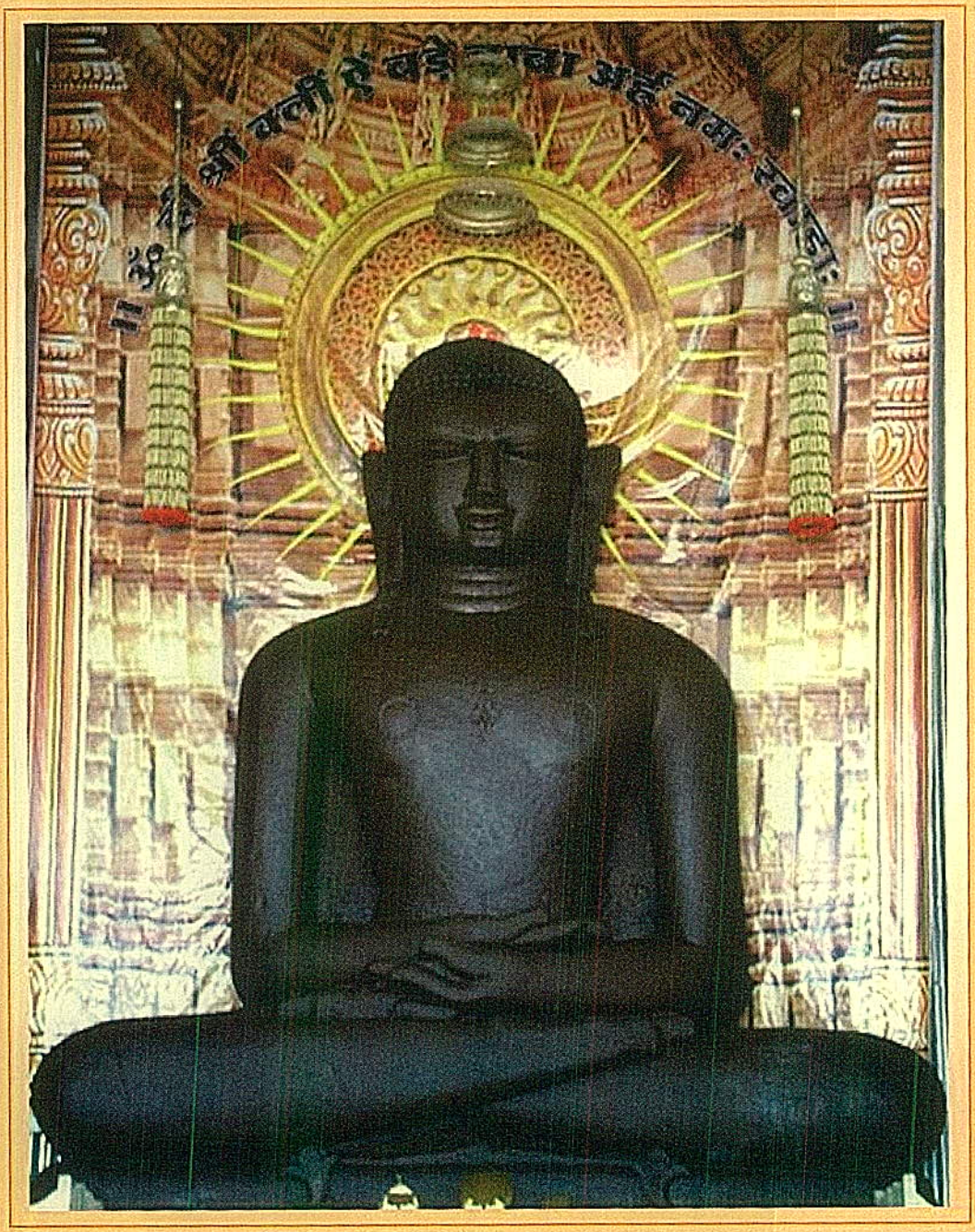

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय उद्बोधन

हम सबका सौभाग्य, महामस्तकाभिषेक यशस्वी हुआ। मुझे यह लिखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, रोम-रोम हर्षित है, हृदय प्रफ्फुल्लित है, मन मयूर सम नाच रहा है। अपार प्रसन्नता है, हर्ष है, शब्द नहीं है, कैसे लिखूं कि गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक 'न भूतो न भविष्यति' की तर्ज पर सकुशल, निर्विघ्न, यशस्वीपूर्वक सम्पन्न हो गया। हम सबका सौभाग्य जगा कि हम सबने गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी का स्पर्श किया व महामस्तकाभिषेक कर अपने आप को धन्य किया है।

परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी का कुशल नेतृत्व, उनकी अनुभव की अनुभूति पूर्ण शक्ति के संकल्प को हम सबने महसूस किया। कई वर्षों की तैयारी के साथ सुव्यवस्थित कार्ययोजना व योग्य व्यक्तियों के चुनाव में पूज्य भट्टारक स्वामीजी की दूरदर्शिता प्रणम्य है। शासन-प्रशासन-समाज के साथ समन्वय-सद्भावना के साथ सबको साथ लेकर उन्होंने न केवल सबको संतुष्ट किया बल्कि यह साबित किया कि कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करना है तो कितना धैर्य-अनुशासन व वाणी संयम अनिवार्य है, हमारा सौभाग्य है कि हम सबने एक 'युग पुरूष' के साथ कार्य किया जो एक देश - एक बाहुबली - एक समाज - एक ही पंथ अहिंसा को आत्मसात कर लोक कल्याण के लिए 24 घण्टे परिश्रम करते हैं। श्रवणबेलगोला की हर गली - हर कोना परम पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के कर्मयोग को जानता है उनके प्रति नतमस्तक है। सारा देश उनकी एक मुस्कुराहट का दीवाना है, श्रवणबेलगोला में गोम्मटेश्वर के दर्शन के बाद यदि किसी की अभिलाषा है तो वह पूज्य स्वामीजी से मिलने की। हम सब इस महोत्सव की सफलता के लिए उनके दूरदर्शी नेतृत्व को नमन करते हैं।

महामस्तकाभिषेक में अनेक आयोजन हुए वे सभी अपनी समयबद्धता के साथ सम्पन्न हुए। दिगम्बर जैन परम्परा की पहचान हमारे दिगम्बर साधु संघ ही हैं। मुझे अत्यन्त गौरव व प्रसन्नता है कि 12 वर्ष में एक बार गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक के निमित्त हमारे साधु संघ हजारों किलोमीटर का पद विहार कर श्रवणबेलगोला में एकत्रित होते हैं, अभी तक के इतिहास में सर्वाधिक 380 पिच्छीधारी संत महामस्तकाभिषेक में आए। राष्ट्र गौरव, वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने लगातार तीसरी बार इस महामहोत्सव को सान्निध्य प्रदान किया उनके वात्सल्य से सभी परम्पराओं के साधुओं ने महोत्सव को यशस्वी बनाया। सभी आचार्य-मुनिराज-आर्यिका माताजी चतुर्विध संघ की उपस्थिति से यह महोत्सव गौरवान्वित हुआ है। यह सब उनकी त्याग-तपस्या की ऊर्जा का ही प्रतिफल था कि महोत्सव में लाखों लोग आए और शांतिपूर्ण तरीके से महा मस्तकाभिषेक करके चले गए। हम सब उनके आशीर्वाद के आकांक्षी हैं और चाहेंगे कि हमें उनका आशीष निरंतर प्राप्त होता रहे।

पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व में बनी महोत्सव कमेटी व 41

उप-समितियों के अध्यक्ष, मुख्य संयोजक, संयोजक, सहसंयोजक के साथ सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने दिन-रात मेहनत की और ग्राम-ग्राम में महामस्तकाभिषेक को पहुँचाया। सभी के साथ भारत सरकार व कर्नाटक सरकार ने भी तन-मन-धन लगाकर व्यवस्थाएँ सुलभ कराई, कर्नाटक सरकार के साथ पूरा प्रशासन यहाँ की व्यवस्थाओं को सुचारू बनाने में जुटा रहा और बिजली-पानी-सड़क-सुरक्षा-स्वास्थ्य-आवास-मंच आदि व्यवस्थाओं में खरा उतरा। मुझे प्रसन्नता है कि महोत्सव की दीर्घकालीन परम्परा के अनुरूप भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति श्री रामनाथजी कोविंद सपत्नीक पधारे व उन्होंने महामस्तकाभिषेक का उद्घाटन कर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली व श्रवणबेलगोला के इतिहास के संबंध में अभूतपूर्व जानकारियाँ देकर अहिंसक संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व के सामने रखा। उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैय्या नायडूजी ने राज्याभिषेक कर 108 पुस्तकों का लोकर्पण कर अक्षराभिषेक किया। वहीं देश के यशस्वी लोकप्रिय विश्व नेता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी ने गोम्मटेश स्तुति को प्राकृत में सुनाकर सबका मन मोह लिया, उन्होंने जो वादा किया था कि वे जरूर आएंगे, वे आए और गोम्मटेश्वर के सम्मान में उन्होंने अपने आपको समर्पित किया। अनेक केन्द्रीय मंत्री, राज्य सरकार के मंत्री व कर्नाटक सरकार के मुख्यमंत्री सिद्धारमैय्याजी ने पूर्ण सहयोग किया वहीं गोम्मटेश्वर के दर्शन व अभिषेक के लिए पैदल विंध्यगिरि पहुँच गए यह उनकी गोम्मटेश्वर के प्रति अतुलनीय सेवाओं को दर्शाता है।

मुझे गौरव है कि महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष होने के फलस्वरूप देशभर में जाने का मौका मिला और समाजजनों से सम्पर्क करने का अवसर मिला। सभी की श्रद्धा गोम्मटेश के प्रति अभूतपूर्व है। चाहे संत हो, समाज हो, शासन हो, प्रशासन हो सभी यदि इस आयोजन में जुड़ें तो इसका कारण पूज्य गोम्मटेश्वर स्वामी का आशीर्वाद व पूज्य भट्टारक स्वामी जी की दूरदर्शी सोच का ही परिणाम है।

पूज्य गोम्मटेश का आशीर्वाद हमें मिलता रहे। सारा देश एक हो सब में 'वसुधैव कुटुम्बकमं' की भावना का जन्म हो, हमारा कल्याण हो, विश्व में शांति हो, समृद्धि हो, सद्भावना हो, हम यही कामना करते हैं।

महामस्तकाभिषेक का कार्य एक नहीं अनेक कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम है। जिन्होंने कुछ नहीं देखा केवल व्यवस्थाएँ देखी हैं, उन्हें सुचारू बनाया है। उन सभी को मैं साधुवाद देती हूँ।

महामस्तकाभिषेक की बहुत बड़ी कमेटी है। सभी ने एक टीम भावना से कार्य किया और हम आज सफलता के शिखर पर हैं। सबका नाम लेना सम्भव नहीं है। मैं मेरे समस्त सहयोगियों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ कि सभी ने अपनी संस्कृति को यशस्वी करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। हम इसी तरह एकजुट रहें और आपस में सद्भावना रहे, संगठन रहे। सभी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोगियों का हार्दिक आभार, धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। अभी और कार्य बाकी है महामस्तकाभिषेक जून 2018 तक चलने की सम्भावना है। सारा देश अभिषेक करले यह प्रयास करें जो शेष हैं वे भी श्रवणबेलगोला आकर अपनी श्रद्धा का अर्घ समर्पित करें। ऐसी कामना है।

यह अंक जब तक आपके पास पहुँचेगा तब तक वर्तमान शासन नायक विश्व वंदनीय भगवान महावीर स्वामी के जन्मोत्सव का अवसर 29 मार्च आ जाएगा। मैं सम्पूर्ण देश के समाजजनों से आग्रह करना चाहती हूँ कि हम अहिंसक समाजजन देश में अल्पसंख्यक हैं लेकिन हमारे पास जो सांस्कृतिक विरासत है वह अन्य कहीं नहीं है। आज भगवान महावीर की अहिंसा की आवश्यकता है। हम सबने गोम्मटेश का अभिषेक किया है, दोनों के सन्देश समान हैं, यदि सम्भव हो तो भगवान महावीर व गोम्मटेश्वर के सन्देशों को प्रचारित करती झाँकिया-बेनर-पोस्टर-व्याख्यान देश के प्रत्येक ग्राम-नगर में आयोजित हो जिससे अहिंसा का सन्देश जन-जन तक पहुँचे।

इसी भावना के साथ सभी को भगवान महावीर की जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएँ व महामस्तकाभिषेक की सफलता हेतु आप सभी का आभार।

आईये। हम एक हों, अहिंसा का प्रसार कर विश्वशांति में अपना योगदान सुनिश्चित करें।

जय महावीर - जय गोम्मटेश

Sarita Jain

- सरिता एम.के. जैन

अध्यक्ष

आस्था के सैलाब को समेटना जरूरी

डॉ. अनुपम जैन

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली का महामस्तकाभिषेक महोत्सव (17–25 फरवरी) उल्लासमय वातावरण में पूर्ण हुआ। सम्पूर्ण देश से पधारे श्रद्धालुओं ने भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली का अभिषेक कर प्रभु चरणों में अपनी श्रद्धा और भक्ति का समर्पण किया। महामस्तकाभिषेक के प्रथम दिन विंध्यगिरि पर्वत और चतुर्दिक उपस्थित जनमेदिनी इस परम पावन, प्राचीन तीर्थक्षेत्र के प्रति आस्था को अभिव्यक्त कर रही थी। विश्व के ने कोने से आये जैन धर्मानुयायियों ने अपनी श्रद्धा का समर्पण तो किया ही। लगभग 350 मयूर पिच्छीधारी दिगम्बर जैन संतों की उपस्थिति इस समारोह का सबसे उज्ज्वल पक्ष थी। एक–एक संत के दर्शन के लिये हमें सैकड़ों मील की यात्राएं करनी पड़ती हैं किन्तु श्रवणबेलगोला में इन संतों की ऐसी भव्य वीतरागमयी उपस्थिति देखकर भक्तों के नेत्र तृप्त हो गये। भारत के महामहिम राष्ट्रपति माननीय श्री रामनाथ कोविंद जी, उपराष्ट्रपति माननीय श्री वैंकया नायडू जी, लोकप्रिय प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी, गृहमंत्री श्री राजनाथसिंह जी एवं अनेकानेक केन्द्रीय मंत्रियों, राज्यपाल, मुख्यमंत्री तथा प्रांतीय सरकारों के मंत्रीगणों ने इस अवसर पर भगवान बाहुबली के चरणों में पहुँचकर, शीश नवाकर भारतीय लोकतंत्रात्मक गणराज्य के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की पुष्टि की । अब जरूरत इस बात की है कि हम आस्था के सैलाब को समेटे। यदि शासन के सर्वोच्च पदाधिकारियों ने बाहुबली के समक्ष उपस्थित होकर अपनी भक्ति प्रदर्शित की तो परम पूज्य कर्मयोगी भट्टारक चारूकीर्ति स्वामी जी ने भी श्रवणबेलगोला ही नहीं संपूर्ण कर्नाटक प्रदेश को एक सर्वसुविधा सम्पन्न मल्टीस्पेशेलिटी हॉस्पिटल की सौगात देकर राष्ट्र और समाज के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन केन्द्र, श्रवणबेलगोला ने अच्छा काम किया है किन्तु राष्ट्रीय प्राकृत विश्वविद्यालय एक दूरगामी सोच का प्रतीक है। कर्नाटक एवं भारत सरकार ने प्रारंभिक अनुदान देकर वि. वि की स्थापना का पथ प्रशस्त कर दिया है। अब जैन समाज विशेषतः विद्वत्वर्ग की यह जिम्मेदारी है कि वह इसकी स्थापना के पीछे निहित भाव को मूर्तरूप प्रदान करे। विश्व विद्यालय अनुदान आयोग सभी अच्छी योजनाओं को वित्तपोषण प्रदान करता है किंतु धन लेने की जिजीविषा,कर्मठता और सृजनशीलता हमें दिखानी होगी। मुझे विश्वास है कि पूज्य जगद्गुरु भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी किसी कर्मठ, दूरदृष्टि सम्पन्न, अनुभवी विश्वविद्यालयीन प्रक्रियाओं के जानकार व्यक्ति को इसका नेतृत्व सौंपेंगे जो श्रेष्ठतम कार्यकुशल व्यक्तियों को अपनी टीम में लेकर इसे नवीन उंचाईयों तक पहुंचाऐंगे। यदि हमने यह मौका गंवा दिया तो पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेंगी क्योकि एक वि. वि. के माध्यम से साहित्य, संस्कृति और इतिहास के अध्ययन की गति को पंख लग सकते हैं जरूरत कुशल नेतृत्व की हैं। यथास्थितिवादी आत्ममुग्ध, संकीर्ण विचारधारा वाले चलती गाड़ी में तो बैठ सकते है लेकिन गाड़ी को चला नहीं सकते। इस संदर्भ में अपने सुझाव और रूपरेखा आप हमें भी भेज सकते है हम उसे पूज्य महास्वामी जी तक सुरक्षित पहुंचाने का वादा करते हैं।

प्रस्तुत अंक में मुख्यतः बाहुबली महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत की है अतः ऋषभ जयन्ती या महावीर जयन्ती पर अधिक सामग्री नहीं दे सके हैं।

★★★★

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 8 अंक 9 मार्च 2018

श्रीमती सरिता एम.जैन	अध्यक्ष
श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी.	उपाध्यक्ष
श्री वसंतलाल एम.दोशी	उपाध्यक्ष
श्री नीलम अजमेरा	उपाध्यक्ष
श्री पंकज जैन	उपाध्यक्ष
श्री हुकम जैन 'काका'	उपाध्यक्ष
श्री संतोष पेंढारी	महामंत्री
श्री शिखरचंद पहाड़िया	कोषाध्यक्ष
श्री विनोद बाकलीवाल	मंत्री
श्री वीरेश सेठ	मंत्री
श्री शरद जैन	मंत्री
श्री खुशाल जैन सी.ए.	मंत्री

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
Website : www.digamberjainteerth.com

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

जन्माभिषेक में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब	7
जैन तीर्थंकर अहिंसा के प्रेरणा स्त्रोत	10
समाज को सही दिशा दिखाते हैं संत : पी.एम.	13
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से चित्र प्रदर्शनी	16
गोम्मटेश्वर का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न	24
बाहुबली अष्टक	35
When heavens descended on Shravanbelagola	36
विश्व णमोकार दिवस की घोषणा	37
सर्वोदय धर्म के प्रवर्तक एवं अभिवाहक तीर्थंकर महावीर	38
भगवान बाहुबली चालीसा	41

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवधर्न और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिए

संरक्षक सदस्य	रु.5,00,000/- प्रदान कर
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/- प्रदान कर
सम्मानीय सदस्य	रु. 31,000/- प्रदान कर
आजीवन सदस्य	रु. 11,000/- प्रदान कर

नोट:

1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, चरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब सोसायटी या कार्पोरेट बॉडी भी उपरोक्त प्रावधान के अन्तर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्ष के लिए होगी।

2) जो सदस्य इनकम टैक्स की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अन्तर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।

3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

जन्माभिषेक में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब
श्रवणबेलगोला में नजर आया अभूतपूर्व उत्सव

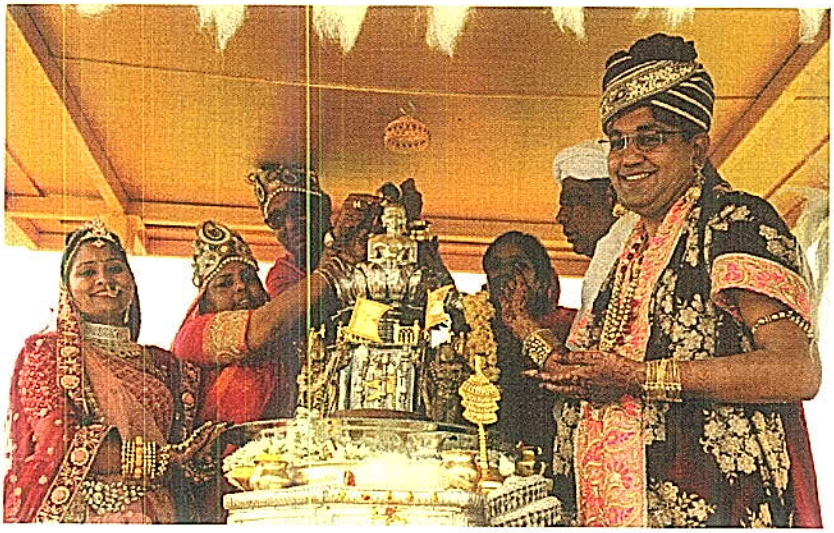

भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा उद्घाटित गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के दूसरे दिन 9 फरवरी 2018 को भगवान का जन्म कल्याणक मनाया गया। परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में प्रातः 11 बजे निकले जन्माभिषेक जुलुस में सारा भारतवर्ष आज श्रवणबेलगोला में नजर आ रहा था। मेजबान राज्य कर्नाटक के प्रत्येक जिले से हजारों की संख्या में महिला मण्डल की सदस्य श्रद्धा से सराबोर होकर आई और चार किलोमीटर का जुलूस निकालकर जन्माभिषेक महोत्सव को ऐतिहासिक बना दिया।

जय गोम्मटेश के नारे से गूंज उठा श्रवणबेलगोला

परमपूज्य, जगद्गुरू, कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने बाहुबली पोलिटेक्निक कॉलेज परिसर में लगभग बारह हजार से अधिक उपस्थितजनों को श्रीफल भेंट किए। जुलूस में अत्यन्त आकर्षक दो लकड़ी से बने हाथी, एक सन्देश रथ के साथ 108 नगाड़े,108 शंख, 108 तुराई, 108 घंटियों क साथ 1008 धर्मध्वजा, हर हाथ में पंचरंगी ध्वज लेकर श्रद्धालु चल रहे थे।

अद्भुत नजारे में 4 वर्ष के छोटे बच्चे से लेकर 80 वर्ष के बुजुर्ग 'जय गोम्मटेशा बाहुबली स्वामी जगकल स्वामी' गाते हुए आगे बढ़ रहे थे, जुलूस का एक छोर पोलिटेक्निक कॉलेज पर ही था तो दूसरा छोर जन्माभिषेक की पाण्डुक शिला परिसर में पहुँच गया था।

37 ड्रेस कोड के साथ महिला मण्डल इन्द्राणी बनकर मस्तक पर मंगल कलश लेकर चल रही थी। सभी महिला मण्डल अलग–अलग ड्रेस पहनकर आए श्रवणबेलगोला में रंग बिरंगा नजारा उपस्थित कर रहे थे। अत्यन्त अनुशासित होकर चल रही महिलाएँ चार–चार के समूह में गोम्मटेश की स्तुति कर रही थी।

सौधर्म इन्द्र श्री भागचंद–सुनीतादेवी चूड़ीवाल गोहाटी भगवान आदिनाथजी की प्रतिमा लेकर सुमेरू पर्वतनुमा पाण्डुक शिला पर पहुँचे जहाँ सान्निध्य प्रदाता आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित 350 पिच्छीधारी संतो के सान्निध्य व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न कराने आए 130 विद्वानों व प्रतिष्ठाचार्य श्री हसमुख जैन धरियावद, श्री कुमुदचंद सोनी अजमेर, श्री वृषभसेन उपाध्ये आदि ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंत्रोच्चार कर जन्माभिषेक सम्पन्न कराया।

अंतिमबार जन्म लेने वालों का होता है जन्माभिषेक – आचार्य वर्द्धमानसागरजी

महोत्सव के प्रमुख सान्निध्य प्रदाता आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने चामुण्डराय मण्डप में उपस्थित विशाल संत समुदाय व श्रावकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि संसारी जीव जन्म–मरण के दुःखों से भयभीत है और संसार परिभ्रमण में उलझा हुआ है। इसलिए बार–बार जन्म–मरण के दुःखों से भयभीत रहता है। भगवान का जन्म संसार में अंतिम होता है इसीलिए उनका जन्माभिषेक होता है। हम सब कामना करे कि हमारे कर्मो का नाश हो और हम भी भगवान बनने के मार्ग पर अग्रसर हो सके। उपस्थित अन्य आचार्यो ने भी सम्बोधित किया व सभी को गर्भपात न कराने का संकल्प दिलाया।

अभूतपूर्व उत्साह से सराबोर श्रवणबेलगोला में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुँच रहे है। यहाँ की छटा निराली हो गई है जैसे भगवान के समवशरण में कोई भेदभाव नहीं होता है वैसे ही यहाँ सभी समुदाय के श्रद्धालु भगवान बाहुबली के चरणों में मस्तक झुकाते नजर आते है।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'
अनुपमा जैन

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के दृश्य

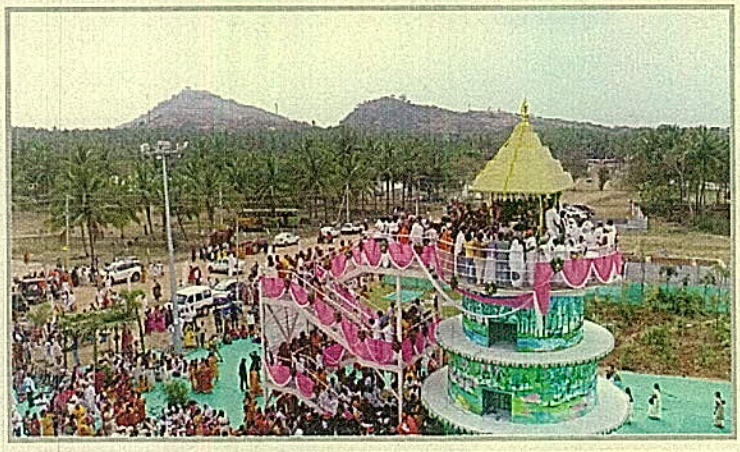

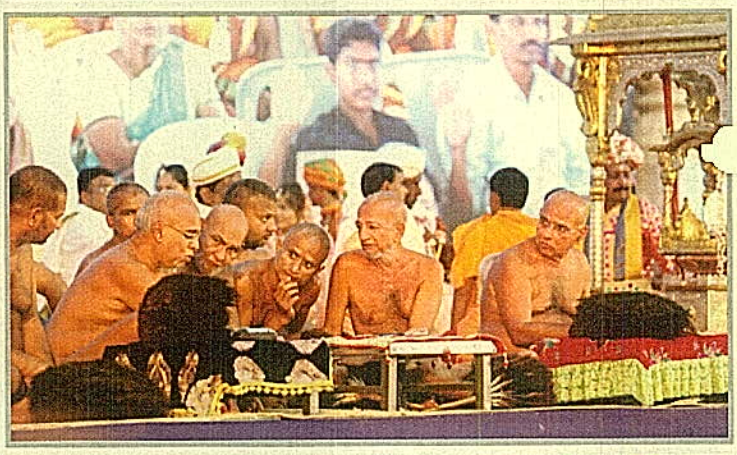

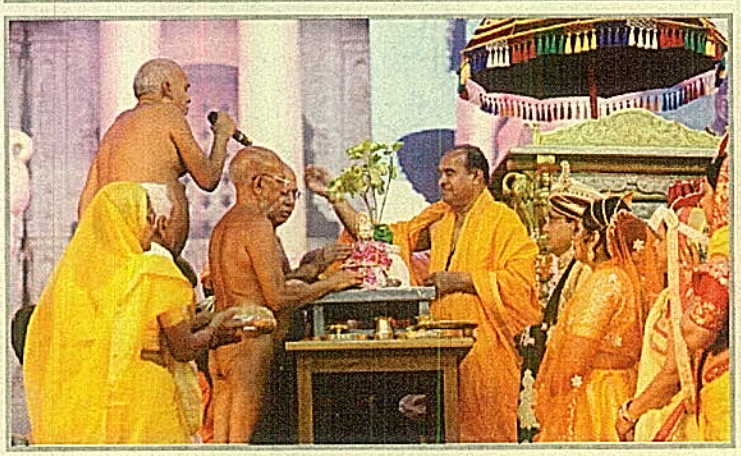

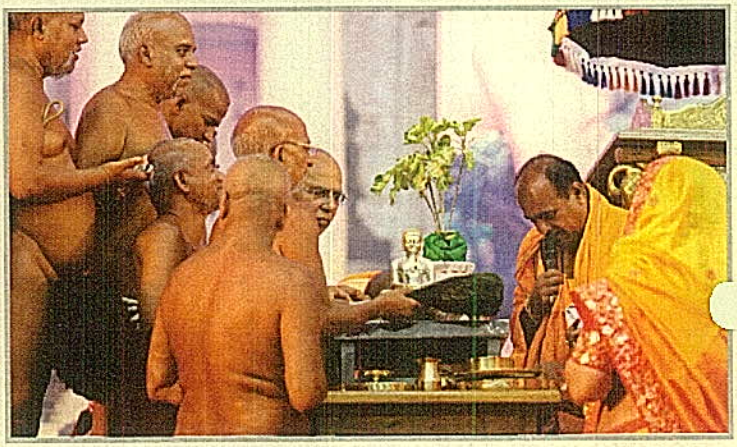

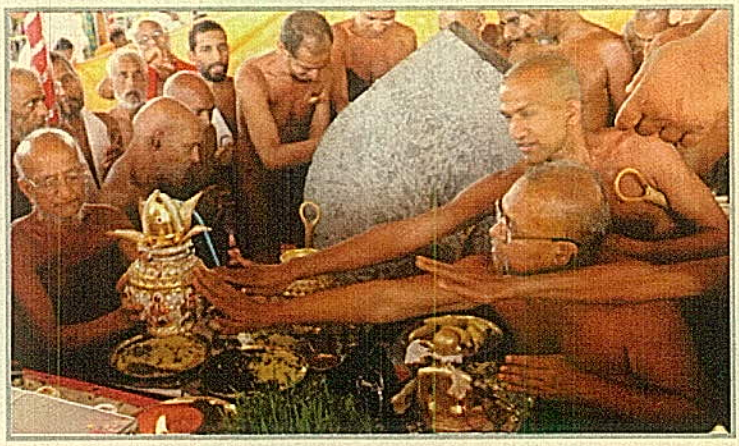

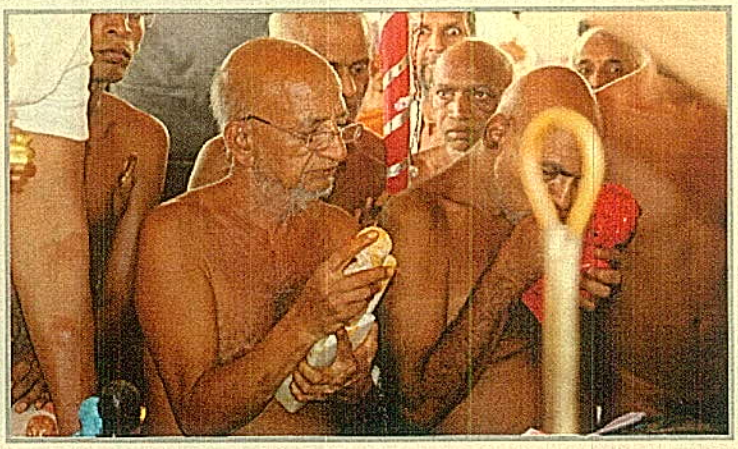

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के दृश्य

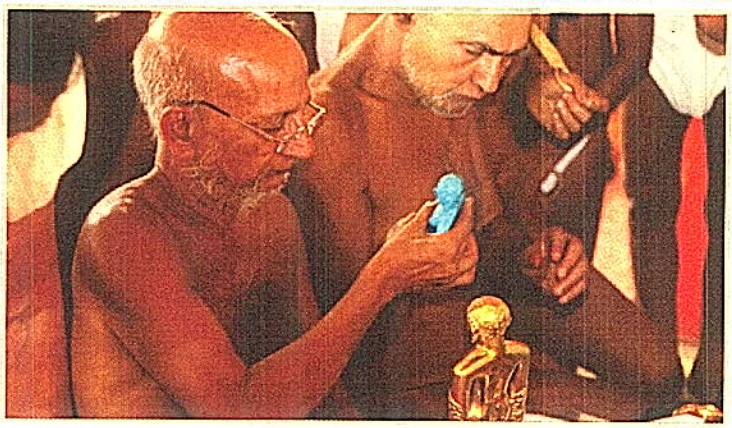

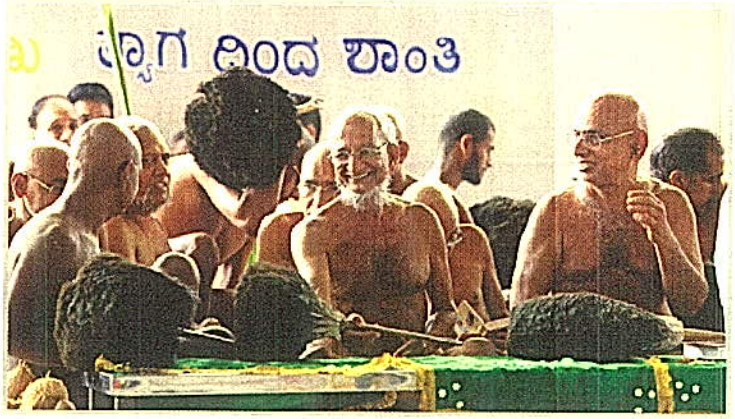

जैन तीर्थंकर अहिंसा के प्रेरणा स्त्रोत – उपराष्ट्रपति श्री वेंकैय्या नायडू

श्रवणबेलगोला में राज्याभिषेक किया वेंकैय्या नायडू ने

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक महोत्सव के पंचकल्याणक में चौथे दिवस 10 फरवरी को राज्याभिषेक महोत्सव में भारत के उप–राष्ट्रपति श्री वेंकैय्या नायडू ने कहा कि 'जीओ और जीने दो' से बड़ा कोई सन्देश नहीं हो सकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तीर्थंकरों से प्रेरणा लेकर अहिंसा का मार्ग अपनाया, भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक महोत्सव हमें भगवान बाहुबली एवं तीर्थंकरों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। गुरूओं का आशीर्वाद लेना हमारी परम्परा रही है। गुरू हमें सद्ज्ञान व सद्बुद्धि देने वाले हैं, पैदल धर्म का प्रबोधन करना मामूली कार्य नहीं है। जैनधर्म के त्रिरत्न सम्यक्दर्शन, ज्ञान, आचरण बहुत जरूरी है। धार्मिक भावना हमारी पहचान है, पूजा पद्धति अलग–अलग हो सकती है लेकिन देश के लिए जीना हमारी जीवन पद्धति है। जैन समाज के लोग समाज के लिए खर्च करते है यह अच्छी बात है। आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। अपनी रोटी बाँटकर खाना भारतीय संस्कृति है, मैं यहाँ आकर बहुत आनंद महसूस कर रहा हूँ, जीवन में शिक्षा फिर सेवाभाव व समाज में कुछ करने का भाव होना मानव सेवा है।

लगभग 25 मिनिट के धाराप्रवाह उद्बोधन में श्री नायडू ने कन्नड़, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा में भारतीय संस्कृति, भगवान बाहुबली का सन्देश, सत्य, अहिंसा, श्रवणबेलगोला के इतिहास, सम्राट चन्द्रगुप्त, आचार्य भद्रबाहु चन्द्रगिरि पर्वत की चर्चा करते हुए कई आयामों को छुआ और कहा कि कोई जाति उच्च व नीच नहीं होती, दूसरों की पूजा पद्धति की अवहेलना करना हमारी पद्धति नहीं। अलग भाषा, अलग वेश – भारत हमारा देश एक रहा है। अपने विधायक कार्यकाल में श्रवणबेलगोला दर्शन का जिक्र करते हुए उन्होंने जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी विगत 48 वर्षों से श्रवणबेलगोला के लिए समर्पित व्यक्तित्व बताया।

मंच पर पहुँचने के साथ ही उपस्थित राष्ट्रगौरव आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित 350 पिच्छीधारी आचार्य मुनिराज, आर्यिका माताजी को नमन कर उनका आशीर्वाद लिया।

मंच पर उपराष्ट्रपति श्री नायडू के साथ कर्नाटक राज्यपाल श्री वजूभाई वाला, केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक व संसदीय कार्यमंत्री श्री अनंत कुमार, कर्नाटक राज्य सरकार के केबिनेट मंत्री श्री ए.मंजू, कपड़ा मंत्री श्री रूद्रप्पा एम. लमानी, बैंगलोर सेन्ट्रल सांसद श्री एस.पी.मोहन, श्रवणबेलगोला विधायक श्री बालकृष्ण, महोत्सव अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन, कार्याध्यक्ष एस.जितेन्द्रकुमार, डिप्टी कमिश्नर रोहिणी सिधँड़ी उपस्थित थे।

राष्ट्रगान के साथ प्रारम्भ राज्याभिषेक समारोह में भगवान बाहुबली की स्तुति सोम्या–सर्वेश जैन ने प्रस्तुत की। स्वागत भाषण कर्नाटक राज्य महामस्तकाभिषेक कमेटी के अध्यक्ष व प्रभारी मंत्री श्री ए.मंजू ने दिया।

राज्याभिषेक कर शुभारम्भ हुआ समारोह

पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी के नेतृत्व में उपराष्ट्रपति श्री वैंकेय्या नायडू व अतिथियों ने सौधर्म इन्द्र श्री भागचंद–सुनितादेवी चूड़ीवाल गोहाटी के साथ सर्वप्रथम भगवान ऋषभदेव को मोती हार, मुकुट पहनाया व राज्याभिषेक किया। आरती के साथ उपराष्ट्रपति, राज्यपाल व सौधर्म इन्द्र व अतिथियों ने चंवर ढुराये।

भारतीय ज्ञानपीठ की 108 पुस्तकों का विमोचन

महामस्तकाभिषेक में श्रुत साहित्य प्रकाशन व अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित करने की भावना अनुसार 108 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। जिनका विमोचन उपराष्ट्रपति श्री नायडू ने

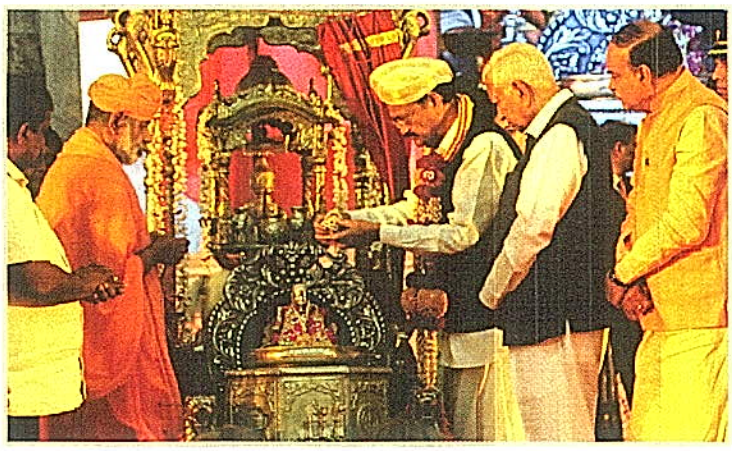

श्रवणबेलगोला
26-
018 तक

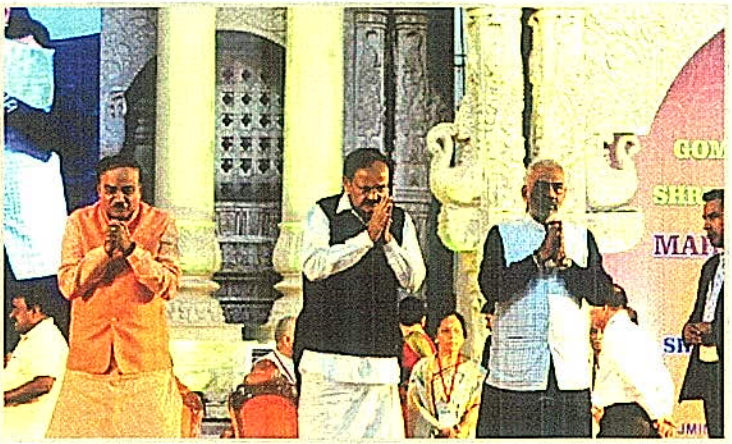

पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के साथ किया। पूज्य स्वामीजी ने उन्हें पुस्तकें भी भेंट की। स्वामीजी ने कहा कि महामस्तकाभिषेक केवल जूलुस नहीं, उत्सव नहीं, पूजा नहीं यह जनकल्याण, शिक्षा, सांस्कृतिक संस्कृति संवर्धन का कार्य भी है। एक करोड़ रूपये की लागत से उक्त कार्य सम्पन्न हुआ है।

श्रवणबेलगोला के प्राकृत संस्थान को विश्वविद्यालय के रुप में विकसित करेंगे

– श्री अनंतकुमार

भारत सरकार में केन्द्रीय मंत्री श्री अनंतकुमार ने कहा कि आज विश्व को बाहुबली टेक्नालॉजी की आवश्यकता है, अहिंसा–त्याग–शांति–मैत्री–प्रगति बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पूज्य भट्टारक स्वामीजी की प्रेरणा से जो प्राकृत संस्थान चलाया जा रहा है उसे पहला प्राकृत विश्वविद्यालय भारत सरकार विकसित करेगी, केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने इस हेतु अपनी सहमति प्रदान कर दी है। भगवान महावीर जन्मभूमि वैशाली में भी प्राकृत विश्वविद्यालय होना चाहिये इस हेतु मैं बिहार सरकार से भी चर्चा करूंगा। प्राकृत के दो विश्वविद्यालय सम्पूर्ण विश्व में दीप स्तम्भ का कार्य करेगें। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर भी महामस्तकाभिषेक में आएगें।

सबसे ज्यादा दान देने वाला समाज है जैन समाज – राज्यपाल श्री वजूभाई वाला

कर्नाटक राज्य के राज्यपाल श्री वजूभाई वाला ने कहा कि त्याग में जो आनंद है उपभोग में नहीं है, यहाँ जितने भी साधु संत विराजमान है उन्होंने त्याग किया है इसीलिए हम दर्शन करने के लिए आते है। सबसे सुखी सम्पन्न लोग, सबसे ज्यादा सम्पत्ति वाले जैनधर्म के लोग है तो सबसे ज्यादा दान देने वाला समाज भी जैन समाज है। जितनी ताकत है उतने पैसे कमाईये, लेकिन समाज को समर्पित भी कीजिए। राणा प्रताप में ताकत थी, भामाशाह के पास सम्पत्ति दोनों का मिश्रण हुआ विजय मिली। 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' बताते हुए उन्होंने कहा कि वीर ही क्षमा कर सकता है कमजोर नहीं। गीता में लिखा है कि जो धर्म विरूद्ध कार्य करे उसे समाप्त कर दो। उल्लेखनीय है कि वजूभाई वाला ने जोरदार जयकार लगाकर भगवान बाहुबली की जय–जयकार उपस्थितजनों से कराकर सबका मन मोह लिया।

साधुओं की जितनी भक्ति करें कम है – पूज्य भट्टारक स्वामीजी

सम्बोधित करते हुए पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि राज्याभिषेक बहुत पवित्र कार्य है। साधु संत यहाँ दो हजार किलोमीटर का पद विहार करके आए है, इनकी जितनी भक्ति हम करें कम है। सन् 1981, 1993, 2006 के महामस्तकाभिषेक का इतिहास बताते हुए स्वामीजी ने कहा कि संस्कृति संरक्षण के लिए कार्य करते हुए श्री नायडू यहाँ तक पहुँचे है। समाज को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है। केन्द्रीय मंत्री श्री अनंतकुमार के बारे में उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार से आवश्यक सहयोग आमंत्रण देने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है। श्रवणबेलगोला को उनका बहुत सहयोग प्राप्त होता है।

माँ भारती का सम्मान व वन्दे मातरम् का गान होना चाहिये

– आचार्य पुष्पदंतसागरजी

आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी महाराज ने कहा कि मेरा लक्ष्य है कि युद्ध रहित विश्व, संघर्ष रहित परिवार, विवाद रहित राज्य, स्वार्थ रहित राजनीति, छलकपट मुक्त मैत्रीभाव होना चाहिये। मंगल ग्रह पर हम जाए न जाए लेकिन स्वामीजी जो भारतवर्ष के मंगल में लगे है उनके साथ जाना चाहिये। अहिंसा संस्कृति को मानने वाले हम लोगों ने कभी जनहानि, हड़ताल नहीं की है। भगवान बाहुबली ने तो अपना सबकुछ जीतकर भी सब कुछ त्याग दिया ऐसे बाहुबली स्वामी के तीर्थ श्रवणबेलगोला के आसपास पॉच किलोमीटर का क्षेत्र अहिंसक क्षेत्र होना चाहिये। साथ ही आचार्यजी ने कामना की कि माँ भारती का सम्मान होना चाहिये–नित्य वंदे मातरम् का गान होना चाहिये।

श्रुत प्रकाशन समिति के डॉ. वीरसागर शास्त्री नई दिल्ली ने कहा कि अज्ञानियों का गुरू बनने की बजाए ज्ञानी का शिष्य बनना श्रेष्ठ है आज राज्याभिषेक के साथ ज्ञानाभिषेक, अक्षराभिषे की परम्परा का शुभारंभ 108 ग्रंथो के विमोचन के माध्यम से हुआ है। उन्होंने उपराष्ट्रपतिजी के सम्मान में अभिनंदन–पत्र का वाचन किया।

अतिथियों का स्वागत महोत्सव अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन, कार्याध्यक्ष एस.जितेन्द्रकुमार, जनरल सेक्रेटरी सतीष जैन, सेक्रेटरी सुरेश पाटिल, विनोद डोड़ण्णवर, जयकुमार जैन, राकेश सेठी, राजेश खन्ना, स्वराज जैन 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' आदि ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। राज्याभिषेक के दौरान दुदुंभि नाद कर हर्ष व्यक्त किया गया।

– अनुपमा राजेन्द्र जैन, सनावद

समाज को सही दिशा दिखाते हैं संत : पी.एम.

पी.एम. ने प्राचीन भाषा प्राकृत में पढ़ी गोमटेश्वर बाहुबली की स्तुति

प्रधानमंत्री जी ने कहा 'सर्वे सन्तु निरामय:'

इस संकल्प को पूरा करने के लिए एक-के-बाद एक कदम उठा रहे हैं ।

पीएम ने लिया दिगम्बर जैन संतों-साध्वियों से आशीर्वाद

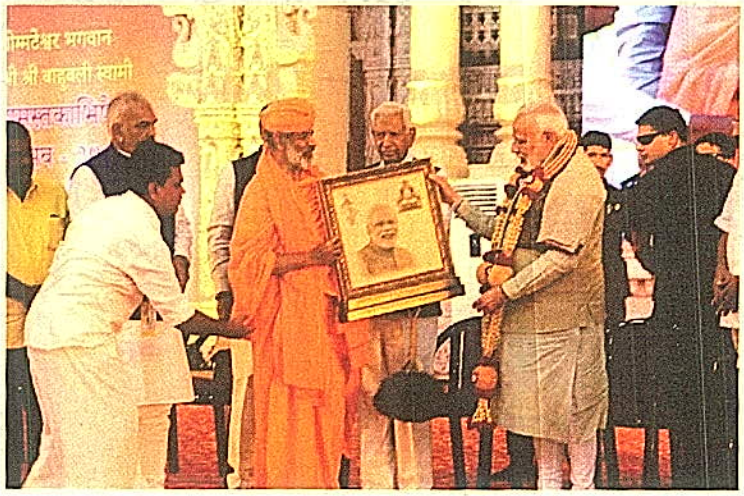

दिनांक 19 फरवरी 2018 को देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी गोमटेश्वर बाहुबली के महामस्तकाभिषेक महामहोत्सव में भाग लेने कर्नाटक के श्रवणबेलगोला पहुँचे। जहां पर उन्होंने वहां विराजमान दिगम्बर जैन संतों-साध्वियों से मङ्गल आशीर्वाद प्राप्त किया और एक अस्पताल तथा विंध्यगिरि पर्वत पर पहुँचने के लिए सीढ़ियों का भी उदघाटन किया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि - परम पूज्य आचार्य महाराज जी, समस्त पूज्य मुनिराज जी एवं पूज्य गणिनी माताजी एवं समस्त आर्यिका माता जी और मंच पर विराजमान कर्नाटक के राज्यपाल श्रीमान वजूभाई बाला जी, केंद्र में मंत्री परिषद के मेरे साथी सदानंद गौड़ा जी, अनंत कुमार जी, पीयूष गोयल जी ,राज्य के मंत्री श्री ए. मंजू जी, यहां के प्रबंध समिति के श्रीमान चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी, जिला पंचायत हासन के अध्यक्ष देवराज जी, विधायकजी और विशाल संख्या में पधारे हुए देश के कोने-कोने से आए हुए सभी श्रद्धालु, माताओं, भाइयों और बहनों। यह मेरा सौभाग्य है कि 12 साल में एक बार जो महापर्व (गोम्मटेश्वर बाहुबली का महामस्तकाभिषेक) होता है उसी कार्यकाल में प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने का मेरे पास जिम्मा है और इसीलिए प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी के तहत उसी कालखंड में मुझे इस पवित्र अवसर पर आप सबके आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है ।

श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली महामस्तक अभिषेकम अवसर और यहां इतने आचार्य भगवंत, मुनि और माताजी के एक साथ दर्शन प्राप्त करना, उनके आशीर्वाद प्राप्त करना ये अपने आप में एक बहुत बड़ा सौभाग्य है।

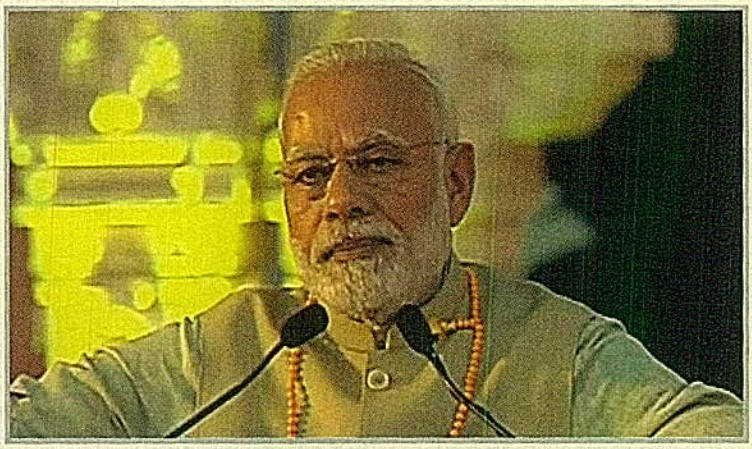

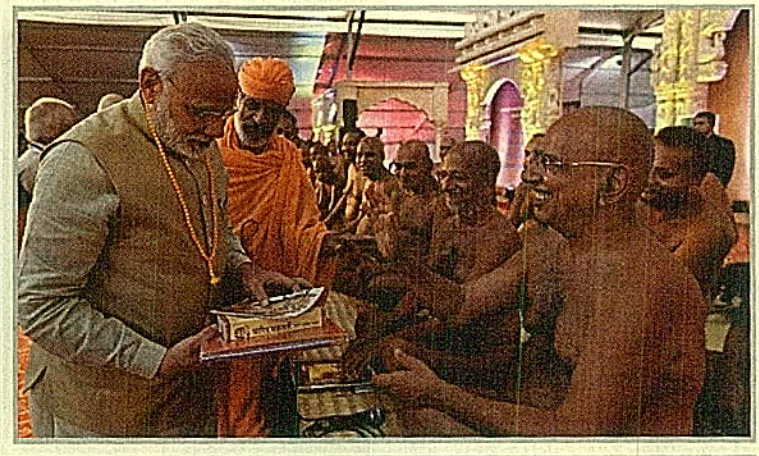

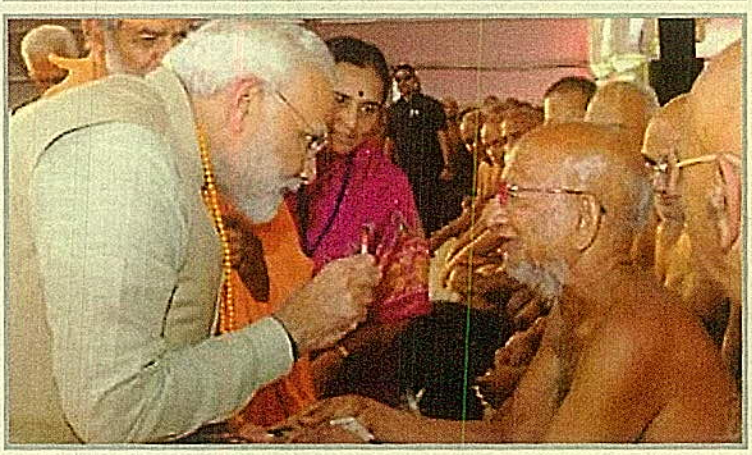

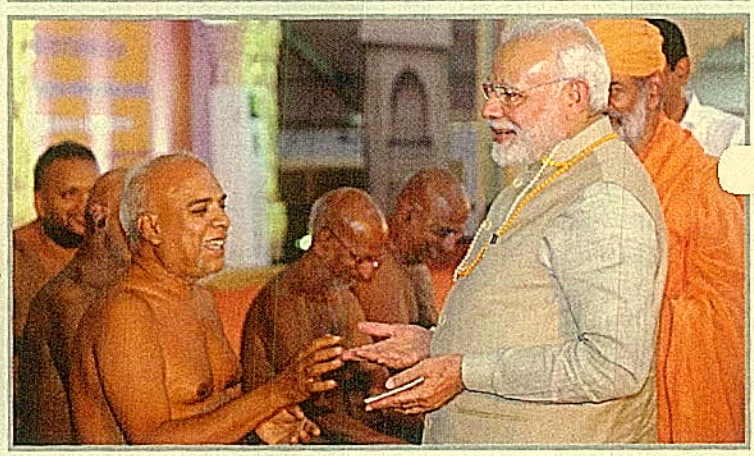

जब भारत सरकार के पास यहां के धार्मिक यात्रियों की सुविधा के लिए कुछ प्रस्ताव आए थे, वैसे कुछ व्यवस्था ऐसी होती है कि आर्कियोलॉजी सर्वे डिपार्टमेंट को कुछ चीजें करने में दिक्कत होती है। कुछ ऐसे कानून और नियम बने होते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद भी भारत सरकार यहां पर आने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए जितना भी कर सकती है जो-जो व्यवस्था खड़े करने की आवश्यकता होती है, उन सब में पूरी जिम्मेदारी के साथ अपना दायित्व निभाने का प्रयास किया है और यह हमारे लिए बहुत ही संतोष की बात है। आज मुझे एक अस्पताल के लोकार्पण का भी अवसर मिला। बहुत लोगों की मान्यता यह है कि हमारे देश में धार्मिक प्रवृत्तियां तो बहुत होती हैं लेकिन सामाजिक प्रवृत्तियां कम होती हैं ये परसेप्शन सही नहीं हैं।

भारत के संत-महंत, आचार्य ,मुनि, भगवंत सब कोई जहां है जिस रूप में हैं, समाज के लिए कुछ ना कुछ भला करने के लिए कार्यरत रहते हैं। आज भी हमारी ऐसी महान संत परंपरा रही है कि 20- 25 किलोमीटर के फासले पर यदि कोई भूखा इंसान है तो हमारी संत-परंपरा की व्यवस्था ऐसी है कि कहीं ना कहीं उसको पेट भरने का प्रबंध किसी ना किसी संत द्वारा चलता रहता है। कई सामाजिक काम, शिक्षा के क्षेत्र में काम, आरोग्य के क्षेत्र में काम, व्यक्तियों को नशा से मुक्त करने के काम, अनेक प्रवृतियां हमारी इस महान परंपरा में आज भी हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा उतना ही अथक प्रयास करके चल रहे हैं।

आज जब गोम्टेश थुदि की ओर में नज़र कर रहा था तो मुझे लगा कि मैं आज उसे आपके सामने उद्धृत करूं। गोम्टेश थुदि में जिस प्रकार का बाहुबली का वर्णन किया गया है, गोम्मटेश इस पूरे स्थान का जो पूरा वर्णन किया गया - (प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जैसे ही प्राकृत भाषा में लिखी गोम्मटेश थुदि के निम्न पद्य को अर्थ सहित उपस्थित विशाल जन समुदाय के सामने रखा पूरा प्रांगण तालियों से गूंज उठा-)

अच्छाय-सच्छं जलकंत-गंडं।
आबाहु-दोलतं सुकण्णपासं।।
गइंद-सुणडुज्जल-बाहुदण्डं।
तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं।।

और इसका मतलब होता है जिनकी देह आकाश के समान निर्मल है, जिनके कपोल जल के समान स्वच्छ हैं, जिनके कर्ण पल्लव स्कन्धों तक दोलायित हैं, जिनके दोनों उज्ज्वल भुजाएँ गजराज की सूंड के समान हैं, ऐसे उन गोम्मटेश स्वामी को मैं प्रतिदिन प्रणाम करता हूँ।

पूज्य स्वामी जी ने मुझ पर जितने आशीर्वाद बरसा सकते हैं, बरसाए। मेरी मां का भी स्मरण किया। मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूं इस आशीर्वाद को देने के लिए।

देश में समय बदलते हैं, समाज जीवन में बदलाव आने की परंपरा है। यह भारतीय समाज की विशेषता रहती है। समाज में जो कुरीतियां प्रवेश कर जाती हैं और कभी-कभी उसको आस्था का रूप दिया जाता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी समाज व्यवस्था में से ही ऐसे सिद्ध पुरुष पैदा होते हैं, ऐसे संत पुरुष पैदा होते हैं, ऐसे मुनि पैदा होते हैं,

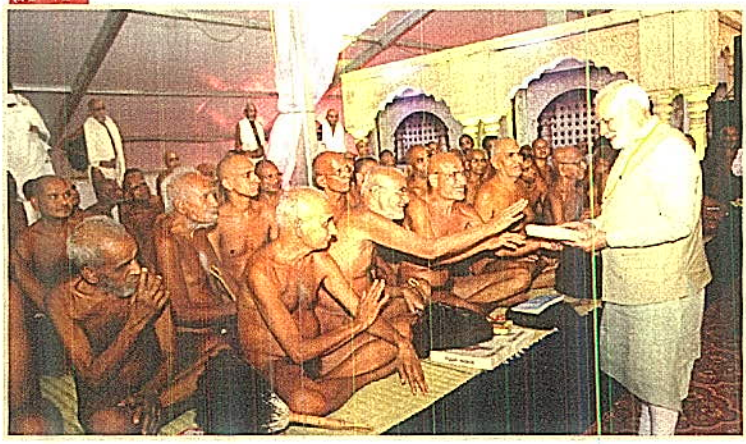

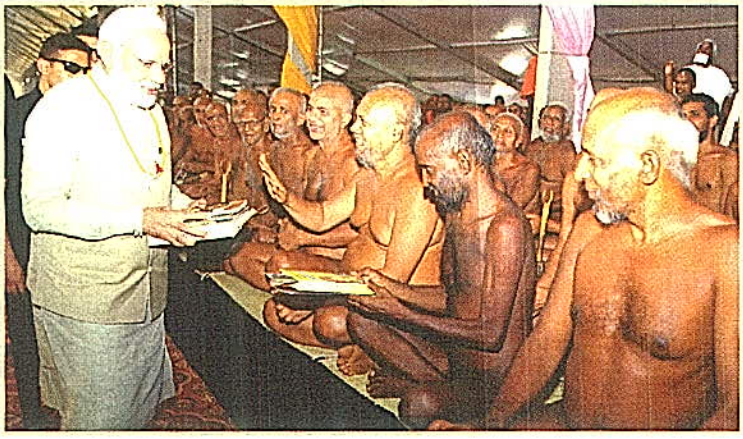

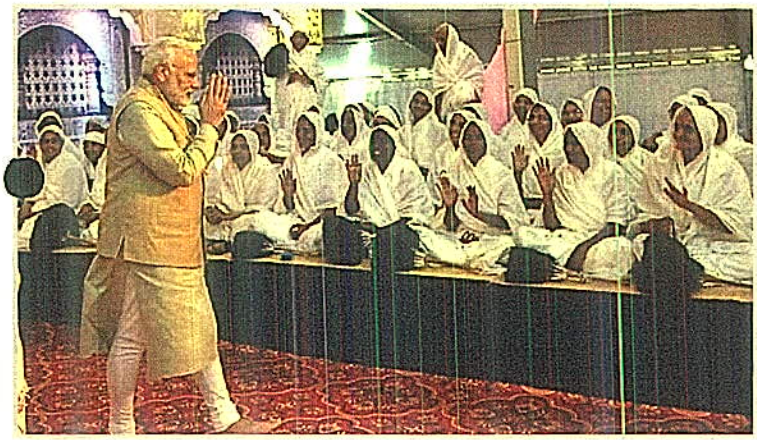

ऐसे आचार्य भगवंत पैदा होते हैं, जो उस समय समाज को सही दिशा दिखाते हैं। उस से मुक्ति पाकर के जीवन जीने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। हर 12 वर्ष में मिलने वाला एक प्रकार से कुंभ का ही अवसर है। यहां सब मिलकर के सामाजिक चिंतन करते हैं, समाज को आगे 12 साल के लिए कहां ले जाना है, समाज को उस रास्ता को छोड़कर इस रास्ते पर चलना है, क्योंकि हर कोने से संघ का, मुनि भगवंत, आचार्य, सब माताजी वहां के क्षेत्र का अनुभव लेकर आते हैं, चिंतन मनन होता है, विचार- विमर्श होता है और उसमें से समाज के लिए अमृत रूप कुछ चीजें हम लोगों को प्रसाद के रूप में प्राप्त होती हैं और जिसको हम लोग जीवन में उतारने के लिए भरसक प्रयास करते हैं ।

आज बदलते हुए युग में भी आज यहां एक अस्पताल का मुझे लोकार्पण करने का अवसर मिला। इतने बड़े अवसर के साथ एक बहुत बड़ा सामाजिक कार्य। आपने देखा होगा इस बजट में हमारी सरकार ने एक बहुत बड़ा कदम उठाया आयुष्मान भारत। इस योजना के तहत कोई भी गरीब परिवार, उसके परिवार पर बीमारी आ जाए तो सिर्फ एक व्यक्ति बीमार नहीं होता है एक प्रकार से उस परिवार की दो तीन पीढ़ी बीमार हो जाती हैं क्योंकि इतना आर्थिक खर्च हो जाता है कि बच्चे भी नहीं चुका पाते और पूरा परिवार तबाह हो जाता है। एक बीमारी पूरे परिवार को खा जाती है। ऐसे समय समाज और सरकार, हम सबका दायित्व बनता है कि ऐसे परिवार को संकट के समय हम उसका हाथ पकड़ें, उसकी चिंता करें और इसीलिए भारत सरकार ने आयुष्मान भारत योजना के तहत एक साल में परिवार में कोई भी बीमार हो जाए, 1 वर्ष में रू.500000 पांच लाख तक का उपचार का खर्चा, दवाई का खर्चा, ऑपरेशन का खर्चा, अस्पताल में रहने का खर्चा, रु. 500000 पांच लाख तक का खर्च का प्रबंध इंश्योरेंस के माध्यम से भारत सरकार करेगी। यह आजादी के बाद भारत में किया गया कदम पूरे विश्व में, पूरी दुनिया में सबसे बड़ा कदम है। इतना बड़ा कदम न कभी किसी ने उठाया है जो इस सरकार ने उठाया है। ये तभी संभव होता है कि जब हमारे शास्त्रों ने, हमारे ऋषियों ने, हमारे मुनियों ने उपदेश दिया- सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः। और सर्वे सन्तु निरामयः इस संकल्प को पूरा करने के लिए एक-के-बाद एक कदम उठा रहे हैं।

मुझे आज सब आचार्यगण का, सब मुनिवर्य का, सब माताजी का, पूज्य स्वामीजी का आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर मिला। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूं। मैं फिर एक बार इस पुण्य स्थली पर आकर अपने आपको धन्य महसूस करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस अवसर पर पूज्य भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी स्वामी ने प्रधानमंत्री जी का अभिनन्दन किया। परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज ने प्रधानमंत्री को साहित्य प्रदान कर आशीर्वाद प्रदान किया।

- डॉ सुनील जैन संचय, ललितपुर

महामस्तकाभिषेक के अवसर पर
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से चित्र प्रदर्शनी

महामस्तकाभिषेक के पावन अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से इस्रो ग्राउन्ड, देवीगोंडा सर्कल के पास एक चित्र प्रदर्शनी लगाई गई। तीर्थक्षेत्रों की चित्र प्रदर्शिनी का उद्घाटन वाशिंग्टन से पधारे हुए डॉ. सुशील जैन मेहता के करकमलों से किया गया। इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम. के. जैन, चेन्नई, महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर राष्ट्रीय मंत्री श्री विनोदकुमार जैन, मैसूर, तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक सदस्य श्री एम.के.जैन, चेन्नई, श्रीमान् निर्मल कुमारजी सेठी, तमिलनाडू, आन्ध्रप्रदेश, केरल, पांन्डिचेरी अंचल के अध्यक्ष श्री कमलकुमार ठोलिया, चेन्नई दक्षिण भारत जैन सभा के केन्द्रीय उपाध्यक्ष प्राध्यापक श्री डी.ए.पाटिल, जयसिंगपुर (सांगली) श्री जवाहरलाल जी जैन, सिकन्दराबाद (उ.प्र.) श्री जयकुमार जैन, कुंथलगिरि, प्रसिद्ध कलाकार-चित्रकार श्री प्रशांत शहा, मुम्बई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

तीर्थक्षेत्रों की इस चित्र प्रदर्शिनी में कुल 65 तीर्थक्षेत्रों की झांकियों की फोटो कॅनवास पर अत्यन्त सुन्दर एवं विशाल रुप से चित्रित की गई है। चित्र प्रदर्शनी में भगवान बाहुबली पर गुल्लिका अज्जी द्वारा लगातार अभिषेक किये जाने की झांकी भी प्रदर्शित की गई है।

जिसके अवलोकन के लिए विशाल जन समूह एक चित्त रहता है। सभा मण्डप में प्रचार सामग्री नि:शुल्क वितरित की जाती है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से यहाँ पधारे हुए विशाल मुनि महाराजों को इस चित्रप्रदर्शनी का अवलोकन करने के लिए निवेदन किया गया देश के कोने-कोने से पधारे हुए धर्मानुरागी महानुभाव पधार कर इस चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन कर प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं।

चित्र प्रदर्शनी में एल.ए.डी. माध्यम से दक्षिणभारत की गौरवशाली कला कृतियों का चित्रांकनों का फिल्मांकन के माध्यम से प्रचारित प्रस्ताव किया जा रहा है। धर्मानुरागी सभी महानुभावों से निवेदन है कि चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन अवश्य करें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा, गोमटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव २०१८ श्रवणबेलगोला के पावन अवसर पर एक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुये माननीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन, डॉ. सुशील मेहता, वॉशिंगटन, महामंत्री संतोष जैन, श्री डी.ए.पाटील, महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी सेठी, तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल, तामिलनाडु अंचल के अध्यक्ष श्री कमलकुमार जैन (ठोल्या) एवं अन्य महानुभाव

प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुये दाये से श्री सुरेशकुमार जैन-म्हैसुर, श्री डी.ए.पाटिल, प्रशांत जैन - मुंबई, निर्मलकुमारजी सेठी, कमलकुमार ठोल्या, संतोष जैन, श्रीमती सरिता एम.के.जैन, डॉ. सुशील मेहता, विनोद बाकलीवाल

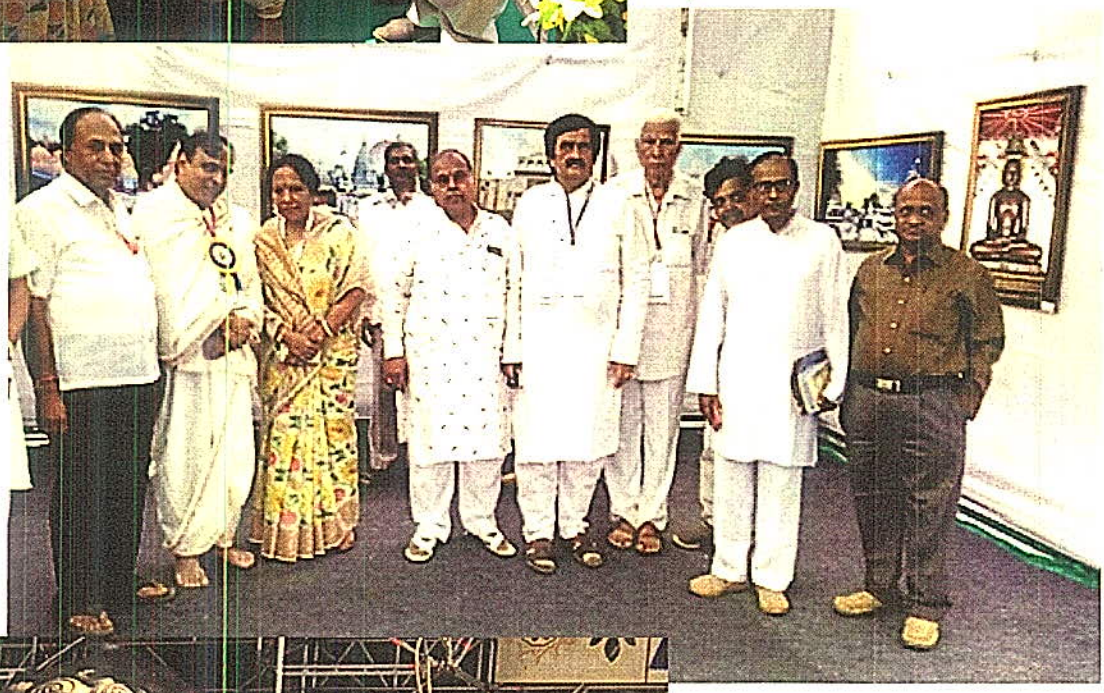

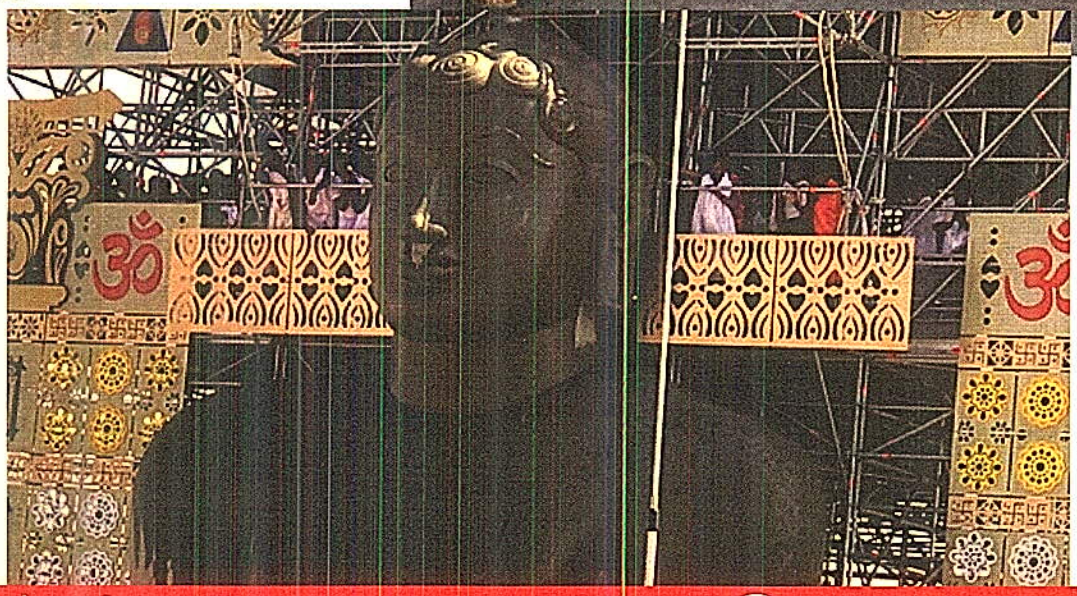

श्री श्री श्री गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक, दि. १७/०२/२०१८ प्रथम दिवस, प्रथम कलशकर्ता धर्मानुरागी - समाज गौरव - दानवीर श्रीमान अशोकजी पाटणी परिवार - किशनगढ, कलशाभिषेक के उपरांत मूर्ति के साथ

महामस्तकाभिषेक के दौरान श्रवणबेलगोला में आचार्य देवनन्दी जी महाराज द्वारा दी गई जैनेश्वरी दीक्षाएं

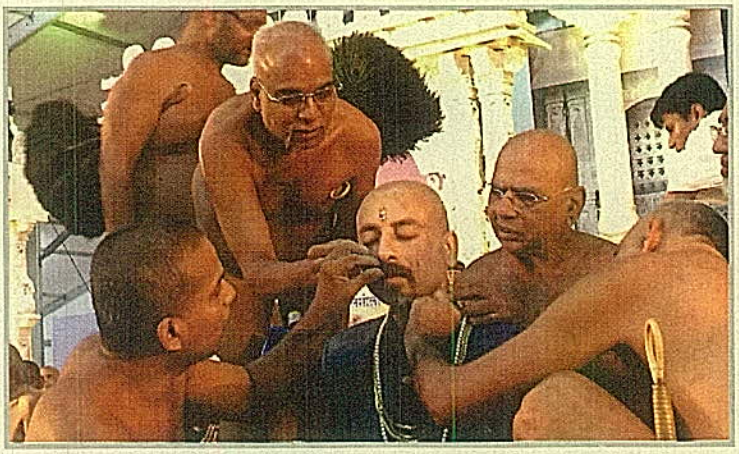

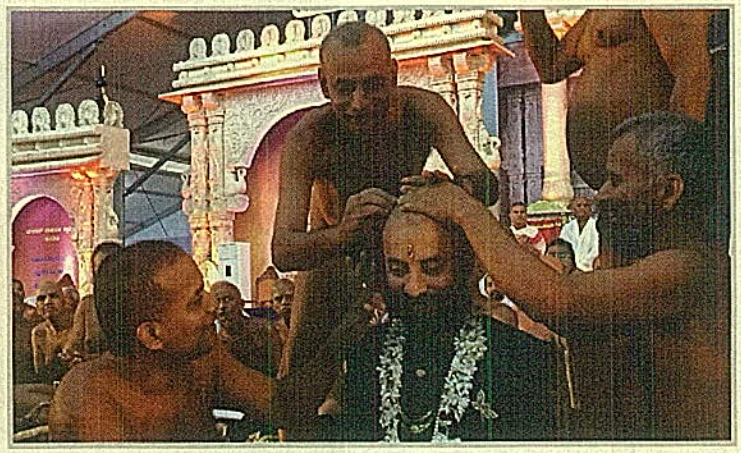

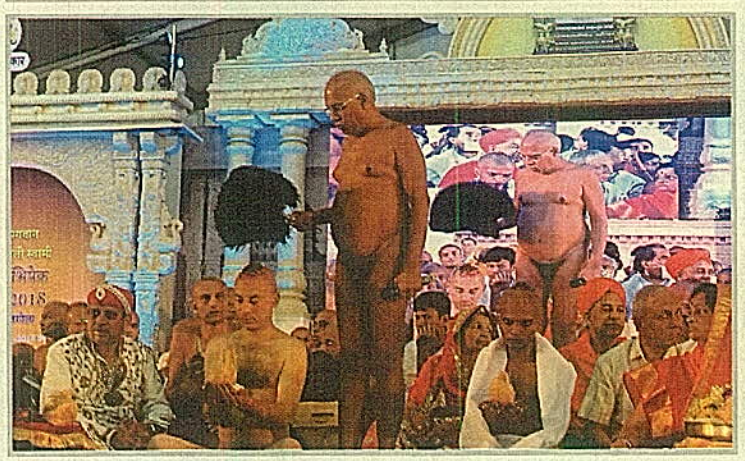

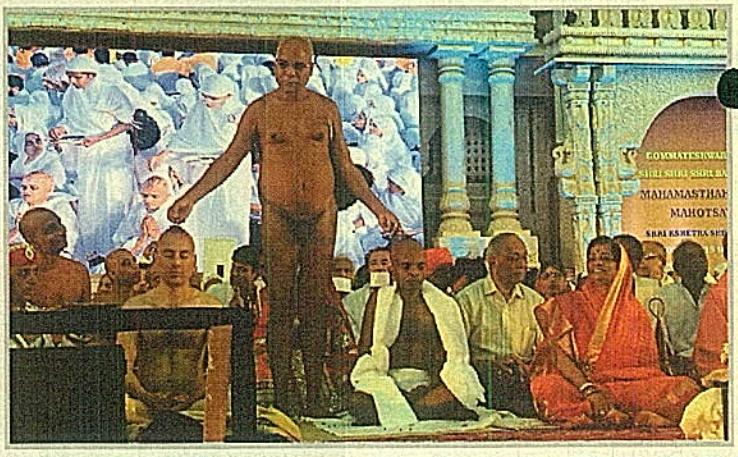

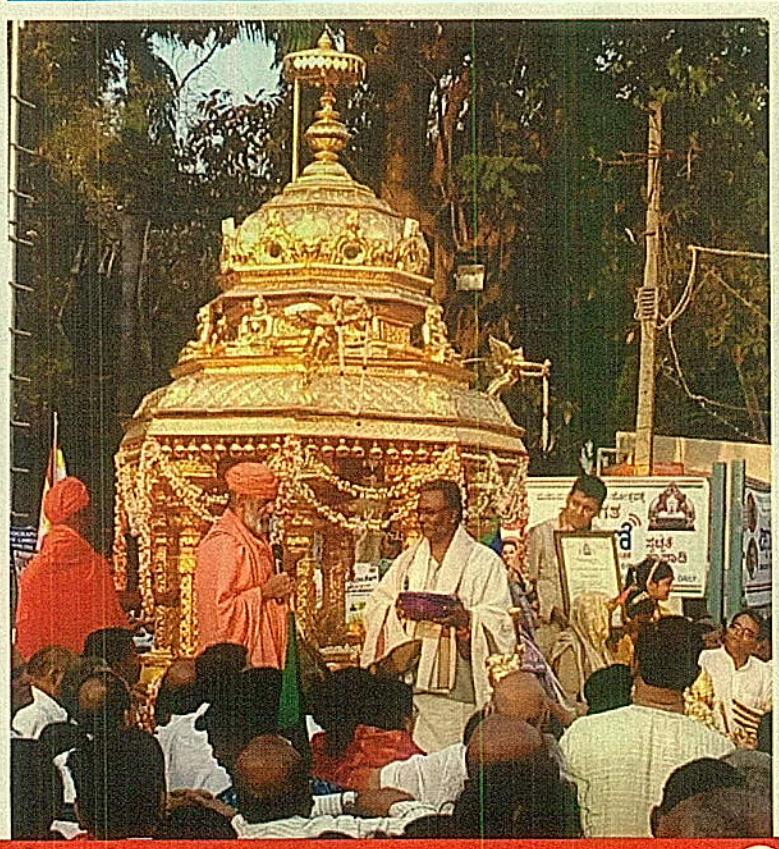

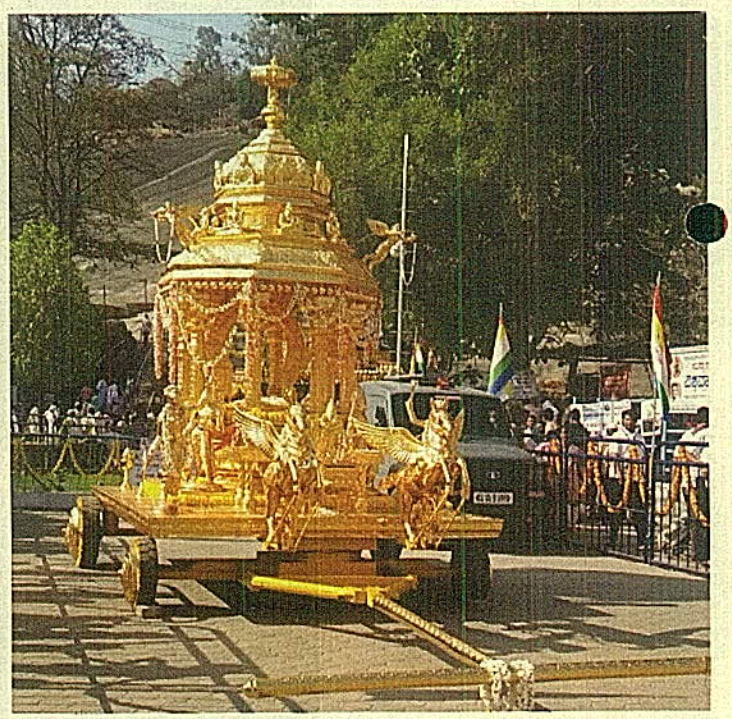

श्रवणबेलगोला में श्री कमलकुमार जैन द्वारा प्रदत्त स्वर्णरथ

भक्तामर पाठ से हुआ गोम्मटेश बाहुबली महामस्तकाभिषेक का मंगलाचरण

हजारों की संख्या में उपस्थित हुए श्रद्धालुगण

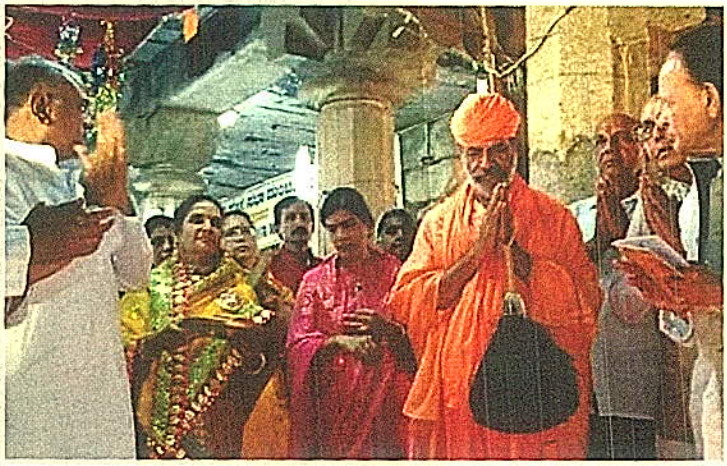

गोम्मटेश बाहुबली, श्रवणबेलगोला कर्नाटक में 12 वर्षों पश्चात होने जा रहे महामस्तकाभिषेक कार्यक्रम का मंगलाचरण भक्तामर पाठ से हुआ। यह मंगलाचरण श्री विद्यासागर यात्रा संघ, जयपुर के सदस्यों द्वारा आज दिनांक 16 फरवरी 2018 को गोम्मटेश बाहुबली में प्रातः 6.30 बजे 48 दीपकों से ऋद्धि मंत्रों द्वारा संगीतमय भक्तामर पाठ से किया गया।

यह कार्यक्रम परम पूज्य आचार्य विद्यासागर महाराज के मंगल आशीर्वाद से आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ सहित अन्य मुनिराजों के सानिध्य में तथा जगद्गुरू स्वस्ति श्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामी जी के मंगल निर्देशन में हुआ। इस कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सक भक्तामर से विशेष चिकित्सा करने वाली डॉ मंजू जैन ने अपने पूरे ग्रुप के साथ भाग लिया, इसके साथ ही गणेश राणा, प्रदीप जैन चूडीवाल, कंवरीलाल महावीर प्रसाद पाटनी परिवार (आर.के.मार्बल्स), दिग जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल सेठी, रत्न व्यवसायी सुभाष जैन, धर्मचंद पहाडिया, कवि चंद्रसेन जैन ,राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष कमलबाबू जैन, उपाध्यक्ष मुकेश सौगानी, वीर सेवक मण्डल के अध्यक्ष महेश काला, जेके जैन कोटा, श्री दिगंबर जैन महिला महासमिति की राष्ट्रीय प्रकोष्ठा मंत्री 'शीला डोडया, श्री विद्यासागर यात्रा संघ के सदस्य मनीष चौधरी, अखिलेश गंगवाल, गौरव छाबडा, दीपेश छाबडा सहित देश के कोने–कोने से हजारो की संख्या में लोग सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर श्रद्धालुगण अपने आप को धन्य मान रहे थे।

गौरतलब हैं कि गोम्मटेश में बाहुबली भगवान का 12 वर्षों में एक बार महामस्तकाभिषेक होता आया हैं। 12 वर्षों पश्चात इस वर्ष दिनांक 17 फरवरी से 25 फरवरी 2018 तक महामस्तकाभिषेक होने जा रहा हैं। इसको लेकर पूरे देश में हर्षोल्लास हैं। महामस्तकाभिषेक के दौरान प्रतिदिन लाखों की संख्या में लोग सम्मिलित होंगे।

– अखिलेश गंगवाल

श्रवणबेलगोला में 15 फरवरी को हुई मुनि श्री अचलनन्दी जी एवं श्री श्रेयसागरजी की समाधि के दृश्य

महामस्तकाभिषेक की झलकियां

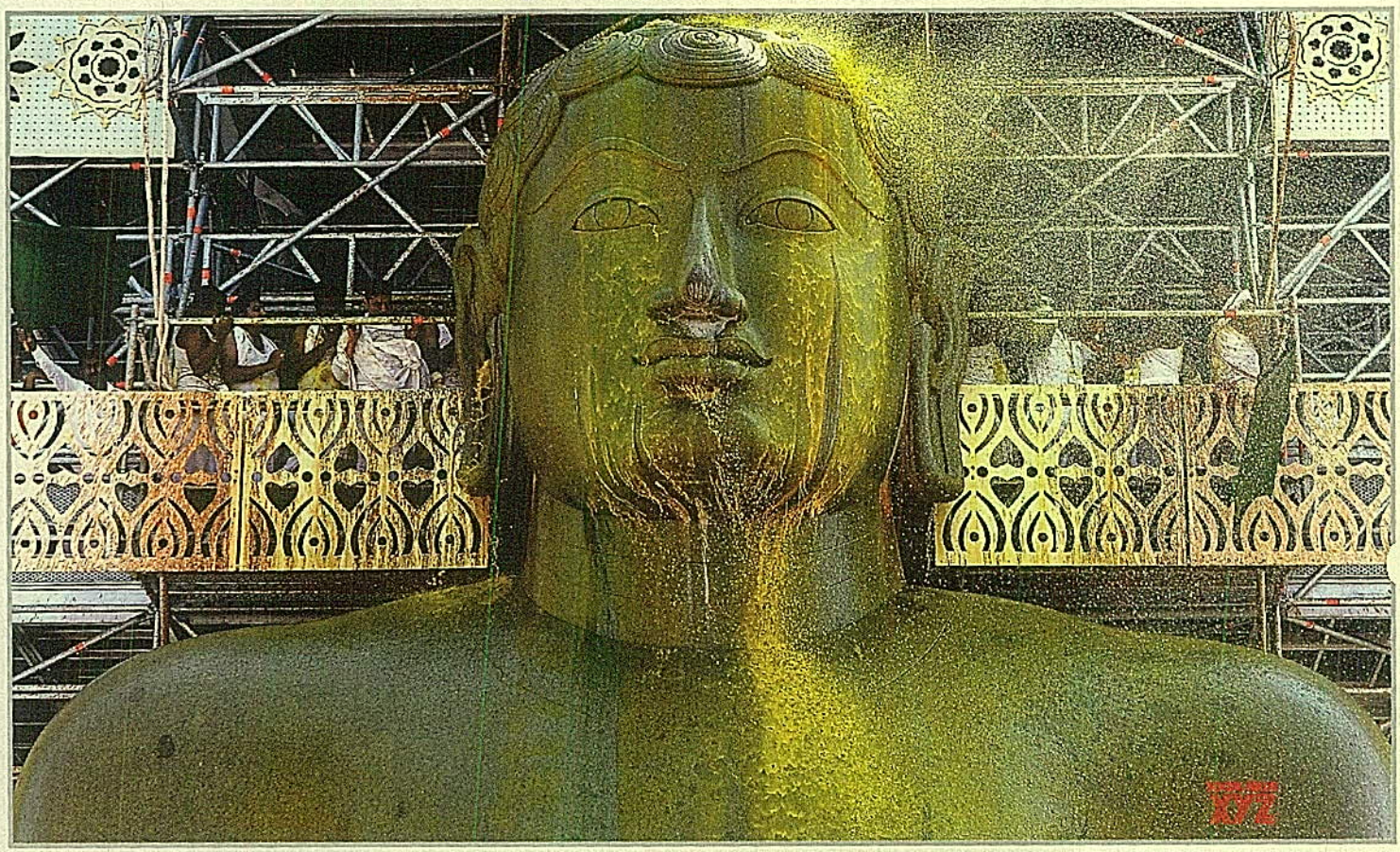

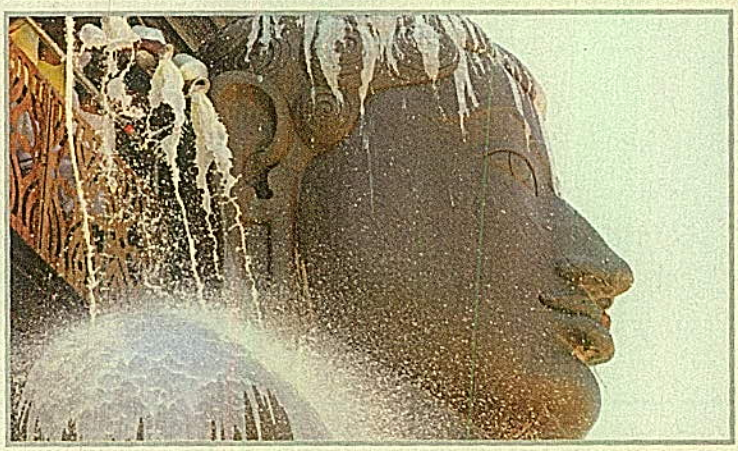

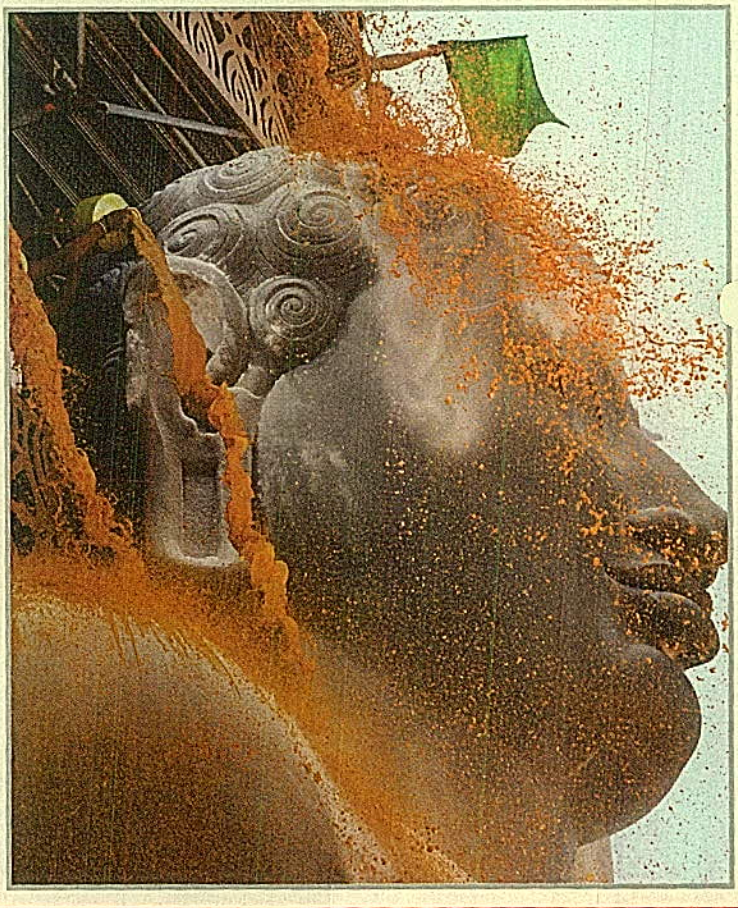

महामस्तकाभिषेक की झलकियां

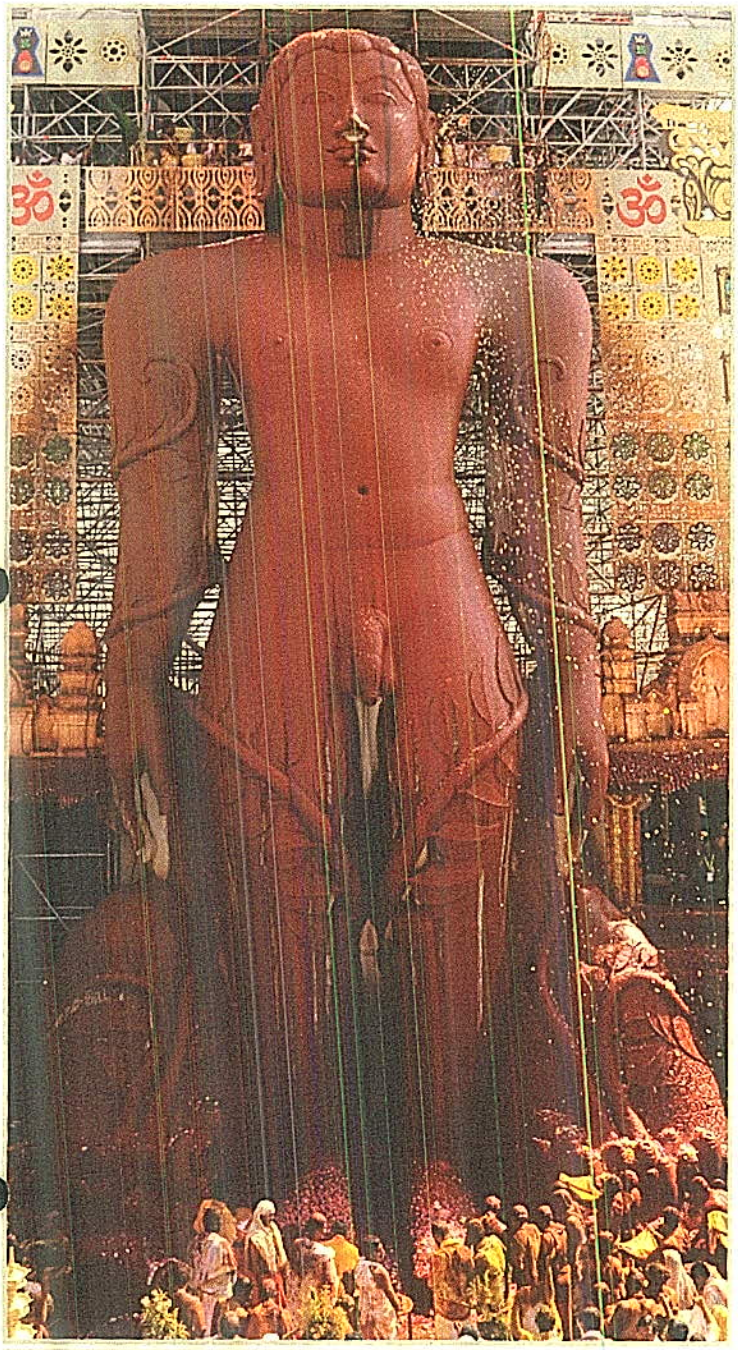

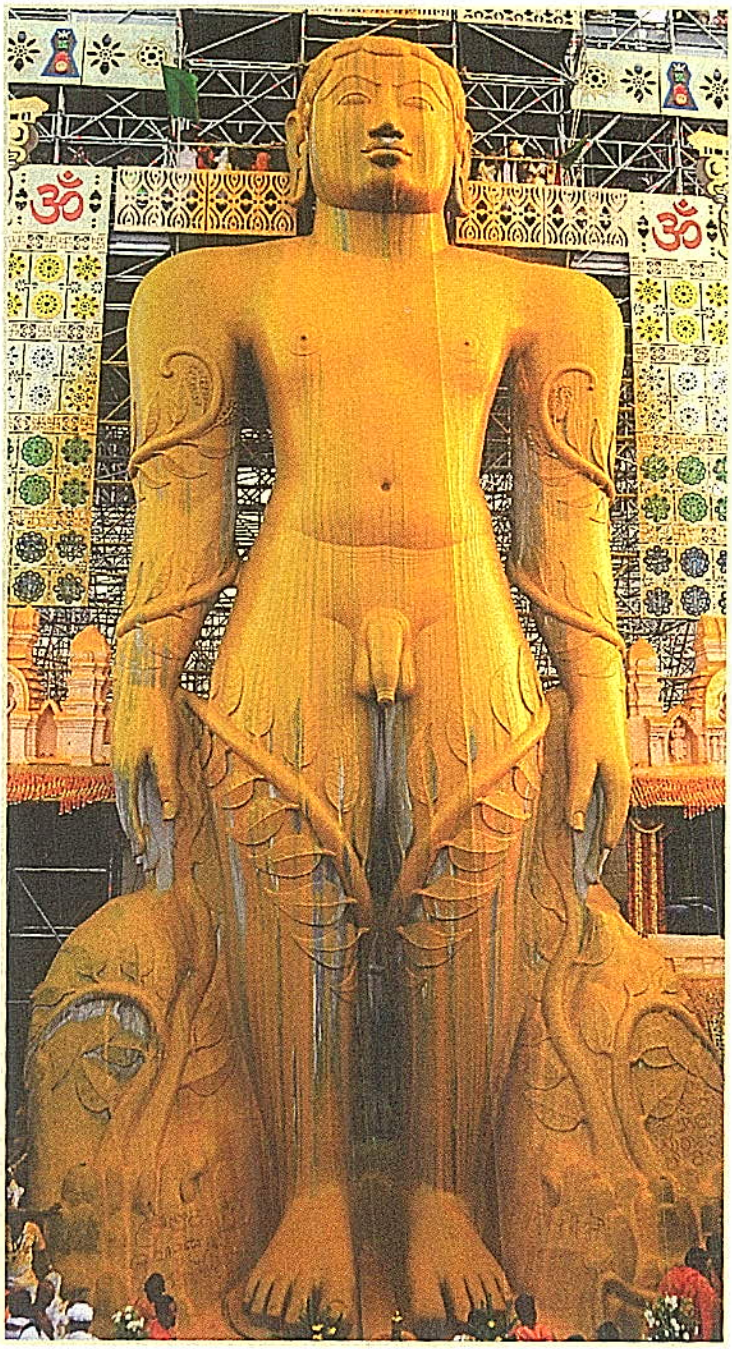

श्री समयसार विधान के नयना

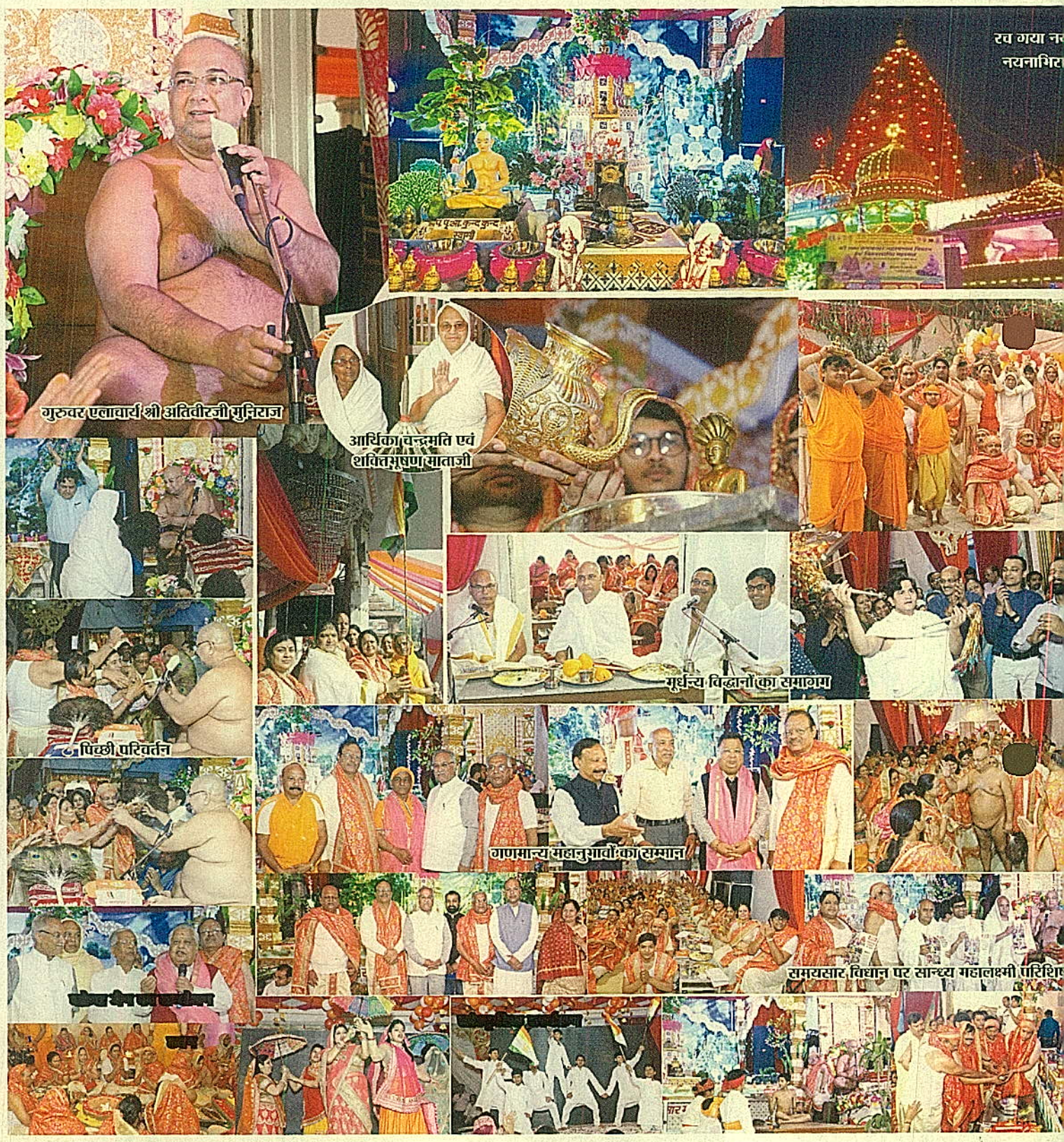

भिराम आयोजन की झलकियां

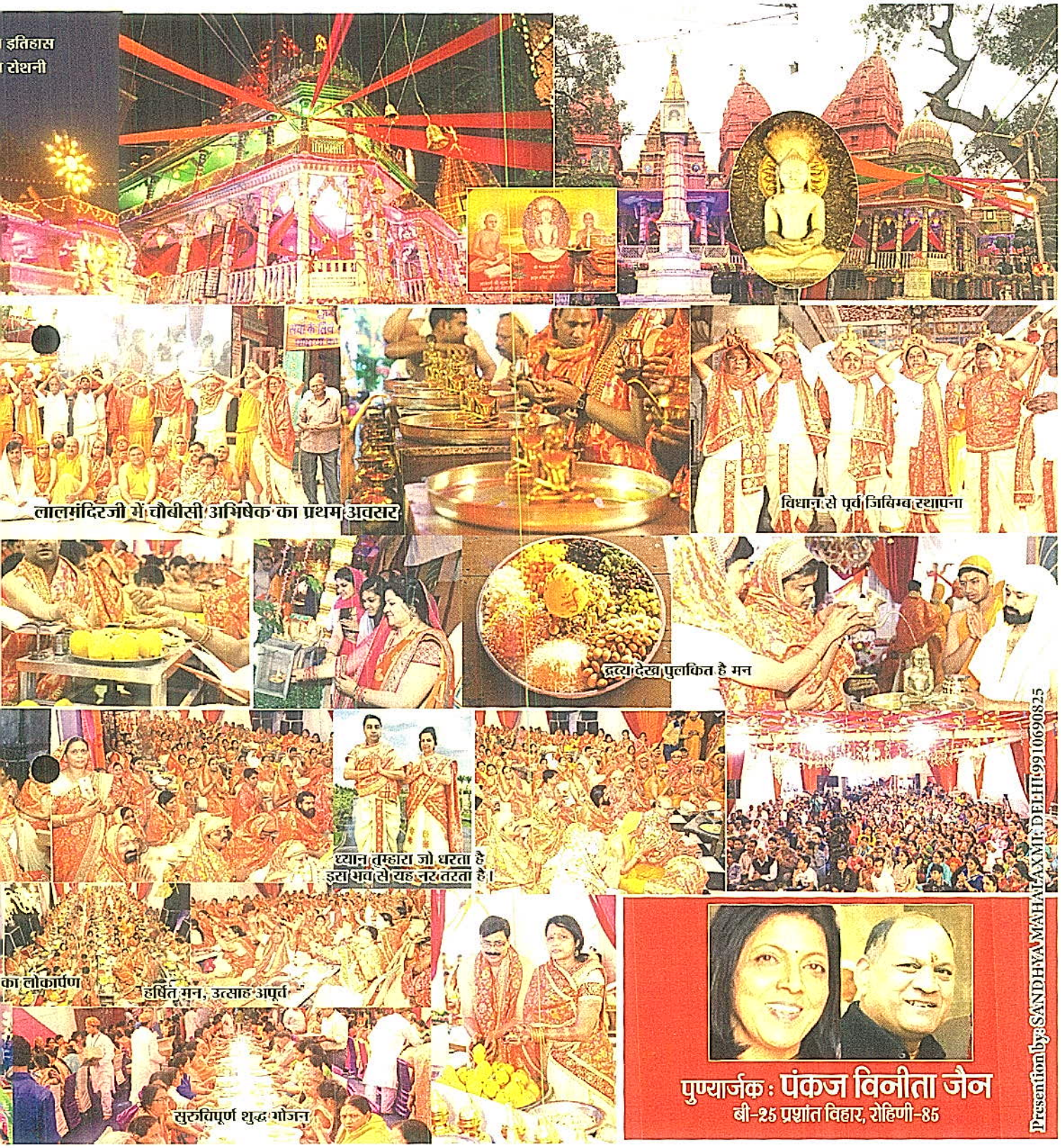

दिगम्बरत्व की कीर्ति का अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव
गोम्मटेश्वर का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न
आचार्य वर्धमानसागरजी के सान्निध्य में 380 पिच्छीधारी रहे उपस्थित
पूज्य चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी के नेतृत्व में जुड़ गया सारा देश
देश–विदेश के लाखों श्रद्धालु बने साक्षी

– अनुपमा राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

इक्कीसवीं सदी का द्वितीय लेकिन हर मामले में अद्वितीय, अभूतपूर्व, अनुपम, आनंदकारी, अद्भुत अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक 7 फरवरी से 26 फरवरी 2018 तक अनेक अविस्मरणीय आयोजनों के साथ सम्पन्न हो गया। दिगम्बर जैन जगत का विश्वस्तरीय आयोजन लोक कल्याण के संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें प्रमुख सान्निध्य राष्ट्रगौरव, वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित 28 आचार्य व 380 पिच्छीधारी दिगम्बर परम्परा में दीक्षित मुनि, आर्यिका माताजी, ऐलकजी, क्षुल्लकजी महाराज सम्मिलित हुए। समारोह का कुशल नेतृत्व पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने अत्यन्त कुशलता से करते हुए महोत्सव एवं दिगम्बर परम्परा को यशस्वी बनाया। पूज्य स्वामीजी के नेतृत्व व धर्माधिकारी पद्मविभूषण डॉ. डी.वीरेन्द्र हेगड़े के परम संरक्षण में समारोह अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के.जैन, कार्याध्यक्ष श्री एस. जितेन्द्रकुमार, जनरल सेक्रेटरी श्री सतीशचंद जैन, सेक्रेटरी श्री विनोद दोड्डण्णवर, जयकुमार जैन, सुरेश पाटिल, प्रमोद जैन, महावीर गंगवाल, राकेश सेठी के साथ 41 उप–समितियों के अध्यक्ष, मुख्य संयोजक, संयोजक, सह–संयोजक, हजारों कार्यकर्ता, स्वयं सेवकों, प्रशासनिक अधिकारी डिप्टी कमिश्नर रोहिणी सिंधूरी, स्पेशल आफिसर राकेशसिंह सहित हजारों शासकीय कर्मियों के कुशल संयोजन में सम्पन्न महामस्तकाभिषेक में भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, उप–राष्ट्रपति श्री एम.वैंकय्या नायडू, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री श्री राजनाथसिंह, कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैय्या, प्रभारी मंत्री श्री ए.मंजू, केन्द्रीय मंत्री श्री अनंतकुमार, सदानंद गौड़ा, महोत्सव उपाध्यक्ष के.अभयचंद्र सहित भारतदेश के अनेक राज्यों के मंत्री, सांसद, विधायक, गणमान्य नेता इस अभूतपूर्व आयोजन के साक्षी बने, इन सबके साथ सम्पूर्ण विश्व के अनेक देशों के अप्रवासी भारतीय, विदेशी श्रद्धालु व भारत के हर कोने से गोम्मटेश्वर के भक्त इस आयोजन में अपनी आस्था–श्रद्धा–विश्वास के साथ भक्ति का अर्घ लेकर पहुँचे और बारहवर्षीय इस महामहोत्सव में प्रभु का दूध, नारियल रस, इक्षुरस, श्वेत कल्कचूर्ण, सर्वोषधि, श्रीगंध, चंदन, अष्टगंध, केशरवृष्टि, रजतपुष्प वृष्टि से महामस्तकाभिषेक कर अपने आपको कृतार्थ किया।

प्रथम महामस्तकाभिषेक आर.के. मार्बल परिवार ने सतत् दूसरी बार किया

इक्कीसवीं सदी के द्वितीय महामस्तकाभिषेक में सर्वप्रथम जलाभिषेक करने का परम सौभाग्य दिगम्बर जैन जगत के दानवीर भामाशाह आर.के.मार्बल परिवार किशनगढ़ के श्रावक श्रेष्ठी श्री कंवरीलाल, महावीर प्रसाद, अशोक, सुरेश, विमल, विनीत, विकास, विनय, विवेक, ऋषभ पाटनी से 17 फरवरी 2018 को ठीक 2:35 बजे महामस्तकाभिषेक किया। पूज्य स्वामीजी ने बताया कि 11 करोड़ 61 लाख रूपये में प्रथम कलश करेंगे। उस दानराशि का उपयोग लोककल्याण में निर्मित होने वाले 200 बेड के मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल के लिए होगा। वर्ष 2006 के महामस्तकाभिषेक में प्रथम कलश करने का सौभाग्य भी इसी परिवार ने प्राप्त किया था।

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक एक बृहद् समागम था जिसमें संस्कृति – संस्कार – सेवा – समर्पण – सद्भावना – सुव्यवस्था – सुनियोजन – समता – साधना स्तुति – भक्ति – पूजन – अर्चना – समृद्धि सहित सब कुछ था, जिसका वर्णन यदि करें तो कई पृष्ठ लिखे जा सकते है, लेकिन वर्तमान समय में शब्द सीमा को दृष्टिगत रखते हुए 88 वें महामस्तकाभिषेक को 88 विशेषताओं में बांधने का प्रयास किया है युवा पत्रकार मंगल कलश बुलेटिन श्रवणबेलगोला के सम्पादक श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर' (सनावद) ने जो पाठकों को पसंद आएगा।

1. महामस्तकाभिषेक की घोषणा 1 फरवरी 2017 बसंत पंचमी को चामुण्डराय मण्डप में की गई थी, जिसमें पूज्य भट्टारक स्वामीजी ने कहा था "भक्ति से युक्ति और युक्ति से मुक्ति मिलती है", महोत्सव अध्यक्ष श्रीमती सरिताजी ने कहा था "मैं नहीं सारे समाजजन राष्ट्रीय अध्यक्ष" हैं।
2. पूज्य स्वामीजी ने महामस्तकाभिषेक के निमित्त प्राप्त धनराशि का उपयोग चार दानों में करने का निर्णय लिया

था व बताया था कि इस महामस्तकाभिषेक के निमित्त लोककल्याण हेतु एक मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल का निर्माण होगा ।

3. सम्पन्न वर्ग को धनराशि से कलश करने की सुविधा थी तो आर्थिक विपन्न व्यक्तियों के लिए निःशुल्क गुल्लिका अज्जी कलश का निर्धारण भी किया गया था जो सबको साथ लेकर चलने का एक अभूतपूर्व निर्णय था।

4. पूज्य स्वामीजी के निर्देशन में त्यागी सेवा उप–समिति के अध्यक्ष श्रीपाल गंगवाल गेवराई, विमुक्त जैन बैंगलुरू, राकेश सेठी कोलकाता ने सम्पूर्ण देश के पन्द्रह सौ साधुओं को पूज्य स्वामीजी की ओर से लिखित भावपूर्ण आमंत्रण दिये गए थे ।

5. आवास समिति के अध्यक्ष श्री अनिल सेठी बेंगलुरू ने बताया कि 30 लाख श्रद्धालुओं के आगमन को ध्यान में रखते हुए 300 एकड़ में आवास व्यवस्था की गई। महोत्सव के निमित्त एक भी पेड़ नहीं काटा जाएगा। आवास व्यवस्था बनाने के पूर्व जर्मनी व बर्लिन फेस्टिवल, सिंहस्थ कुंभ आदि बड़े आयोजनों का अध्ययन किया गया।

6. महोत्सव के इतिहास में पहली बार महोत्सव की कमान महिला नेत्री श्रीमती सरिता एम.के.जैन चैन्नई को सौंपी गई, उन्हौंने राष्ट्रीय अध्यक्ष का दायित्व पूर्ण जिम्मेदारी के साथ निभाते हुए अपनी टीम का हौसला बढ़ाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी।

7. महोत्सव के कार्याध्यक्ष श्री एस जितेन्द्रकुमार बेंगलुरू महोत्सव में शांतचित्त से कार्य करते रहे उनकी वर्किंग जबरदस्त रही।

8. भोजन व्यवस्था बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य था, विविधताओं भरा देश विविध भोजन–नाश्ता 17 भोजनशालाओं के माध्यम से संचालित हुआ। भोजन व्यवस्था उप–समिति अध्यक्ष श्री विनोद बाकलीवाल मैसूर ने अपनी टीम के साथ अलग–अलग प्रदेशों के अनुसार भोजन व्यवस्था की जो बहुत ही सराहनीय थी। उनका लक्ष्य था कि प्रत्येक यात्री को संतुष्ट करेंगे, उन्होंने निरंतर मॉनिटरिंग के माध्यम से यह कार्य सुव्यवस्थित तरीके से सम्भव कर दिखाया।

9. महोत्सव के पूर्व राष्ट्रीय स्तर पर महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, विद्वत सम्मेलन, प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, सम्पादक–पत्रकार सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, कन्नड़ साहित्य सम्मेलन वृहद् स्तर पर आयोजित किय गए जिसमें देश के ख्यातनाम प्रतिष्ठित जन सम्मिलित हुए जिन्हौंने श्रवणबेलगोला को जन–जन तक पहुँचाया व पूज्य स्वामीजी की भावना का प्रसार किया।

10. राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन में आयोजित हेरीटेज वॉक में पॉच हजार युवाओं ने सम्मिलित होकर एक ड्रेस एक आवाज के साथ 'सेव नेचर – सेव हेरिटेज' का सन्देश दिया। वॉक को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड की टीम ने वर्ल्ड रिकार्ड का सार्टिफिकेट दिया। युवा सम्मेलन हेतु श्री प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल व श्री हसमुख गांधी के साथ सम्पूर्ण देशभर के पाँच हजार युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

11. सम्पूर्ण सम्मेलनों के प्रभारी सेक्रेटरी श्री विनोद डोड्ण्णावर बेलगांव थे जिन्हौंने व्यवस्थाओं को सुलभ करने में अपने हसमुख शालीन व्यवहार से उल्लेखनीय कार्य किया।

12. महोत्सव के प्रचार–प्रसार हेतु सम्पूर्ण देशभर से मीडिया को आमंत्रित किया गया। जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया भी सम्मिलित रहा, इलेक्ट्रानिक, टी.वी., प्रिंट मीडिया, न्यूज एजेन्सी के माध्यम से श्रवणबेलगोला को आम जनमान तक पहुँचाया गया जिसमें प्रचार उपसमिति के अध्यक्ष व टाइम्स ऑफ इण्डिया के श्री पुनीत जैन, श्री स्वराज जैन दिल्ली, श्री पी.व्हाय.राजेन्द्रकुमार ने प्रमुख भूमिका निभाई। जैन मिडिया को मंगल कलश न्यूज डेस्क प्रभारी अनुपमा राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद ने समाचार उपलब्ध कराये। सम्पूर्ण देश के मीडिया ने महामस्तकाभिषेक को जन–जन तक पहुँचाया।

13. **महामस्तकाभिषेक में देश के 1588 पिच्छीधारी संतो में से 380 पिच्छीधारी संत पहुँचे जो अभी तक के महामस्तकाभिषेक का एक रिकार्ड है इतनी बड़ी संख्या में साधु अभी तक नहीं पहुँचे थे। मुनिश्री विश्ववीरसागरजी के अनुसार 106 आचार्यों में से 28 आचार्य, 1 बालाचार्य, 1 एलाचार्य, 4 उपाध्याय, 120 दिगम्बर मुनिराज, 12 गणिनी आर्यिका, 107 आर्यिका माताजी, 3 ऐलकजी, 43 क्षुल्लकजी, 54 क्षुल्लिकाएँ उपस्थित हुई।**

14. सभी के प्रवास के लिए त्यागी नगर, माताजी नगर बनाए गए थे जो बहुत ही उच्चस्तरीय थे, विशाल त्यागी नगर में ही आहार हेतु चौके व समवशरण मंदिर, प्रतिक्रमण हॉल, अस्पताल, त्यागीव्रती भोजनशाला सहित अनेक उपक्रम सुन्दर व शानदार तरीके से निर्मित किये गए थे।

15. देश की प्रमुख आचार्य परम्परा चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी दक्षिण, आचार्य आदिसागरजी अंकलीकर, आचार्य शांतिसागरजी छाणी, सहित समस्त आचार्य परम्परा के सभी साधु पंथ–ग्रंथ–संत के पूर्वाग्रह के बिना उपस्थित हुए और महोत्सव को यशस्वी बनाया।

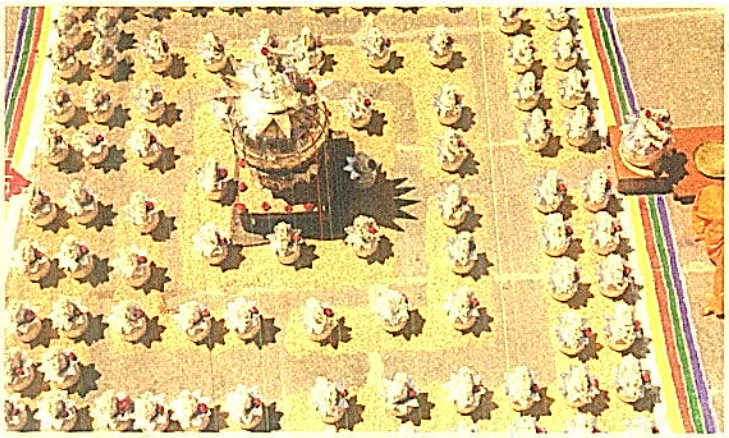

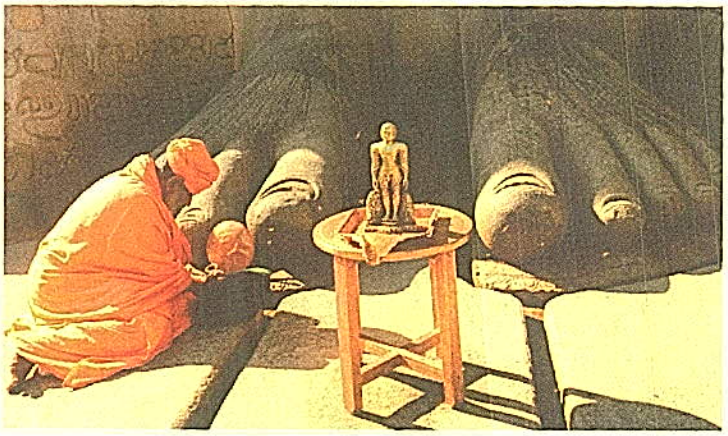

16. पूज्य स्वामीजी प्रतिदिन सभी संतों की कुशलता, साता व रत्नत्रय कुशलता के साथ सम्पूर्ण व्यवस्थाओं की जानकारी लेते रहे।

17. महामस्तकाभिषेक के निमित्त 2017 के चातुर्मास हेतु लगभग 85 साधुओं ने आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज के सान्निध्य में श्रवणबेलगोला में चातुर्मास किए। समस्त आचार्य मुनिराज जब सामूहिक प्रतिक्रमण, आहारचर्या आदि के लिए निकलते थे तो अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित होता था।

18. चातुर्मास काल में अनेक मण्डल विधान भव्य स्तर पर आयोजित हुए अनेक श्रद्धालुओं ने अनुपम भक्ति कर चातुर्मास को स्वर्णिम बनाया। चातुर्मास में मण्डल विधान पूजा कार्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित कुमुदचंद्र सोनी अजमेर ने सम्पन्न कराये।

19. महामस्तकाभिषेक व दर्शकों के लिए 5000 श्रद्धालुओं की क्षमता वाला विशाल स्कैंफोल्डिंग मंच 12 करोड़ की लागत से बनवाया गया जो जर्मन तकनीक से निर्मित था बहुत मजबूत व सुन्दरता लिए हुए था। जिसका निर्माण जर्मन की लेहर कम्पनी ने किया उसमें 350 टन लोहा लगाया गया। इसमें वेज लॉक तकनीक का उपयोग हुआ, मंच के निर्माण में पाँच माह का समय के साथ सैंकड़ो इंजीनियर, मजदूरों की टीम लगी रही।

20. सम्पूर्ण श्रवणबेलगोला, विंध्यगिरि व चन्द्रगिरि पहाड़ी पर सुन्दर रंगीन दीपालंकार (लाईटिंग) की गई थी जो श्रद्धालुओं को सहज रूप से आकर्षित कर रही थी। प्रतिमा के सामने की गई लाइटिंग से विभिन्न रंगो के बाहुबली स्वामी दिखाई दे रहे थे।

21. 7 फरवरी को हुए उद्घाटन समारोह में भारतीय गणराज्य के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने कहा कि **'अहिंसा का भाव भगवान बाहुबली के मुखमण्डल पर दिखाई देता है'** उन्हौंने आचार्यश्री भद्रबाहु, चन्द्रगुप्त मौर्य की संल्लेखना समाधि का भी उल्लेख किया। आचार्य वर्द्धमानसागरजी ने कहा कि **अहिंसक युद्ध के जन्मदाता है बाहुबली स्वामी।** पूज्य स्वामीजी ने कहा कि **'महोत्सव का उद्घाटन करना राष्ट्रपतिजी का अधिकार है'।** राजर्षि पद्म विभूषण श्री डी. वीरेन्द्र हेगड़ेजी ने कहा कि **जैन समाज प्रतिदिन विश्वशांति के लिए कामना करता है।** मुख्यमंत्री श्री सिद्धारमैय्या ने कहा कि **'यह हमारा सौभाग्य है कि हमें यह अवसर मिला है।'**

22. 8 फरवरी को गर्भकल्याणक की क्रियाएँ संस्कारशाला में प्रारम्भ हुई। विशाल संस्कारशाला में प्रमुख प्रतिष्ठाचार्य संहितासूरि श्री हसमुख जैन नंदनवन, पंडित कुमुदचंद सोनी अजमेर, पंडित ऋषभसेन उपाध्ये मालेगांव, पंडित आदिनाथ सुकुमार उपाध्ये सांगली, पंडित चन्द्रकांत इण्डी, पंडित आनंद उपाध्ये सउदी, डी.पार्श्वनाथ शास्त्री, एस.पी. उदयकुमार, एस.डी.नंदकुमार श्रवणबेलगोला के साथ पंडित भागचंद जैन नंदनवन, पंडित आनंदप्रकाश कोलकाता, पंडित अजितकुमार दिल्ली, पंडित विनोद पगारिया सागवाड़ा सहित अनेक प्रतिष्ठाचार्यों की टीम ने विधि–विधान मंत्रोच्चार किये। संगीतकार श्री रामकुमार जैन ने स्वर देकर सार्थकता प्रदान की।

23. 9 फरवरी को पंचकल्याणक में जन्माभिषेक महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर कर्नाटक राज्य के प्रत्येक जिले से सभी महिला मण्डल अपनी वेशभूषा में सम्मिलित हुए, अद्भुत नजारा था। 108 नगाड़े, 108 शंख, 108 तुरा.., 108 घंटिया, 1008 धर्मध्वजा, हर हाथ में पंचरंगी ध्वज 8 वर्ष से 80 वर्ष तक की महिलाएँ लेकर चल रही थी। हर कोई उत्साह से 'जय गोम्मटेशा' व कन्नड़ में बाहुबली स्तुति गा रहे थे। चार किलोमीटर लम्बे जुलूस में 12000 महिला मण्डल की सदस्य अपने–अपने ड्रेस कोड में सम्मिलित हुई। पूज्य स्वामीजी ने बाहुबली पोलेटेक्निक कॉलेज से सभी को श्रीफल प्रदान कर रवाना किया। ट्राली पर लकड़ी से बने दो हाथी अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रहे थे। महिला मण्डल 37 तरह के परिधान धारण किये थे। सौधर्म इन्द्रश्री भागचंद–सुनीतादेवी चूड़ीवाल गोहाटी भगवान आदिनाथजी की प्रतिमा के साथ सुमेरू पर्वतनुमा पाण्डुकशिला पर पहुँचे जहाँ उत्साहपूर्वक जन्माभिषेक सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि अंतिम बार जन्म लेने वालों का ही जन्माभिषेक होता है।

24. 10 फरवरी को राज्याभिषेक के अवसर पर उपराष्ट्रपति श्री एम.वेंकैय्या नायडू पहुँचे उन्हौंने राज्याभिषेक किया और कहा कि **"जियो और जीने दो से बड़ा कोई सन्देश नहीं हो सकता।"**

25. केन्द्रीय मंत्री श्री अनंतकुमार ने कहा कि **विश्व को बाहुबली टेक्नालॉजी की आवश्यकता है।** पूज्य भट्टारक स्वामीजी की प्रेरणा से संचालित प्राकृत संस्थान को देश का पहला प्राकृत विश्वविद्यालय बनाने की घोषणा की।

26. कर्नाटक के राज्यपाल श्री वजूभाई वाला ने जैन समाज को सर्वाधिक दान करने वाला समाज बताया व

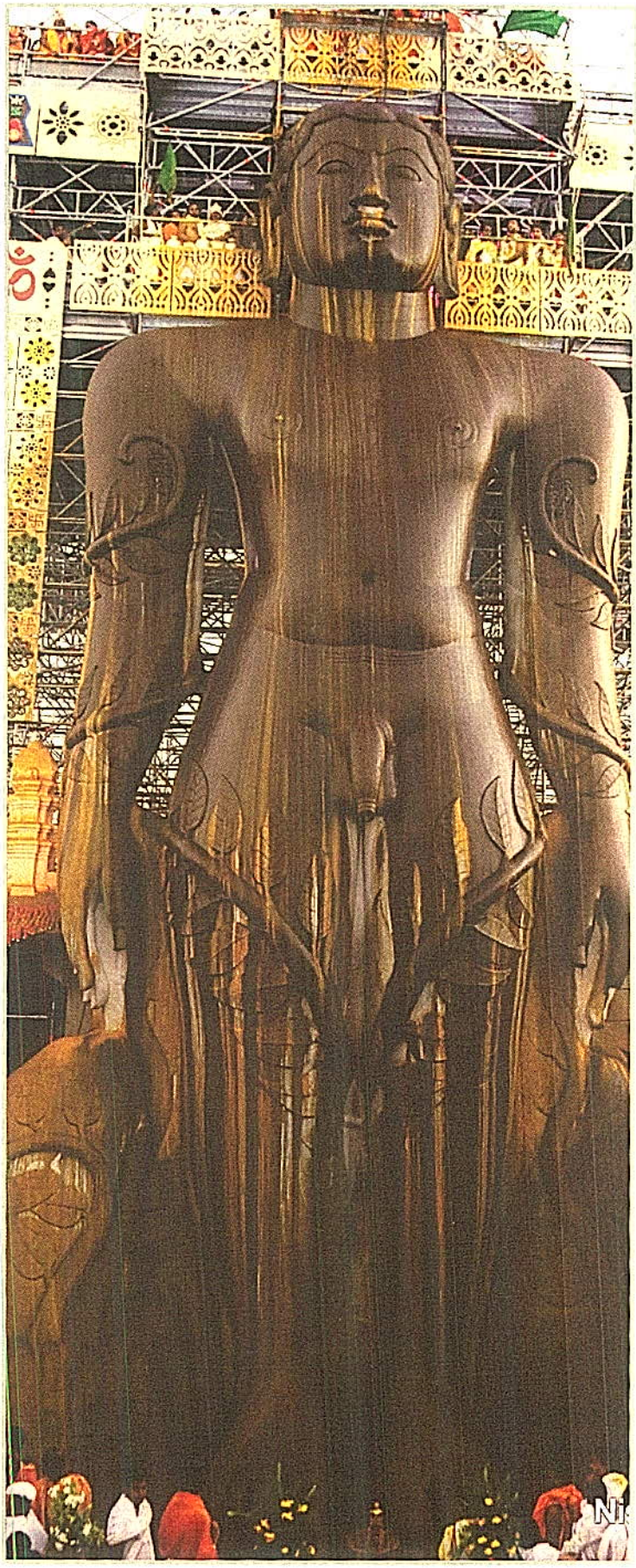

उपस्थिजनों से तीन बार गोम्मटेश्वर बाहुबली स्वामी की जय–जयकार कराई।

27. पूज्य भट्टारक स्वामीजी ने श्री नायडू की प्रशंसा करते हुए उन्हें संस्कृति का सेवक बताया व केन्द्रिय मंत्री श्री अनंतकुमार के सहयोग की प्रशंसा की।

28. उपराष्ट्रपति श्री नायडू ने भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली व महोत्सव समिति के संयुक्त प्रयासों से प्रकाशित 108 पुस्तकों का लोकार्पण किया। श्रुत साहित्य प्रकाशन के तहत यह अक्षराभिषेक किया गया। प्रो. वीरसागर शास्त्री दिल्ली ने प्रकाशन के बारे में अवगत कराया।

29. महोत्सव में सम्मिलित होने स्पेशल हवाईजहाज दिल्ली से आया वहीं स्पेशल ट्रेने गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, राजस्थान से पहुंची । म.प्र. व छत्तीसगढ़ सरकार ने भी सहयोग किया । सभी ट्रेनों पर पूज्य स्वामीजी व महोत्सव समिति के पदाधिकारी यात्रियों के स्वागत के लिए वाद्य यंत्रों के साथ पहुंचे ।

30. डिप्टी कमीश्नर रोहिणी सिंदूरी व एस.पी. राहुल शाहपुर बाड़े ने महामस्तकाभिषेक के पूर्व मंच की समीक्षा की व मीडिया व उपस्थित पदाधिकारियों को बताया कि मंच की क्षमता कितनी है।

31. पंचकल्याणक समिति अध्यक्ष श्री कमल निशी ठोलिया चैन्नई द्वारा स्वर्ण रथ भेंट किया जो अत्यन्त दर्शनीय है। श्री ठोलिया की अध्यक्षता में पंचकल्याणक कार्य सुव्यवस्थित तरीके से सम्पन्न हुआ।

32. 15 फरवरी 2018 का दिन मृत्यु महोत्सव का रहा। आचार्यश्री वासूपूज्यसागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री श्रेयसागरजी महाराज की 1.45 बजे समाधि हो गई। उनका अंतिम संस्कार करके लौटे ही थे कि आचार्य पद्मनंदीजी के शिष्य मुनिश्री अचलनंदीजी महाराज की सायं 5.40 बजे समाधि हो गई। मुनिश्री श्रेयसागरजी आचार्य वासूपूज्यसागरजी की गृहस्थावस्था के भाई थे। दोनों की समाधि में उपस्थित 350 से अधिक साधुओं सहित हजारों श्रावकों ने भाग लिया।

33. रात्रि में युवा भजन गायक रूपेश जैन व प्रशांत जैन ने दो दिनों तक स्वरचित व परम्परागत भजन प्रस्तुत कर समां बांधा। गायक अवशेष जैन ने भी भजन प्रस्तुत किए।

34. रात्रि में पंचकल्याणक के पात्रों द्वारा प्रस्तुति व कन्नड़ भाषा में कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

35. 16 फरवरी को प्रातःकाल चामुण्डराय मण्डप में भव्य दीक्षा समारोह हुआ जिसमें आचार्यश्री देवनंदीजी, आचार्य विभवसागरजी, आचार्य जिनसेनजी, आचार्य गुप्तिनंदीजी, आर्यिका अर्हमश्री माताजी ने 10 दीक्षाएँ प्रदान की।

36. 16 फरवरी को महामस्तकाभिषेक के पूर्व वृहद महा शोभायात्रा निकाली गई जो श्रवणबेलगोला के इतिहास में पहली बार निकली। 6 किलोमीटर लम्बी महाशोभायात्रा में एक लाख श्रद्धालुओं के साथ 24 तीर्थंकर भगवान की पालकी, धवला ग्रंथों की पालकी, दो सौ बेण्ड, 124 विभिन्न नृत्य समूह, 24 कला तंत्र सहित चालीस फीट लम्बे ट्रालर पर चलित झॉकियाँ निकली जो अभूतपूर्व थीं। शोभायात्रा ने विंध्यगिरि पर्वत के परिक्रमा पथ पर एक माला पहना दी हो ऐसा दृश्य उपस्थित कराया, अत्यंत गरिमामयी अनुशासित वृहद महायात्रा अत्यन्त शोभायमान थी। जय धवला–10 का मराठी अनुवाद का लोकार्पण हुआ।

37. सभी शोभायात्रा के दृश्यों को अपने कैमरे में कैद कर रहे थे, वहीं हम लोग विद्यानंद निलय पर उक्त दृश्यों का आनंद ले रहे थे साथ ही वहीं पद्मविभूषण धर्माधिकारी श्री डी.वीरेन्द्र हेगड़े व उनके लघु भ्राता श्री सुरेन्द्र हेगड़े सपत्नीक उन दृश्यों को अपने कैमरों में कैद कर रहे थे।

38. जुलूस के स्वागत में सारे रास्ते में मट्ठा (छाछ) की व्यवस्था की गई थी। आम जनमानस के अनुसार महायात्रा अद्भुत, अकल्पनीय, अभूतपूर्व थी जिसमें सारी संस्कृतियों ने अपने अनुसार गोम्मटेश्वर को नमन किया।

39. 17 फरवरी 2018 का दिन ऐतिहासिक था, गोम्मटेश्वर के यहाँ जाने हेतु पास की आवश्यकता थी। पास की संख्या सीमित थी। देर रात तक पासों का वितरण हुआ। श्रवणबेलगोला में उपस्थित प्रत्येक श्रद्धालु उस दृश्य का साक्षी बनकर अपने हृदय कमल पर उस पल को कैद करना चाहता था। जब गोम्मटेश का प्रथम अभिषेक हो।

40. प्रातःकाल से ही आमजनों का उत्साह देखते ही बनता था, पूज्य भट्टारक स्वामीजी प्रातःकाल ही आवश्यक क्रियाओं के लिए विंध्यगिरि पर चढ़ गए थे। चार गेट बनाये गए थे पुलिस का जबरदस्त इंतजाम था, परिंदा भी पर नहीं मार सकता था। बिना पास के किसी भी हालत में प्रवेश नहीं दिया गया।

41. पास की प्रिंटिंग रात्रि में ही होती थी जिनपर विशेष बारकोड डाले गए थे, जिन्हें तीन बार चेक कराना होता था, बारकोड के कारण कोई पास का डुप्लीकेट नहीं बना सकता था। उक्त व्यवस्था शानदार थी जिससे भगवान बाहुबली के पास सीमित संख्या में ही श्रद्धालु पहुँचे। बाकी ने नीचे स्क्रीन पर ही नजारे देखें।

42. 380 पिच्छीधारी संत, हजारों नयन करोड़ो लोगों की भावना टी.वी. पर अपने गोम्मटेश्वर पर प्रथम कलश देखने को अपलक निहार रही थी। परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने घोषणा की

प्रथम कलश आर.के.मार्बल पाटनी परिवार करेगा, सभी में हर्ष की लहर छा गई। सूर्य अपनी अनंत रश्मियों से गोम्मटेश का अभिषेक कर रहा था, वहीं 2.35 बजे आर.के. मार्बल पाटनी परिवार ने गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली पर जलधारा छोड़ी सम्पूर्ण देश में आनंद की लहर व्याप्त हो गई। गोम्मटेश की जय–जयकार के बीच प्रथम अभिषेक सम्पन्न हुआ जो इतिहास में दर्ज हो गया। पाटनी परिवार के नाम की चर्चा हर कोने में हो गई। आगामी 12 वर्ष तक प्रथम कलश की स्मृति सबके मन में समा गई। हमारा यह सौभाग्य था कि हम भी इस अवसर पर बहुत नजदीक से उपस्थित थे।

43. उपरांत नारियल रस, इक्षु रस, दुग्ध, श्वेत कल्क चूर्ण, हरित कल्क चूर्ण, सर्वोषधि, लाल चंदन, श्रीगंध, चंदन, अष्टगंध, केशर वृष्टि, स्वर्ण–रजत पुष्प वृष्टि, जयमाला शांतिधारा हुई। जो अत्यन्त दर्शनीय थी। पंचामृत अभिषेक के साथ लाईटिंग सिस्टम से भी दृश्य प्रभावी था जो सबके हृदय में स्थापित हो गया।

44. महामस्तकाभिषेक से पूर्व सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम व वाद्ययंत्रों के माध्यम से प्रस्तुतियाँ हुई। आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी, आचार्यश्री पुष्पदंतसागरजी महाराज ने सभी को आशीर्वचन दिये।

45. महामस्तकाभिषेक में नवरत्न कलश, रत्न कलश, स्वर्ण, दिव्य, रजत, ताम्र, कास्य, शुभ मंगल, मंगल कलश के साथ गुल्लिका अज्जी कलश भी हुए।

46. प्रथम महामस्तकाभिषेक के उपरांत भक्तों के आनंद का पार नहीं था सब अपने आपको सौभाग्यशाली मान रहे थे, क्योंकि सौभाग्य ने उन्हें बुला लिया था।

47. महामस्तकाभिषेक प्रारम्भ होने के तीसरे दिवस देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी श्रवणबेलगोला पहुँचे। उन्होंने सभी का आशीर्वाद ग्रहण किया। वहीं आचार्य नेमिचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्ती द्वारा गोम्मटेश की स्तुति प्राकृत में लिपिबद्ध पंक्तियाँ सुनाकर सबका मन मोह लिया।

48. पूज्य भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि मोदीजी के व्यक्तित्व में उनकी माँ का अभूतपूर्व योगदान है। पूज्य स्वामीजी ने श्री मोदी को स्वर्ण ध्वजा उनकी माताजी के लिए गंधोदक स्वर्ण कलश में रखकर भेंट किया।

49. प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने भाषण में पूज्य स्वामीजी की सदाशयता का जिक्र किया व उनका आभार माना। श्रीमोदी ने पूज्य स्वामीजी के कार्यों को अनेक बार स्मरण कर उन्हें नमन भी किया। दक्षिण भारत की शानदार परम्परा अनुरूप उनका भव्य स्वागत गौरवाभिनंदन किया गया।

50. गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी का महामस्तकाभिषेक 26 फरवरी को औपचारिक रूप से समाप्त हो गया, **लेकिन अभी जून 2018 तक प्रतिदिन जारी रहेगा वहीं विशेष तिथि व रविवार को पंचामृत अभिषेक होगा।**

51. महोत्सव का सीधा प्रसारण दूरदर्शन से हुआ वहीं ऑखों देखा हाल आकाशवाणी से सम्पूर्ण देश में हुआ। आकाशवाणी के लिए हिन्दी कामेन्ट्री का कार्य प्रो. नलिन के. शास्त्री, बोधगया ने अपनी सम्मोहन वाणी में किया। देश–विदेश के अनेक टी.वी. चेनल, पारस, जिनवाणी आदि पर भी नियमित प्रसारण हुआ।

52. महोत्सव के दौरान संचालित भोजनशालाएँ जो निःशुल्क संचालित थी। उनमें श्रद्धालुओं ने सामग्री भिजवाई। राजस्थान से चली अन्न मुहिम में 800 टन गेहूँ आया वहीं तेल–घी–शक्कर, मसाले आदि सामग्री सम्पूर्ण देशवासियों ने भेजी।

53. वीर सेवा दल, वीर सेवा मंच, सन्मति संस्कार मंच, चंदा बाबा ग्रुप आदि स्वयं सेवक संगठनों के साथ भारतीय स्काउट गाइड के बच्चों ने अभूतपूर्व सेवा का कार्य किया। स्वयं सेवकों का कार्य स्तुत्य है, व्यवस्था – सफाई – सेवा – स्वच्छता के साथ विनम्रता के साथ उन्होंने अपने कार्य को अंजाम दिया। लगभग दस हजार से अधिक स्वयं सेवक 24 घण्टे सेवा कार्यों में अग्रणी रहे।

54. विविधता में एकता भारत की विशेषता है। मंच पर कन्नड़–हिन्दी–मराठी–अंग्रेजी आदि भाषाओं में निरंतर कार्यक्रम आयोजित हुए जो अन्तर्राष्ट्रीय थे। देश–विदेश के अनेक कलाकारों के साथ कर्नाटक संस्कृति के अनेक लोक कलाकार, अभिनेताओं ने प्रस्तुति दी।

55. अप्रवासी भारतीय (NRI) व विदेशियों को आमंत्रित करने कमेटी अध्यक्ष श्री निर्मल सेठी, श्री एम.के.जैन, श्री अनिल जैन कनाड़ा, श्री तनसुख सालगिया कोलम्बस, श्री चन्द्रकांत भोजे पाटिल आदि ने विदेशियों के साथ अच्छा समन्वय स्थापित किया।

56. त्यागी नगर में आहारचर्या के दौरान जो दृश्य उपस्थित होता था वह चतुर्थकालीन व अभूतपूर्व था। वहीं त्यागी समिति ने पूज्य स्वामीजी के निर्देशन में चौकों की व्यवस्था में नये बर्तन, मिक्सर, गैस चूल्हा आदि की पर्याप्त एवं नई व्यवस्था की थी। फल–दूध–सब्जी आदि शुद्ध भोजन सामग्री की माकूल व्यवस्था थी।

57. सारे आयोजन में पूज्य स्वामीजी ने जितने भी निर्णय लिए उन्हें क्रियान्वित करने में महोत्सव की प्रमुख रही दो महिलाएँ श्रीमती सरिता जैन व श्रीमती रोहिणी सिंदूरी ने अपने अधीनस्थों के साथ, एक ने समाज, एक ने

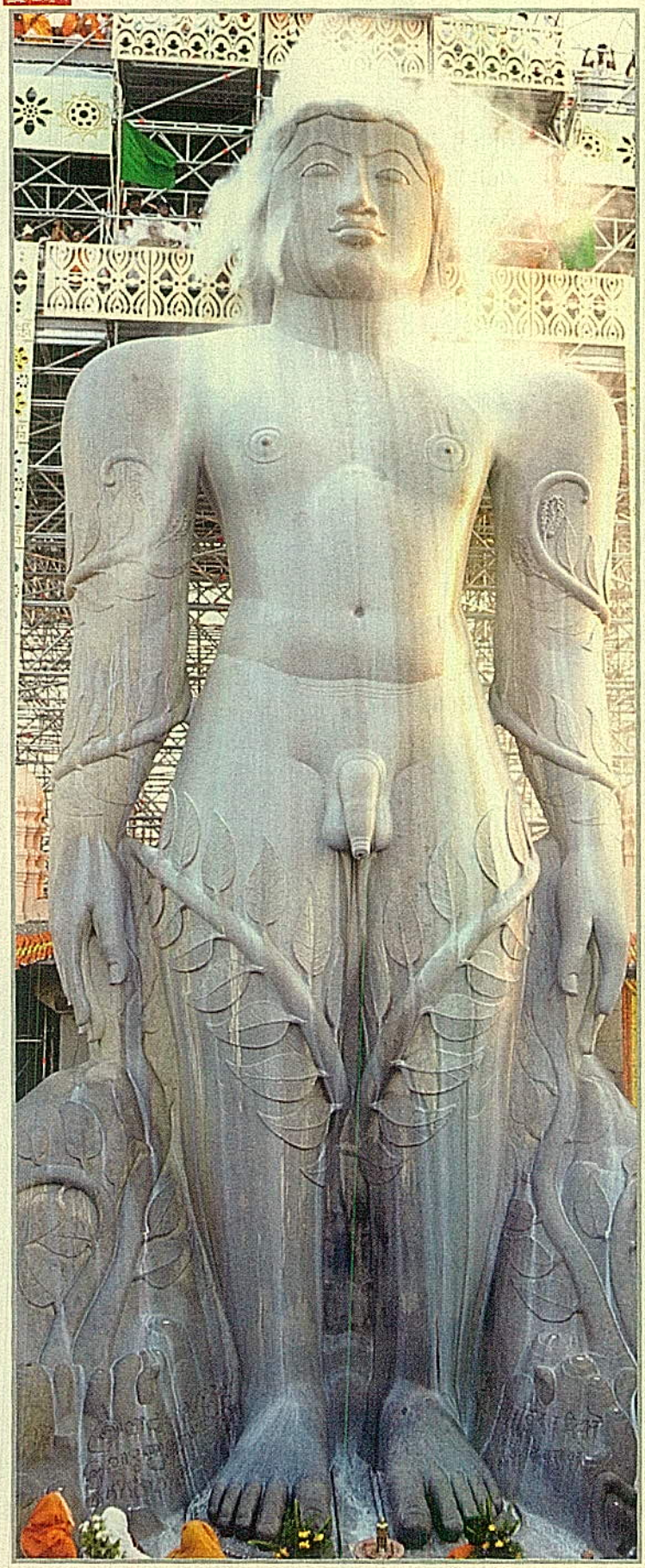

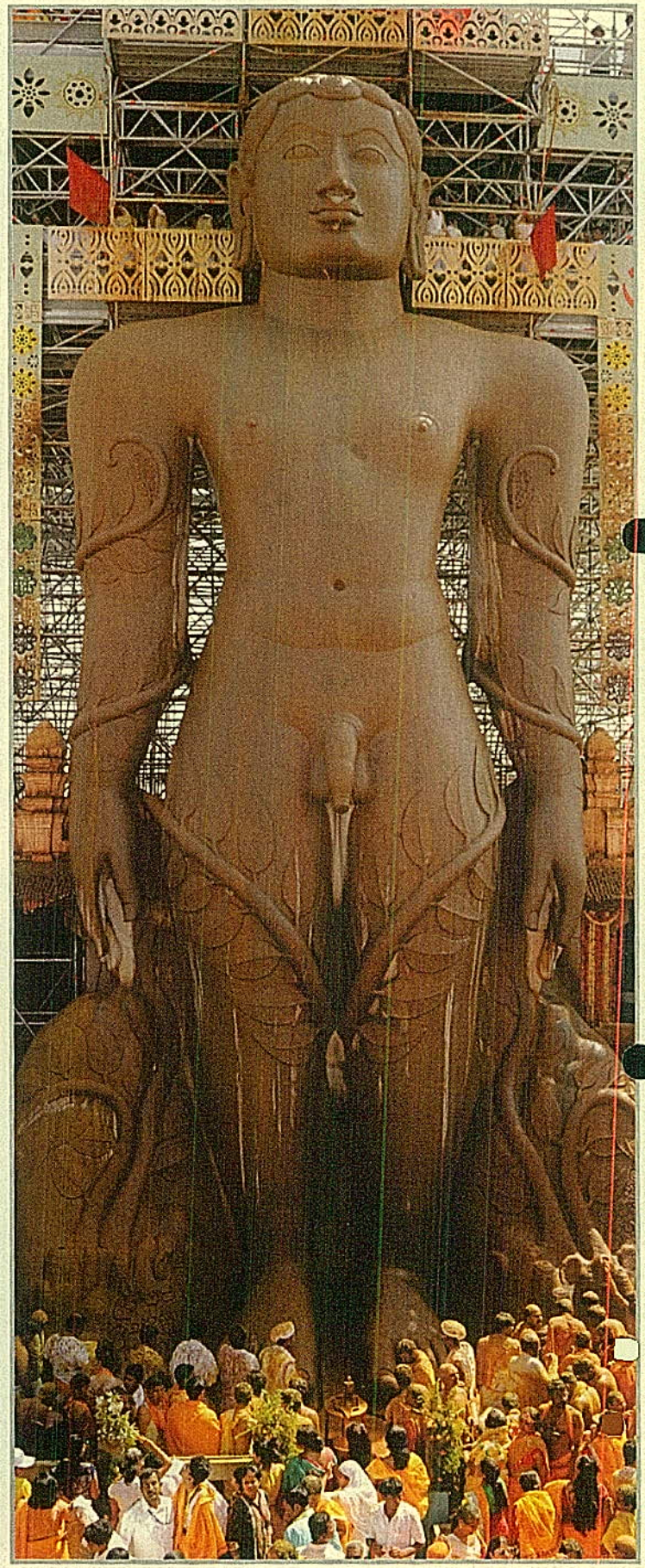

प्रशासन–शासन के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

58. गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी लोक पूज्य है यह नजारा देखने को मिला। 17 फरवरी को 6 किलोमीटर लम्बी लाईन में श्रद्धा–भक्ति के अनुशासन के साथ जैनेत्तर बंधुओं ने गोम्मटेश के दर्शन कर लोकपूज्य होने व जाति–धर्म–पंथ–ग्रंथ–संत सबसे पृथक कर केवल अपनी श्रद्धा के शिखर पर स्थापित किया जो सम्पूर्ण देश के लिए अनुकरणीय व प्रेरणादायी है।

59. 16 फरवरी को निकली झांकियों में परमपूज्य भट्टारक स्वामीजी की झांकियां निकाली गई जिसमें उनके निकट सहयोगी श्री पारस को भी दर्शाया गया जो पूज्य स्वामीजी के इशारे में ही सारे कार्य सम्पन्न करते हैं। छोटे कद के पारसजी अत्यन्त कम उम्र में अति सक्रिय व स्वामीजी के साथ हमेशा धैर्यपूर्वक सहयोगी रहे हैं।

60. एक वर्ष से जारी सारे आयोजनों में कन्नड़, प्राकृत में गोम्मटेश स्तुति सुमधुर कंठ के धनी दम्पत्ति सौम्या–सर्वेश जैन श्रवणबेलगोला ने प्रस्तुत कर सबका मन मोहा। वहीं श्रवणबेलगोला की महिला समाज ने प्रत्येक आयोजन में ड्रेस कोड के साथ सम्मिलित होकर आयोजन की गरिमा बढ़ाई।

61. बहुत बड़े इलाके में फैले मेला स्थल व आवास स्थलों को कनेक्ट करने हेतु प्रति 2 मिनिट में निःशुल्क रूप से मिनी बस, बस व इलेक्ट्रानिक ऑटो की व्यवस्थाएँ निःशुल्क रूप से उपलब्ध थीं।

62. प्रत्येक नगर में कर्नाटक सरकार द्वारा चिकित्सा सुविधा हेतु अस्पताल, फायर ब्रिगेड, सहायता की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई।

63. त्यागी नगर में 380 साधु जब एकत्रित होकर सामूहिक प्रतिक्रमण, धार्मिक चर्या करते थे तब उपस्थित दृश्य की मनमोहकता की कल्पना को शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता ।

64. मंच एवं महामस्तकाभिषेक के दौरान पूज्य स्वामीजी के शिष्य भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति स्वामी हुम्मचा, भट्टारक श्री भुवनकीर्तिजी कनकगिरि ने सक्रियता से व्यवस्थाओं को सम्हाला। देश के प्रमुख विद्वानों ने भी महोत्सव में सक्रिय सहभागिता दर्ज कराई।

65. चर्या शिरोमणि आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज के भक्तों ने 122 किलो का ताम्रग्रंथ भेंट किया जिसमें निजानुभव तरंगिणी के 2300 श्लोक है। प्राकृत अनुवाद मुनिश्री आदित्यसागरजी महाराज ने किया है। ग्रंथ प्राकृत विद्यापीठ में स्थापित किया गया है जो दर्शनीय है।

66. महामस्तकाभिषेक में जहाँ सब अपनी–अपनी सेवाएँ तन–मन–धन से प्रदान कर रहे थे इसी दौरान बेंगलूरू व मैसूर रेल्वे स्टेशन पर श्रवणबेलगोला जाने वाले यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन पार्सल व्यवस्था व उनकी आत्मीयता अनुकरणीय थी।

67. प्रदर्शनी स्थल पर विशाल प्रदर्शनियाँ लगाई गई, जिसमें भारतीवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सारे तीर्थों की दर्शनीय प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें प्रसिद्ध चित्रकार श्री प्रशांत शाह द्वारा अपनी कल्पनाओं के साथ बनाई गई पेंटिंग्स मनमोहक थी। तीर्थक्षेत्र कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता जैन, महामंत्री श्री संतोष (पेंढ़ारी) जैन के निर्देशन में कमेटी के सेवाभावी मैनेजर श्री उमानाथ दुबेजी ने भी प्रदर्शनी को दर्शनीय बनाया।

68. कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी भी पेंटिंग्स व कलाकारी का अद्भुत नमूना था, जहाँ श्री प्रशांत शाह, श्री निखिल भाई मेहता आदि ने सक्रियता के साथ उल्लेखनीय जानकारी प्रदान की।

69. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा के द्वारा प्राचीन तीर्थों की विशाल प्रदर्शनी से सम्पूर्ण देश–विदेश के जैन तीर्थों की जानकारी मिली। महासभा के ऊर्जावान अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार सेठी व उनकी टीम का श्रम स्तुत्य है।

70. संत शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्ण जयंती वर्ष के दौरान लगाया गया उनका जीवनवृत्त अवलोकनीय था वहीं आचार्यश्री की प्रेरणा से संचालित हथकरघा उद्योग की वस्तुएँ भी आमजनों को आकर्षित कर रही थी।

71. मालवा प्रांतिक सभा के कार्यों व उज्जैन में निर्मित प्राचीन संग्रहालय की प्रदर्शनी भी श्री प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल के नेतृत्व में लगाई गई जो उज्जैन संग्रहालय को देखने की प्रेरणा प्रदान करती है।

72. आर्ट फेस्टिवल के सुन्दर चित्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश आदि की हेंडलूम साड़ियाँ व कर्नाटक सरकार के कार्यो की प्रदर्शनी भी आकर्षक थी।

73. कर्नाटक सरकार द्वारा बनाया गया प्रवेश द्वार विशाल एवं आकर्षक था।

74. कर्नाटक की मूलभाषा कन्नड़ है। आयोजन वहां होने से कन्नड़ भाषियों की संख्या अधिक थी वहीं उत्तर भारतीय हिन्दी भाषी भी कम नहीं थे, सभी की भावनायें बाहुबली के प्रति थी, भावनाओं की प्रबलता व श्रद्धा के आगे भाषा भी समर्पित थी, अतः दोनों भाषाओं के श्रद्धालु भावनाओं के

माध्यम से एक दूसरे के आशय को समझ जाते थे।

75. कलश आबंटन उपसमिति के अध्यक्ष श्री राजकुमार सेठी कोलकाता उम्रदराज होने के बावजूद सक्रिय रहे। उन्होंने अपने कर्मठ साथी श्री अशोक सेठी, जमनालाल हपावत, के.के.जैन, हसमुख गाँधी, अशोक दोशी आदि के माध्यम से सम्पूर्ण देश के हजारों संयोजकों के साथ कलश आबंटन कार्य को सुचारू रूप से सम्पन्न कराया।

76. मुख्य कमेटी के साथ 41 उपसमितियां उनके हजारों कार्यकर्ता जिनके नाम उल्लेख करना सम्भव नहीं है सभी ने दिगम्बर जगत की कीर्ति के उत्सव को सफलता के शिखर तक पहुँचाया जो स्तुत्य है।

77. आदि कवि पंप ग्रंथालय में विशाल मीडिया सेंटर बनाया गया था, जहां प्रेस कान्फ्रेंस आदि की व्यवस्थाओं के साथ कम्प्यूटर आदि सारी सुविधाएँ मौजूद थी। कर्नाटक जनसम्पर्क के डिप्टी डायरेक्टर श्री विनोद चन्द्रा व श्री मदन गोड़ा की टीम व्यवस्थाओं को सुलभ करा रही थी।

78. कार्यक्रम हेतु बनाया गया विशाल मंच कर्नाटक की शिल्पकारी का नमूना था, जो अन्दर–बाहर दोनों ओर कर्नाटक के शिल्प वैभव व पुरातत्व को प्रदर्शित कर रहा था।

79. महामस्तकाभिषेक हेतु कश्मीर से केशर व आंध्रप्रदेश से चंदन बुलाया गया था।

80. पूज्य भट्टारक स्वामीजी के साथ वहाँ उपस्थित सभी आचार्यों–मुनिराजों ने महामस्तकाभिषेक की स्मृति हेतु 25 फरवरी को णमोकार दिवस मनाने की घोषणा की। तपोभूमि प्रणेता मुनिश्री प्रज्ञासागरजी ने उक्त प्रस्ताव रखा व समस्त आचार्यो व स्वामीजी ने इस प्रस्ताव की अनुमोदना की।

81. 25 फरवरी को आए भारत सरकार के गृहमंत्री श्री राजनाथसिंह ने जैनधर्म को भारतीय संस्कृति का अनमोल रत्न बताया व कहा कि एक बार में मेरा मन नहीं भरा है दोबारा आऊँगा और पैदल जाकर भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक करूंगा।

82. महोत्सव स्थल के नजदीक नांदेड़ के कासलीवाल परिवार ने मिनरल वॉटर की बॉटल निःशुल्क उपलब्ध कराई साथ ही महामस्तकाभिषेक हेतु 25 क्विंटल हल्दी भी अपनी ओर से उपलब्ध कराई।

83. महामस्तकाभिषेक को देशभर के इलेक्ट्रानिक प्रिंट मीडिया ने प्रमुख खबर बनाई वहीं जैन मीडिया ने एक वर्ष तक अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए गोम्मटेश भगवान बाहुबली स्वामी पर भरपूर सामग्री प्रकाशित की। लगभग सभी जैन पत्र–पत्रिकाओं ने अपने सामर्थ्य अनुरूप विशेषांको का सुन्दर प्रकाशन कर भगवान बाहुबली के प्रति अपनी श्रद्धा की अभिवंदना की।

84. समस्त आचार्यों मुनिराजों के साथ समन्वय उनकी व्यवस्थाओं को संपन्न कराने में युवा आचार्य श्री चंद्रप्रभ सागरजी ने उल्लेखनीय कार्य किया ।

85. महामस्तकाभिषेक को देश में लाइव देख सकें इस हेतु काल्पनिक टेक्नोलॉजी कम्पनी ने वी आर डिवोरी एप बनाया था जो निःशुल्क था।

86. भगवान बाहुबली स्वामी के ऊपर लगाया गया छत्र अत्यंत आकर्षक था। त्रिस्तरीय 15 फीट ऊँचा छत्र जिसकी गोलाई 18 फीट थी, 1250 किलो वजनी इस छत्र को बनाने में चार माह का समय लगा। छत्र अत्यन्त आकर्षक था जो दूर से ही श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

87. महोत्सव के दौरान अनेक पुस्तकों, सी.डी. आदि का विमोचन हुआ। अनेक कार्यकर्ताओं का सम्मान हुआ। मंच संचालन राष्ट्रीय कवि चन्द्रसेन जैन भोपाल, राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद ने किया।

88. 1037 वर्ष प्राचीन प्रतिमा महामस्तकाभिषेक हेतु अभूतपूर्व व्यवस्थाएँ सुलभ हुई। 12 अस्थाई नगर, 17 भोजनशालाएँ लगभग 600 एकड़ जमीन का उपयोग हुआ। 17 से 26 फरवरी 2018 तक 8172 मुख्य कलशकर्ताओं के साथ हजारों कार्यकर्ता, स्वयंसेवक, मीडियाकर्मी, शासन–प्रशासन के सहयोगीजनों ने 20 द्रव्यों से महामस्तकाभिषेक कर अपने आपको धन्य किया। इस महामहोत्सव को लगातार चौथी बार परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने नेतृत्व कर सफल बनाया, वहीं लगातार तीसरी बार आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने प्रमुख सान्निध्य प्रदान किया। लगातार दूसरी बार प्रथम कलश श्री आर.के. मार्बल ग्रुप ने किया । इतिहास में पहली बार किसी भी जैन महाकुंभ में 380 पिच्छीधारी संत उपस्थित हुए, सभी मामलों में अभूतपूर्व इस आयोजन को हर मामले में सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है। महामस्तकाभिषेक अभी जारी है। लोक कल्याण के उद्देश्य से आयोजित इस महापर्व में सभी ने अपनी श्रद्धा का महाअर्घ्य समर्पित कर अपने आप को धन्य किया है।

शेष रही बातें अगले आलेख में उल्लेखित करने का प्रयास करेगें। सभी प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोगियों के आभार के साथ उन नींव के पत्थरों को प्रणाम जिनका उल्लेख मैं नहीं कर पाया उन सभी को प्रणाम निवेदित करता हुआ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

फोटो सौजन्य – निसर्ग नागराज हासन

बाहुबली अष्टक

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

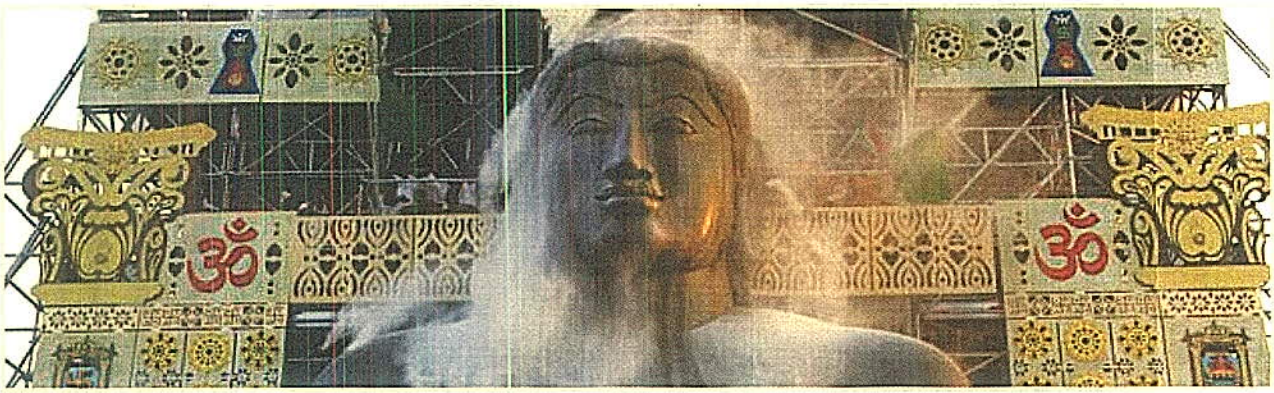

(बसंततिलका छंद)

सिद्धिप्रदं मुनिगणेन्द्र-शतेन्द्रवंद्यं,
कल्पद्रुमं शुभकरं धृतिकीर्तिसद्म।
पापापहं भवभृतां भववार्धिपोत-
मानम्यपादयुगलं पुरुदेवसूनोः।।1।।

सिद्धिप्रद मुनिगण से वंदित सौ इन्द्रों से नित वंदित।
उत्तम कल्पवृक्ष शुभकारी धृति कीर्ति के सदन महित।।
भवभृतजन के पापहरण प्रभु भव जलधि के पोत महान।
वृषभदेवसुत बाहुबली के चरण कमल में करूँ प्रणाम।।1।।

सप्तर्द्धिशालिगणिनां स्तुतिगोचरस्य,
युद्धत्रये विजित-विक्रमचक्रपस्य।
ध्यानैकलीनतनुनिश्चलवत्सरस्य
तस्य प्रभोरहमपि स्तवनं विधास्ये।।2।।

युग्मं

सप्तऋद्धियुत चारज्ञानधर गणधर भी स्तुति करते।
दृष्टि जल्ल औ मल्ल युद्ध में चक्रवर्ती को भी जीते।।
एक वर्ष तक ध्यानलीन प्रभु निश्चल तन से खड़े प्रभो।
ऐसे श्री बाहुबली जिनकी मैं भी स्तुति करूँ अहो।।2।।

हे कामदेव! शुभवर्ण हरित्सुगात्र!
केनोपमां तव करोमि समोऽपि कश्चेत्।।
नूनं भवान् खलु भवादृंश एव लोके।
तृप्यंति नो जनदृंशो मुहुरीक्षमाणाः।।3।।

हे प्रभु कामदेव! अति सुन्दर हरित वर्ण शुभ तनु शोभित।
किससे उपमा करूँ तुम्हारी यदि तुम सम जन हों इस जग।।
निश्चित ही प्रभु तुम सम तुमही इस जग में सुन्दर अतएव।
बार-बार जन के दृग तुमको लखते तृप्त न होते देव।।3।।

ध्यानस्थिते त्वयि विभो! शुकवर्णकांतं,
त्वां वीक्ष्य मुक्तिललना छलतो लतानां।
मन्येऽहमेत्य समवर्णमवेत्य तुष्टां,
आश्लिष्यति स्म रहसि स्थितमत्र मोदात्।।4।।

विभो! ध्यान में लीन आप शुक समान हैं कांति महान।
लता बहाने मुक्ति रमा ही मानों आई निकट सुजान।।
रूप वर्ण तव हरित देख समवर्ण समझ संतुष्ट हुई।
रहसि खड़े प्रभु देख तुम्हें आलिंगन करती मुदित हुई।।4।।

विघ्नौघजित्! मरकताभ! समंततस्त्वां,
संवेष्ट्य भीषणफणा विषदर्पजुष्टाः।
वल्मीकरन्ध्रगतनिर्गतकृष्णनागाः,
दीर्घं त्वदीयपृथुदेहगिरावदीव्यन्।।5।।

हे विघ्नौघविजित्! मरकतमणिदेह! आपके चारों ओर।
वेष्टित करते भीषण फणधर विष से युक्त भयंकर घोर।।
वामी के छिद्रों से निकले काले नाग बहुत दिन तक।
प्रभु के इस विशाल तनु पर्वत ऊपर क्रीड़ा करें मुदित।।5।।

उत्तुंगदेह! भरताधिपजित्! तव प्राक्,
शिष्यो बभूव भरतेश्वरचक्ररत्नं।
रत्नत्रयं पुनरवाप्य सुसिद्धिचक्रं।
मोहैकजित्! त्रिभुवनैकगुरुर्बभूव।।6।।

सवा पाँच सौ धनुष उच्च तनु हे भरताधिपजित योगीश।
भरतचक्रि का चक्ररत्न तव शिष्य बना था सबको जीत।।
पुनः आपने सिद्धिचक्रमय रत्नत्रय को प्राप्त किया।
हे मोहैकविजित! बाहूबलि! त्रिभुवन के गुरु हुये अहा।।6।।

सम्यक्त्वदां प्रतिकृतिं तव ये पृथिव्यां।
निर्मापयंति जिनपुंगव! भक्तिभाजः।।
धन्यास्त एव भुवनत्रयक्षोभकारि।
बध्नंति तीर्थकरपुण्यमहो! किमन्यैः।।7।।

हे जिनपुंगव! भक्तिभाववश इस पृथ्वी पर जो भविजन।
तव मूर्ति सम्यक्त्व प्रदायी निर्मापित करते गुणमणि।।
वे ही मनुज धन्य इस जग में भुवनत्रय में क्षोभकरी।
तीर्थंकर प्रकृति को बांधे अहो! अन्य क्या पुण्यकरी।।7।।

सुज्ञानवीर्य सुखदर्शननान्त्यरूप!
कैवल्यलोचन! विराग! हितानुशास्तः!
हे सिद्धिकांत! जिन! बाहुबलीश! देव!
श्री गोमटेश! तव पादयुगं प्रवन्दे।।8।।

हे प्रभु अनंत दर्शन ज्ञान अनंत सुखमय वीर्य स्वभाव।
वीतराग कैवल्यज्ञानमय लोचनयुत हित अनुशासक!
हे श्री सिद्धिकांत हे भगवन्! बाहुबली स्वामिन्! जिनवर!
हे श्री गोमटेश! तव चरणांबुजको वंदू नित रुचिधर।।8।।

यः पठेत् सततं भक्त्या, पुरुदेवात्मजाष्टकम्।
स्वात्मज्ञानमतिं सिद्धिं, स लभेतापुनर्भवाम्।।9।।

-दोहा-

जो नित भक्ति से पढ़े, भुजबलि अष्टक पाठ।
वे अपुनर्भवसिद्धि को, लहें ज्ञानमति सार्थ।।9।।

When heavens descended on Shravanbelagola

Twelve years is a pretty long time for an event, but when it is as colossal as the Mahamastakabhisheka, it is quite normal. The normally quiet town is now abuzz with activities of all sorts, people moving around the roads, shops packed to the brims with goods, roads brightly lit and the steps to the two hills, Vindhyagiri (Doddabetta or the bigger hill) and Chandragiri (Chikkabetta or the smaller hill) decorated and lit all the way up. Serpentine queues are seen even before the main event begins, to have a glimpse of the massive monolith idol of Bhagwan Bahubali in his Kayotsarga posture with his hands lightly swinging down and a steady gaze somewhere in the infinite sky. Prakrit poems compare his face to the fair moon and his posture akin to the Himalayas. He stands there since 981 when the Ganga General Chavundaraya commissioned the crafting of the idol from an entire mountain fulfilling his mother's wish. This season of the Mahamastakabhisheka was held between 17th and 25th February 2018. The main event was preceded by the Panchkalyan Mahotsav marking the five key stages in the life of every Tirthnkara viz.

Garbha Kalyanak- It is the phase when the soul of the to-be born Tirthankara leaves the past birth and enters the mother's womb. It is his last birth and this conception marks the beginning of a splendid phase to come.

1. **Janma Kalyanak-** the event of his Birth. It is believed that all the Gods and Goddesses celebrate upon the birth of a Tirthankara. Jains believe that Bhagwan Indra performs Pooja of the Tirthankara on Mount Meru on this event.
2. **Diksha Kalyanak-** The event when he accepts monkhood, by giving up all worldly possessions and becomes a monk.
3. **Kevalgyan Kalyanak-** The event when the Tirthankara attains omniscience (Kevala Gyaan). The Tirthankara establishes his sangha. To commemorate this event, Samosharana (congregation of all living beings, including animals, birds who understand the teachings of the Tirthankara) is organized. It is at this place where the Tirthnakara spreads the message.
4. **Moksha Kalyanak-** this is when the Tirthankara leaves the mortal body and attains salvation (liberation from the cycle of birth and death) when he is called a Siddha.

The event was inaugurated by the Hon. President of India, Ramnath Kovind on 7th February, the Hon. Vice President of India Venkaiah Naidu graced the Rajyabhisheka of the Panchkalyan Mahotsav on 10th Februdary while the Prime Minister inaugurated the main Mahamastakabhishek ceremony on 17th February. Home Minister Rajnath Singh made it to grace the valedictory ceremony on 25th February, marking the tradition of national leaders witnessing the event for the past many seasons.

The entire event is organized by the Digambara Jain Matha headed by Jagadguru Karmyogi Swastishri Charukirti Bhattarak Swamiji who is spearheading the event's fourth consecutive season since 1981 along with the state government which has pitched-in in the form of making available infrastructure for the accommodation and transport arrangements, among other things. The devotees throng the mountains for a glimpse of the head anointing ceremony that began with the pouring of the holy water followed by the Panchamrita Abhishek including Sugarcane juice, Saffron water, Tender Coconut water, Milk, Rice Flour, Turmeric, Sandalwood paste and ending with water again, in a ritual called Shantidhara that involves prayer for world peace. It ends with the Pushpavrishti or the offering of fragrant flowers. The first pots of water being poured over the idol almost always brought tears to the eyes of the devotees and the cascading milk and turmeric over the head and the shoulders was a sight one will never forget in life.

The entire celebrations of almost 20 days was an overwhelming experience for many. The Swamiji also ensured that it is not just a religious ceremony but also one that involves culture, knowledge sharing and participation of people from all walks of life. Hence, a good 8 Natio Conferences were organized to facilitate discussions, ranging from the Sanskrit Conference, Prakrit Conference, Youth Conference, Women's conference, Journalists conference, SarvaDharma Conference and the Vidwat Conference. Folk artists were encouraged to perform, tableaus paraded to highlight the cultural diversity and richness of the state while the cultural pandal saw performances by several artists on all days of the celebrations. Art exhibition, handicraft exhibition, flower show and discourses marked the event. Visitors from a good 25 countries thronged to witness this spectacular event. This season also saw the turnout of more than 350 Acharyas, Munis and Matajis witnessing the event, many times travelling thousands of kilometers on foot to reach the town.

The organizing committee ensured that every category of visitors are taken care of. 17 dining halls catered to around a lakh of devotees every day. The Kalash nagars, Yatri nagars and Panchkalyan Nagars provided excellent accommodation to the devotees while the Journalists, Police personnel and the administrative staff had their own accommodation arrangements.

After a hectic fortnight of non-stop activities, the Swamiji spent a whole day moving from one arena to the other, personally expressing gratitude to the media personnel, the volunteers, the scouts and guides, the Catering halls, the Police personnel and every stakeholder whose support, he felt, made the event a grand success. It was, thus, a true example of planning, leadership, camaraderie, spirituality and devotion. So when the bells rung and the town was filled with the chants of the holy songs everyday sharp at 6 in the morning and evening, one's feet halted for a moment and the eyes glistened misty eyed. One may not have seen heaven, but for a fortnight, they seemed to have descended on Shravanbelagola.

- Swati, Belgaon

विश्व णमोकार दिवस की घोषणा

हर साल 25 फरवरी को मनाया जाएगा यह विशेष दिवस

श्रवणबेलगोला. भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के नौ दिवसीय प्रमुख समारोह के बाद मंगलवार को यहां चामुंडराय राय मंडप में मौजूद 380 से अधिक आचार्य, साधु-संतों, आर्यिका संघ ने सामूहिक रूप से विश्व णमोकार दिवस मनाने का ऐलान किया। जैन एकता का परिचय देते हुए एक विशाल संघ की इस युग में अवधारण को प्रस्तुत करते हुए साधु-संतों ने यह ऐतिहासिक फैसला किया।

इस अवसर पर मुनिराज प्रज्ञासागर ने 25 फरवरी को णमोकार दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा ताकि गोम्मटेश्वर यात्रा का चिरस्मरणीय बनाया जा सके। यह प्रस्ताव आचार्य पुष्पदन्त सागर, आचार्य पद्मनदी, आचार्य देवनन्दी ने स्वीकार कर घोषित किया। इसका मंच पर उपस्थित आचार्य विशुद्ध सागर, आचार्य सुविधि सागर, आचार्य किमुनन्दी, आचार्य सूर्यसागर, आचार्य निर्भयसागर, आचार्य विभव सागर, आचार्य गुप्तिनंदी सहित सभी आचार्यों ने अनुमोदन किया।

चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी ने भी इसकी अनुमोदना की। मंच पर उपस्थित उपाध्यक्ष अनुभव सागर, मुनि अमित सागर, मुनि उत्तम सागर, मुनि प्रमुख सागर, मुनि प्रसंग सागर जी, मुनि पूज्यसागर सहित अन्य मुनियों एवं आर्यिकाओं ने इसका समर्थन किया। इसके बाद अब हर साल 25 फरवरी को सभी साधु संत एवं देश का सम्पूर्ण जैन समाज णमोकार मंत्र की महिमा से जैन-जैनेतर समाज को अवगत कराएंगे। इस दिन सभी जगह णमोकार मंत्र के पाठ, विधान, प्रभात फेरी, णमोकार मंत्र पर प्रदर्शनी, ध्यान, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आदि कई कार्यक्रम होंगे।

इससे पूर्व चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी ने भगवान बाहुबली की प्रतिमा का मस्तकाभिषेक किया।

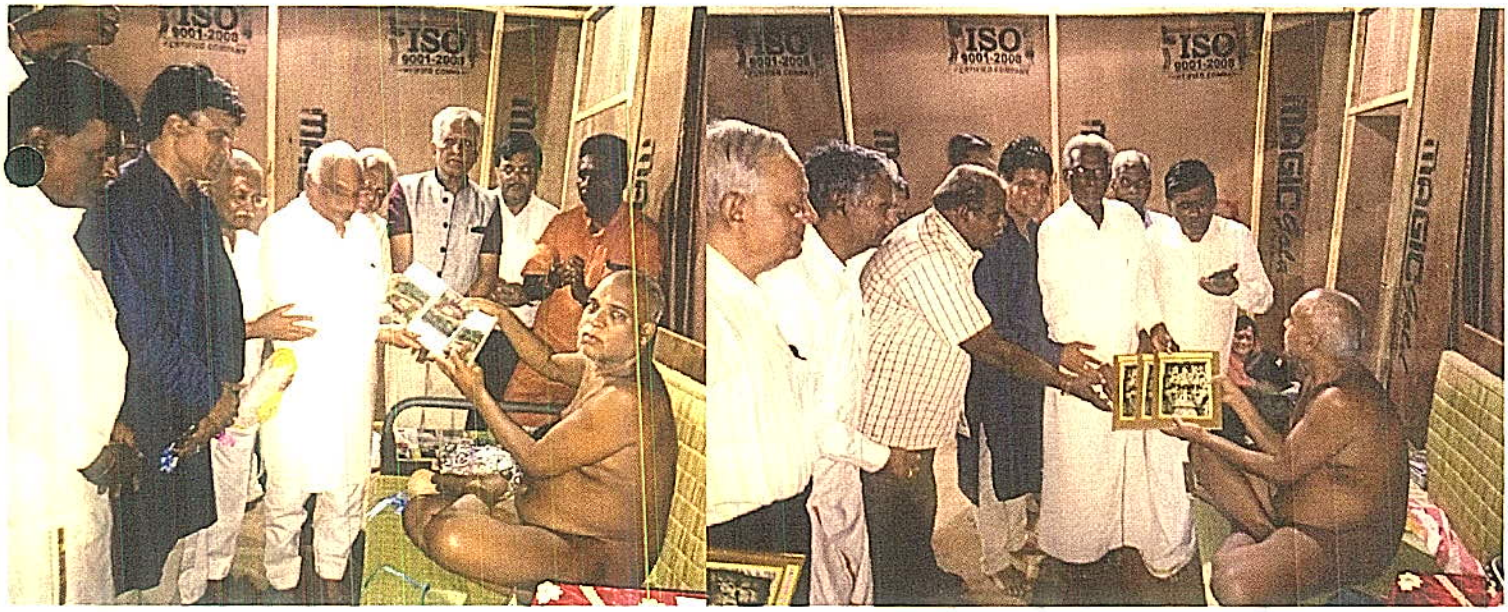

Release of Tamilnadu temple tour guide and book on Tamilnadu jain heritage and DVD of Tamilnadu temples at Shrvanbelgola on 18-03-2018 by Acharya Shree 108 Devnandi ji maharaj. First copy received by Shri M K Jain, Chennai, Shri Neelam Ajmera, Shri Anil Jamage, Shri V K sethi, Chennai.

सर्वोदय धर्म के प्रवर्तक एवं अभिवाहक तीर्थंकर महावीर

- आचार्य राजकुमार जैन नई, दिल्ली

प्राणिमात्र के कल्याण के लिए तीर्थंकर महावीर की दिव्य वाणी का यह उद्घोष था कि जीवमात्र में स्वतन्त्र आत्मा का अस्तित्व विद्यामान है। प्रत्येक प्राणी की जीवित रहने और आत्म स्वातन्त्र्य का उतना ही अधिकार है जितना मनुष्य को है। अत: स्वयं जीयो और दूसरों को जीने दो जिस प्रकार अपने जीवन में कोई बाधा तुम्हें सह्य नहीं है उसी प्रकार दूसरों के जीवन में भी बाधक मत बनो। धर्म के बाह्य आडम्बरपूर्ण किया कलापों मिथ्यावाद और रुढ़िगत परम्पराओं में मत फंसो। अपनी आत्मा का स्वस्थ्यरुप और उसकी स्वतन्त्र सत्ता पहचानो वही सच्चा धर्म है। सहज क्रिया मात्र धन नहीं है, वह तो उसका बाह्य रूप है और बाह्य रूप भी उसे तब कहा जा सकता है जब आत्मा के भीतर वास्तविक धर्म की प्रतिष्ठा हो। धर्म एक त्रिकालाबाधित सत्य है, वह किसी संकुचित दायरे में आबद्ध नहीं है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय, लिंग, योग, क्षेत्र और काल की मर्यादाएँ उसे बांध नहीं सकती ओर न ये समस्त भाव उसकी मर्यादा हो सकते हैं। यथा रूप से सम्यक् श्रद्धा, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रूप रत्नत्रय ही उसका शब्दगम्य लक्षण है।

तीर्थंकर महावीर ने जिस तीर्थ का प्रणयन किया और उसके द्वारा जिस धर्म तत्व को मानव लोक के सम्मुख रखा उसका स्वरुप सर्वोदय है। उस धर्म में न जाति का बंधन है और क्षेत्र की सीमा है, न काल की मर्यादा है और न लिंग का प्रतिबंध है। न ऊँच, नीच का भेद भाव है और न आग्रह की अनिवार्यता है। आत्मजयी जिन के द्वारा प्रतिपादित आचार और विचार दोनों धर्म है। अत: धर्म जब आत्मा की खुराक बनकर आता है तब इस प्रकार की समस्त सीमाएं, बाधाएं, बन्धन, मर्यादा और प्रतिबन्ध सब कुछ समाप्त हो जाता है और वह सर्वथा उन्मुक्त स्वच्छन्द प्रवाह में प्रवाहित होता है। जब वह आत्मा के लिए है तब सम्पूर्ण विश्व के समस्त आत्माओं के लिए वह क्यों न आवश्यक होगा? जिस प्रकार शरीर के लिए आवश्यक हवा-पानी आदि की सीमाएं स्वीकृत नहीं है उसी प्रकार धर्म की सीमा कैसे स्वीकृत की जा सकती है, हवा और पानी के उन्मुक्त प्रवाह की भांति धर्म के उन्मुक्त प्रवाह को भी सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता। वह स्वच्छन्द है और अनादि काल से प्रवाहित है।

धर्म के साथ केवल मानव का सम्बन्ध जोड़ना भी संकीर्णता है। वह तो प्राणिमात्र के आनन्दात्मक स्वरुप को प्राप्त करने का साधन है। कीट, पतंग, पशु, पक्षी और मनुष्य आदि समस्त प्राणी किसी न किसी रूप में उससे लाभान्वित हो सकते हैं। मनुष्य के अन्त:करण में यदि धर्म ठीक रूप से उतर जाय तो उससे केवल उसका ही लाभ नहीं होगा, अपितु पशु, पक्षी, कीट, पतंग, लता, गुल्म, पेड़, पौधे आदि समस्त जीवों को मनुष्य की ओर से अभय मिल जाने के कारण जीवन में अपेक्षाकृत शांति प्राप्त हो सकती है। इस प्रकार प्राणिमात्र के लिए कल्याणकारी और उभय लोक हितकारी धर्म के स्वरूप का प्रतिपादन भगवान महावीर ने किया। यह जीवमात्र के प्रति सर्वोदय की भावना से अनुप्राणित था।

धर्म के चाहे कितने ही रूप क्यों न हो, अहिंसा उन सब में ओतप्रोत

रहेगी। धर्म प्राणी जीवन की एक ऐसी स्फूर्ति है जिसका स्थान संसार की कोई वस्तु नहीं ले सकती और यह प्रेरणा अहिंसा से ही प्राप्त हो सकती है। जिस मनुष्य में यह स्फूर्ति और प्रेरणा नहीं होती है वह पशुवत् होता है, उनमें हिंसा की परम्पराएं सदैव प्रज्ज्वलित होती रहती हैं। जब तक अन्त:करण में धर्म प्रतिष्ठित रहता है अहिंसा की प्रेरणा से मनुष्य मारने वाले को भी नहीं मारता, किन्तु जब धर्म उसके मन से निकल जाता है तब औरों की कौन कहे, पिता अपने पुत्र की और पुत्र अपने पिता की हत्या करने के लिए भी तत्पर हो जाता है। यह दुष्कृत्य करते हुए उसे तनिक भी लज्जा का अनुभव नहीं होता। वस्तुत: धर्म ही जगत् में प्राणि की रक्षा करने वाला होता है।

भगवान महावीर का तीर्थ वास्तव में सर्वोदय तीर्थ है। किसी तीर्थ-धर्म में सर्वोदयता तब ही आ सकती है जब उसमें साम्प्रदायिकता, पारस्परिक वैमनस्य और हिंसा के लिए कोई स्थान न हो तथा जति, कुल,धर्म, वर्ग, भेदभाव आदि के अभिमान से वह सर्वथा रहित हो, यह तब ही हो सकता है जब प्रत्येक मनुष्य के विचार में अपेक्षावाद का उपयोग किया जाय और मनुष्य का मन किसी भी प्रकार के आग्रह से सर्वधा मुक्त हो। अभिमानी और आग्रही व्यक्ति जब तक विवेक बुद्धि से अपने मन का परिष्कार कर उसे सुसंस्कृत नहीं कर लेता तब तक उसे यथार्थ धर्म से स्वरुप की प्राप्ति नहीं हो सकती। जो धर्म केवल रुढ़ियों, अन्धविश्वासों, रुढ़िगत परम्पाओं और मिथ्या मान्यताओं से जीता है वह धर्म नहीं निरा पाखण्ड है। धर्म जीवन की वह सच्चाई है जिसमें मोह माया, मिथ्यात्व और भोग के प्रति आसक्ति का भाव नहीं होता है। यही कारण है कि धर्म को कभी रुढ़ियों से जीवन प्राप्त करने की स्फूर्ति नहीं मिलती। व्यवहारिक दृष्टि से विरोध में सामञ्जस्य, कलह में शाँति तथा जीव मात्र के प्रति आत्मीयता का भाव उत्पन्न होना ही सच्चा धर्म है और उसी से मानव समाज का एवं प्राणि मात्र का कल्याण सम्भव है।

धर्म का सर्वोदय स्वरूप तब तक मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता जब तक उसके मन का आग्रह दूर नहीं हो जाता, क्योंकि आग्रह ही विग्रह पैदा करता है और जब वही आग्रह बाहर आ जाता है बाह्य हिंसा का रूप धारण कर लेता है। जहां हिंसा होती है वहां धर्म किसी भी रूप में टिक नहीं सकता। अत: धर्म का स्वरूप समझने और उसे जीवन में उतारने-प्रवाहित करने के लिए हिंसा का परिहार करना है। वर्तमान में हिंसा का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक हो गया है। वस्तुत: यदि देखा जाय तो आज मनुष्य के प्रतिक्षण के आचरण में हिंसा की व्याप्ति हो चुकी है, उसका मन-वचन-काय हिंसा से पूर्णत: व्याप्त है। हत्याएं, आगजनी, लूटपाट और अपहरण तक ही हिंसा का दायरा सीमित नहीं है, अपितु व्यक्ति और समाज का शोषण, अनीति, अन्याय, जमा खोरी, मुनाफाखोरी, जीवन की आवश्यक वस्तुओं में मिलावट, घूंसखोरी, भ्रष्टाचार आदि अन्यान्य प्रवृत्तियां भी हिंसा की परिधि में समाविष्ट हैं। ये समस्त क्रियाएं आज मनुष्य अपने लिए आवश्यक समझता है। यही कारण है कि आज धर्म मनुष्य के जीवन से दूर हो गया है और वर्तमान में धर्म केवल दिखावटी बाह्य क्रियाओं तक ही रह गया है। उसे अन्त:करण में उतने की छूट नहीं है। अत: धर्माचरण रहित मनुष्य का पथभ्रष्ट होकर पतनोन्मुख होना स्वाभाविक है। यह भी काल की एक विडम्बना है।

वर्तमान परिस्थितयों में मनुष्य के जीवन का आमूल-चूल परिष्कार होना नितान्त आवश्यक है। इसके बिना मन का संस्कार और आचरण की शुद्धता सम्भव नहीं है। अत: वस्तु स्वरूप को समझना और धर्म के प्रति श्रद्धा भाव रखना, उसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर समन्वय रूप से उसे समझना और आचरण की परिशुद्धि के साथ उसे जीवन में उतारने का प्रयत्न करना ही वास्तविक धर्म का मूल है। यही सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र रूप रत्नत्रय है। इसकी आनुषांगिक धाराएं हैं अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप नियम तथा क्षमा, मृदुता, ऋजुता आदि गुण। वर्तमान कालीन संघर्ष की अग्नि से परिदग्ध संसार को जीवमात्र के कल्याण और उत्कर्ष की भावना से ओतप्रोत इस धर्म मूलक रत्नत्रय के परिशीलन की नितान्त आवश्यकता है। समाज में विषमता का निराकरण एवं विश्व में शान्ति स्थापित होना यही प्राणि कल्याण का एकमात्र निदान है।

महावीर के धर्म के सर्वोदय स्वरूप का एक अपरिहार्य अंग अनेकान्त है। यह व्यवहारिक दृष्टि से विरोध में सामञ्जस्य और कलह में शांति स्थापित कर मनुष्य में समझौते की भावना उत्पन्न करता है और सहयोगमूलक समाज रचना पर अधिक जोर देता है। जब हम घट-पट आदि सामान्य जड़ पदार्थों का स्वरूप भी अनेकान्त के बिना नहीं समझ सकते तब आत्मा की खुराक बनकर आने वाले धर्म का स्वरूप उसके बिना कैसे समझ सकते हैं? अनेकान्त जहां निष्पक्ष और यथार्थ दृष्टिकोण की सक्षमता का द्योतक है वहां वह जीवन की विषमता और व्यवहारिक कठिनाइयों को दूर करने में भी समर्थ है।

मनुष्य के नैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में भगवान महावीर ने मानव मात्र के लिए आचरण की शुद्धि पर विशेष बल दिया। जब तक मनुष्य का आचरण शुद्ध नहीं होता है तब तक उसका आध्यात्मिक उत्कर्ष, नैतिक उत्थान और मानसिक विकास सम्भव नहीं है। इसके लिए भगवान महावीर ने अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह इस पांच नियमों का आचरण आवश्यक बतलाया है। ग्रहस्थों के लिए इनका आचरण अणुव्रत के रूप में तथा विरक्त या साधुजनों के लिए महाव्रत के रूप में निर्देशित किया। वर्तमान समय में सामाजिक विषमता और मनुष्य के नैतिक स्तर में गिरावट के कारण इन व्रतों के आचरण की उपयोगिता अधिक बढ़ गई है।

स्वर्णिम पलों का साक्षी बना दिल्ली का प्राचीन लाल मन्दिर

प्रथम बार आयोजित हुआ श्री समयसार विधान

फाल्गुनी अष्टाह्निका महापर्व के पावन पुनीत प्रसंग पर राजधानी दिल्ली के दिल चांदनी चौक स्थित श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के प्रियाग्र शिष्य परम पूज्य एलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के पावन सान्निध्य में प्रथम बार श्री 1008 समयसार महामण्डल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का विराट आयोजन दिनांक 22 फरवरी से 2 मार्च 2018 तक भव्य रूप से सानंद संपन्न हुआ| समस्त मन्दिर परिसर व क्षेत्र की आकर्षक सज्जा व लाइटिंग का मनमोहक नजारा देखते ही बनता था| लाल मन्दिर जी के इतिहास में संभवतः यह प्रथम अवसर था जब इस प्रकार की भव्य साज-सज्जा परिसर में की गयी| गृहस्थ जीवन से ही लाल मन्दिर में एक ऐतिहासिक व विराट विधान आयोजित करवाने का सपना अपनी आँखों में संजोये एलाचार्य श्री ने इस सपने को साकार किया जिससे जैन समाज की नाक माने जाने वाले लाल मन्दिर की प्रतिष्ठा में चार-चाँद लग गए| जैन-अजैन सभी समुदाय के महानुभाव लाल मन्दिर की छटा को बस निहारते ही रह गए| युवाओं में सेल्फी लेने की उत्सुकता बनी रही| इन्द्र-इंद्राणियों की आकर्षक वेशभूषा ऐसा मनोरम दृश्य प्रस्तुत कर रही थी जैसे जिनेंद्र प्रभु की वंदना करने स्वर्गों से देवगण आये हों|

विधान की मंगलमय शुरुवात दिनांक 22 फरवरी 2018 को मंगल निनाद के साथ हुई जब सैकड़ों की संख्या में इंद्रों ने जिनेन्द्र प्रभु के अभिषेक आदि मांगलिक क्रियाओं का शुभारम्भ किया| श्री नेमचंद राकेश कुमार प्रवीण कुमार जैन, अशोक विहार (दिल्ली) द्वारा ध्वजारोहण किया गया| ध्वज का ईशान दिशा की ओर जाना अपने आप में मंगल का सूचक था| तत्पश्चात चित्र अनावरण, दीप प्रजज्वलन, शास्त्र विराजमान, शास्त्र भेंट, पाद प्रक्षालन, मंडल पर जिनवाणी विराजमान, अखंड ज्योत विराजमान, दिग्बन्धन, ठोना स्थापना आदि क्रियाएं पूर्ण हुईं| 14x14 फ़ीट के चहुंमुंखी दिव्य समवशरण की मनोहारी रचना सभी का दिल अपनी ओर आकर्षित कर रही थी| घने जंगल में गुफा में आचार्य श्री कुंद-कुंद स्वामी द्वारा श्री समयसार ग्रंथराज का लेखन करते हुए मनमोहक झांकी भी दर्शायी गयी| समवशरण के तीन दिशाओं में लगभग 700-800 इंद्र-इंद्राणियों से खचाखच भरे विशाल हॉल में भक्ति का ऐसा सरोवर था जिसमें गोते लगाने के लिए हर कोई आतुर था| विधान में गणिनी आर्यिका श्री 105 चन्द्रमति माताजी एवं आर्यिका श्री 105 शक्ति भूषण माताजी का मंगलमय सान्निध्य भी प्राप्त हुआ| डॉ. श्रेयांस जैन (बड़ौत), ब्र. जय कुमार जैन 'निशांत' (टीकमगढ़), ब्र. विनोद भैया (पपौरा), डॉ. अमित जैन 'आकाश' (वाराणसी), ब्र. आभा दीदी (दिल्ली), श्री संदीप जैन (दिल्ली) ने अपनी ओजस्वी वाणी से अत्यंत सरल शब्दों में प्रतिदिन श्री समयसार ग्रंथराज के गूढ़ रहस्यों को उपस्थित जनसमुदाय को समझाया| समस्त मांगलिक क्रियाएं ब्र. राज किंग जैन (अशोक नगर) के विधानाचार्यत्व व संगीत लहरियों के साथ विधि-विधान पूर्वक संपन्न हुईं|

प्रथम बार आयोजित हुए श्री समयसार महामण्डल विधान में श्री प्रवीण जैन (अशोक विहार) को सौधर्म इंद्र, श्री पदम प्रसाद जैन (दरीबा) को यज्ञनायक, श्री मदनलाल संजय जैन (राधापुरी), श्री महेंद्र कुमार जैन (बैंक एन्क्लेव) व श्री जिनेन्द्र कुमार जैन (कूंचा सेठ) को कुबेर इंद्र तथा श्री नितिन जैन (विवेक विहार), श्री मनीष जैन (शांति विहार), श्री अनुज-दीपक जैन (गुलियान), श्री प्रमोद जैन (अशोक विहार), श्री पंकज जैन नीटू (कैलाश नगर), श्री बिजेंद्र-राजेश जैन (कैलाश नगर), श्री बॉबी जैन (गाँधी नगर), श्री सुनील जैन (ऋषभ विहार), श्री अरविन्द जैन (केशव पुरम) को मुख्य पात्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ| दिनांक 25 फरवरी 2018 का दिन कुछ विशेष था क्योंकि इस दिन श्री समयसार ग्रंथराज के रचियता आचार्य श्री कुन्द-कुन्द स्वामी जी की अष्ट-द्रव्य से विशेष पूजन संपन्न हुई| सौभाग्यशाली महानुभावों ने संगीतमयी लहरियों के साथ आचार्यश्री के चरणों में सुसज्जित थालों में अष्ट-द्रव्य समर्पित किया| सभा के मध्यस्थ ही पूज्य एलाचार्य श्री व आर्यिकाश्री का पिच्छी परिवर्तन समारोह भी संपन्न हुआ| एलाचार्य श्री के कर-कमलों में सकल जैन समाज, शकरपुर ने नवीन मयूर पिच्छी प्रदान की तथा एलाचार्य श्री की पुरानी पिच्छी श्री अरविन्द जैन सपरिवार (केशव पुरम) ने प्राप्त की| प्रतिदिन सायं काल में प्रेरक व मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम आराधना महिला मंडल व स्याद्वाद महिला मंडल के अथक प्रयासों से प्रस्तुत किये गये| भारी संख्या में उपस्थित विशाल जनसमुदाय में सौभाग्यशाली महानुभावों को लक्की ड्रा के माध्यम से आकर्षक उपहार प्रदान किये गए|

दिनांक 1 मार्च 2018 को प्रातः काल में विधान-पूजन के मध्यस्थ श्री विवेक जैन (धर्मपुरा) द्वारा आचार्य श्री कुन्द-कुन्द स्वामी जी के जीवन पर आधारित लघु नाटिका का मंचन किया गया जिसने उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया| विधान का समापन दिनांक 2 मार्च 2018 को विश्वशांति महायज्ञ के साथ हुआ| इस अवसर पर आज़ादी के समय मुलतान (पाकिस्तान) से लायी गयीं 24 तीर्थंकरों की अतिशयकारी प्रतिमाओं का अभिषेक व बड़ी शांतिधारा का आयोजन अत्यंत शालीन व अनुशासनबद्ध रूप से किया गया| ऐसा भव्य आयोजन, ऐसा अविस्मरणीय महोत्सव, ऐसा रमणीय माहौल, ऐसी सजावट, ऐसी लाइटिंग, ऐसी सुचारु व्यवस्था शायद ही पहले कभी देखी गयी होगी| इस महाआयोजन ने 'न भूतो न भविष्यति' को सार्थक कर दिया है| इस विधान में चांदनी चौक के श्रद्धालुओं के साथ दिल्ली की विभिन्न कालोनियों से भक्तगण तथा गुडगाँव, फरीदाबाद, रेवाड़ी, जयपुर, मुजफ्फरनगर, बड़ौत, अहमदाबाद, अम्बाला, बैतूल आदि जगह-जगह से इंद्र-इन्द्राणियां सम्मिलित हुए| सुबह शाम तक समस्त कार्यक्रमों में भारी भीड़ को देखते हुए परिसर में जगह-जगह प्लाज़्मा टीवी तथा बड़े एलईडी स्क्रीन लगाए गए| पारस चैनल के माध्यम से लगभग 2 महीने तक इस महामहोत्सव का प्रचार-प्रसार युद्धस्तर पर किया गया| बाहर से पधारे सभी श्रद्धालुओं के लिए जैन भवन में सर्व-सुविधायुक्त आवास की उत्तमोत्तम व्यवस्था बनायीं गयी| प्रातः काल नाश्ता से लेकर दोपहर व सायं काल के भोजन तत्पश्चात रात्रि में केसर-बादाम युक्त दूध आदि की समुचित व्यवस्था आने-जाने वाले सभी श्रद्धालुओं को मिली|

प्राचीन श्री अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत व जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन ने बताया कि लाल मन्दिर वह स्थान है जहाँ देश में पहली बार श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान के हिंदी रूपांतरण का आयोजन सन 1940 के लगभग किया गया| 25-30 वर्ष पहले तक यहाँ बहुत से विधान होते रहे परन्तु वर्तमान में एलाचार्य श्री के सान्निध्य में आयोजित इस अद्भुत विधान को देखकर हम आश्चर्यचकित हैं| यह पहला अवसर है जब लाल मन्दिर के तीनों हॉल खचाखच भरे हुए हैं| वर्तमान में जब कोई इन संकरी गलियों में

रहना पसंद नहीं करता और स्थानीय जनसँख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है, ऐसे में इस विधान के माहौल से पुरानी यादें ताजा हो उठती हैं| लाल मन्दिर के प्रबंधक श्री पुनीत जैन ने भी मुक्त-कंठ से इस आयोजन की प्रशंसा करते हुए कहा कि लाल मन्दिर में ऐसा विराट आयोजन कभी पहले हुआ हो, ऐसा हमें याद नहीं| श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कार्यकारिणी समिति, न्यू रोहतक रोड (करोल बाग) के महामंत्री श्री ऋषभ जैन ने कहा कि ऐसे ऐतिहासिक आयोजन में सहभागी बनकर समस्त करोल बाग जैन समाज गौरवान्वित है तथा पूज्य एलाचार्य श्री के सान्निध्य में आयोजित हो रहे ऐसे अनूठे विधान में सम्मिलित होकर सभी प्रफुल्लित हैं| विधान में गजब की वेशभूषा, अकल्पनीय अनुशासन, मनमोहक सजावट को देखकर हर कोई हतप्रभ है|

इस आयोजन की विशेषता रही कि इसमें सम्मिलित होने के लिए इंद्र-इंद्राणियों के लिए बैठने, वेशभूषा, रहने, भोजन आदि की सभी व्यवस्था पूर्णतः निःशुल्क थी| सम्पूर्ण अनुष्ठान विधि में इन्द्र-इंद्राणियों द्वारा श्रीजी के चरणों में लगभग 20 हज़ार गोले समर्पित किये गए| इस महाआयोजन में प्राचीन श्री अग्रवाल दिगंबर जैन पंचायत (धर्मपुरा) तथा श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कार्यकारिणी समिति, न्यू रोहतक रोड (करोल बाग) के साथ कंधे-से-कन्धा मिलाकर श्री राकेश जैन (अशोक विहार), श्री सुनील जैन (शक्ति नगर), श्री पंकज जैन नीटू (कैलाश नगर), श्री सुनील जैन (ऋषभ विहार), श्री समीर जैन (पीतमपुरा), श्री शरद जैन (जागृति एन्कलेव), श्री अनिल जैन बल्लो (प्रीत विहार), श्री सुशील जैन (पटपड़गंज), श्री अंकुर जैन (सूर्य नगर), श्री विकास जैन (धर्मपुरा), श्री आदीश जैन (वकीलपुरा), जैन यूथ काउंसिल (दिल्ली प्रदेश) आदि कर्मठ कार्यकर्ताओं ने समारोह को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग किया|

संकलन - समीर जैन, पीतमपुरा (दिल्ली)

भगवान बाहुबली चालीसा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

-शंभु छंद-

श्री ऋषभदेव को वंदन कर, तीर्थंकर पद को नमन करूँ। इस युग के सबसे प्रथम सिद्ध, सुअनंतवीर्य को नमन करूँ।।
फिर मोक्षधाम जाने वाले, प्रभु बाहुबली को नमन करूँ। तीर्थंकर सुत श्री कामदेव, प्रभु चालीसा का पठन करूँ।।

-दोहा-

अतुल शक्ति बाहूबली, का मन में धर ध्यान।
गुण गरिमा युत कायबली, का कुछ करूँ बखान।।

-चौपाई-

जय हो कामदेव तुम स्वामी, बाहुबली प्रभु त्रिभुवन नामी।
तीर्थंकर के पुत्र कहाए, चक्रवर्ति से भ्राता पाए।।
तीर्थ अयोध्या जन्म भूमि थी, पुण्यमयी वह पापशून्य थी।
मात सुनन्दा हर्षाई थी, नगरी में खुशियाँ छाई थीं।।
तीर्थंकर श्री ऋषभदेव ने, प्रभु लक्षण लख बाहुबली में।
कहा पुत्र यह कायबली है, स्वाभिमान यह आत्मबली है।।
सवा पाँच सौ धनु की काया, हरितवर्ण तन सुन्दर माया।
सुन्दरि नामक बहन एक थी, बाहुबली के संग खेलती।।
इसी तरह भरतादिक सौ सुत, एवं ब्राह्मी कन्या संयुत।
मात यशस्वति अति प्रसन्न थी, तीर्थंकर पति पाए धन्य थी।।
ब्राह्मी सुन्दरि कन्याओं ने, सर्वप्रथम विद्या ली प्रभु से।
पुत्रों को भी सभी कलाएँ, तीर्थंकर प्रभु स्वयं बताएँ।।
दीक्षा लेते समय तात ने, सब पुत्रों को अलग राज्य दे।
भरत को राजमुकुट पहनाया, भुजबलि ने पोदनपुर पाया।।
कालान्तर में भरतचक्रि का, धर विजय कर चक्र रुका था।
सब भ्राताओं को कहलाया, मुझे क्यों नहीं शीश झुकाया।।
जब तक ये मस्तक न झुकेंगे, हम चक्री कैसे बन लेंगे।
इस घटना से सभी भ्रात ने, जा दीक्षा ली ऋषभनाथ से।।
एक बचे पोदनपुर राजा, बाहूबली नाम अधिराजा।
बोले नहिं अन्याय सहूँगा, मैं तो राजा नहीं कहूँगा।।
ज्येष्ठ भ्रात मम पिता तुल्य है, मुझमें भी तो बल अतुल्य है।
युद्ध क्षेत्र में निर्णय होगा, चक्रवर्ति का अविनय होगा।।
हुआ अहिंसक युद्ध उभय से, नेत्र युद्ध, जल, मल्ल युद्ध थे।
बाहुबली तीनों में विजयी, हुए चक्रवर्ती से अजयी।।
चक्रवर्ति ने चक्र लगाया, वह भी उसको मार न पाया।
जनता ने उनको धिक्कारा, किया बाहुबलि का जयकारा।।
भुजबलि मन वैराग्य समाया, भरत हृदय ममता भर लाया।
क्षमा भाव भर चला विरागी, फिर न बने बाहूबलि रागी।।
तज नश्वर वैभव की माया, भरतराज को भी समझाया।
राज्य विभव तो सभी छुटेगा, वर्ना निज साम्राज्य लुटेगा।।
बाहुबली ने दीक्षा धारी, मन में पितु की शिक्षा धारी।
एक वर्ष तक करी तपस्या, वन जन्तू कर रहे परीक्षा।।
कई ऋद्धियाँ प्रगट हुई थीं, जन कल्याण निमित्त हुई थी।
एक दिवस भरताधिप आए, दर्शन पूजन कर हर्षाये।।
बाहुबलि को इक विकल्प था, भ्रात को मुझसे हुआ कष्ट था।
इसे शल्य नहिं कह सकते हैं, व्रती शल्य विरहित रहते हैं।।
इस विकल्प को तजते ही वे, बने केवली बाहुबली थे।
पितु से पहले शिवपद पाया, छोड़ आए अपनी यशकाया।।
तब से बाहुबली की प्रतिमा, बनती है बहुतेक अनुपमा।
इनकी भक्ती शक्ती देती, मोक्ष प्राप्ति की युक्ती देती।।

-सोरठा-

चालिस दिन पर्यन्त, जो यह चालीसा पढ़े। निर्बलता हो अन्त, उन मन तन शक्ती बढ़े।।
वीर संवत् पच्चीस, सौ बाईस आश्विन सुखद। शुक्ला तिथि दशमी, तिथि की यह रचना सरस।।
गणिनि शिरोमणि मात, ज्ञानमती शिष्या कहे। नाम 'चंदना' ख्यात, की यह कृति शाश्वत रहे।।
मुझ मन का अज्ञान, दूर करे समता भरे। हे प्रभु मुझमें ज्ञान, पूर भरे समता टरे।।
बाहुबली की मूर्ति, जहाँ-जहाँ सुविराजती। ऋद्धि सिद्धि सुख पूर्ति, वहाँ-वहाँ हो शाश्वती।।